ANIL GARG

DUS BAJKAR DUS MINUTE

उस काली रात में वो सुपरफ़ास्ट एक्सप्रेस अपनी पूरी रफ़्तार से अपनी मंजिल की और दौड़ रही थी। ट्रैन के उस ए सी डब्बे में वैसे तो रात के उस पहर में सभी यात्रिओ के गहरी नींद के कारण पूरा सन्नाटा पसरा हुआ था। लेकिन यदा कदा किसी के खर्राटों की आवाज उस सन्नाटे की नीरवता को भंग कर देती थी। तभी एक स्लीपर सीट से एक माध्यम कद का आदमी उठा और उसने अपने कदम टॉयलेट की और बढ़ा दिए। तभी एक लगभग 35 वर्षीय महिला भी अपनी सीट पर से उठी और वो भी उसी दिशा में बढ़ गई जिस दिशा में वो व्यक्ति गया था।

वो महिला उसी टॉयलेट के बाहर खड़ी होकर उस व्यक्ति के बाहर निकलने का इंतज़ार करने लगी।तभी उसे ट्रैन की गैलरी में एक और व्यक्ति उसी की और आता हुआ नजर आया। पास आने पर उस व्यक्ति ने अपनी आँखों से उस महिला की और कुछ इशारा किया और स्वयं साथ वाले टॉयलेट में घुस गया। उस व्यक्ति के टॉयलेट में घुसते ही उस महिला ने ट्रैन का दरवाजा खोल दिया।

तभी वो पहले वाला व्यक्ति टॉयलेट से बाहर निकल आया।

"कैसे हो मानव बाबू ? उस महिला ने उस व्यक्ति को उसका नाम लेकर पुकारा। मानव ने आवाज वाली दिशा में अपनी गर्दन घुमा कर देखा तो गहन आश्चर्य के भाव उसके चेहरे पर उभर आये।

"तुम यहाँ ? " हैरानी से मानव ने उस महिला को देखते हुए बोला।

"हां मानव बाबू ? आपकी चाहत की कशिश हमें यहाँ तक खींच लाई ? उस महिला की आवाज में एक अजीब सा नशा था।

तभी दूसरे टॉयलेट के दरवाजे के खुलने की आवाज भी सुनाई दी। वो दूसरा व्यक्ति भी टॉयलेट से बाहर निकल कर अब मानव के पीछे खड़ा हो चूका था। उस व्यक्ति पर मानव की नजर पड़ते ही एक अनजाना सा भय मानव के चेहरे पर नजर आने लगा था।

" तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो ? और क्या चाहते हो तुम लोग ? मानव ने कांपती आवाज में कहा।

" इंसान की मौत तो कही भी पहुंच जाती है मानव बाबू ? उसे तो रास्ता पूछने की भी जरुरत नहीं पड़ती ? उस महिला ने फिर से अपनी नशीली आवाज में कहा।

" तुम लोग मुझे क्यू मारना चाहते हो ? मैंने तुम लोगो का क्या बिगाड़ा है ? शायद मानव को भी अब एहसास हो गया था कि उसके साथ क्या होने वाला है।

तभी मानव को अपने पीछे कुछ सरसराहट सी सुनाई दी। उसने पीछे मुड़कर देखना चाहा लेकिन तब तक एक महीन सी रस्सीनुना डोरी उसके गले में लिपट चुकी थी। जो पल पल मानव की गर्दन पर अपना शिकंजा कसती जा रही थी। कुछ ही देर में मानव की जीभ और आँखे बाहर को उबल आई। मानव की आत्मा इस दुनिया से कूच कर चुकी थी। अब उस महिला ने ट्रैन के दरवाजे से खुद को अलग किया और वो आदमी मानव की लाश लो धकेलता हुआ दरवाजे के पास तक लाया और एक जोर का धक्का देकर ट्रैन से बाहर फेंक दिया।

" सुनो दस मिनट के बाद अगला स्टेशन आने वाला है ? ध्यान रखना हंमे स्टेशन के प्लेटफॉर्म की बजाय पीछे की और उत्तर कर स्टेशन से बाहर निकलना है।

स्टेशन के किसी भी सीसीटीवी कैमरे में हमें नजर नहीं आना है" उस व्यक्ति ने उस महिला को बोला।

"तूम चिंता मत करो मै बुरका पहनकर निकुलगी और तुम भी अपने हैट से अपने चेहरे को ढक लो" उस महिला ने उस व्यक्ति को आस्वासन दिया ।

वो महिला जल्दी से अपनी बर्थ की तरफ गयी और वहां से अपना बैग लेकर आई और तुरंत ही टॉयलेट में घुस गई। और कुछ ही क्षणों के पश्चात वो महिला बुर्के में उस टॉयलेट से बाहर निकली। तभी ट्रैन की रफ़्तार कम होती चली गई। धीरे धीरे ट्रैन ने अपनी रफ़्तार पर काबू पाया और उस स्टेशन पर रुक गई। वो व्यक्ति और वो महिला प्लेटफॉर्म की बजाय ट्रैन की दूसरी और से उत्तर कर रेल की पटरियो को पार करते
हुए निर्विघिन स्टेशन से बाहर निकल गए।
****

वो बुजुर्ग आदमी उस समय उस रेलवे स्टेशन की पुलिस चोंकी में बैठा था। जिस स्टेशन पर वो महिला और व्यक्ति उतरे थे।

"कहाँ देखि तुमने लाश" चौंकी इंचार्ज रामावतार गोखले उस बुजुर्ग को घूरते हुए बोला।

"जी वो आउटर सिग्नल से थोड़ा सा आगे पटरी पर ही पड़ी है वो लाश" बुजुर्ग ने गोखले को बताया।

"तुम इतनी सुबह सुबह वहां क्या करने गये थे? गोखले शक्की निगाहों से उस बुजुर्ग को घूरते हुए बोला।

"साहब मै तो रोजाना सुबह शौच के लिए उसी तरफ जाता हूँ!" उस बुजुर्ग को लगने लगा था कि उसने

एक शरीफ नागरिक के कर्तव्य को निभा कर बहुत भारी गलती कर दी थी।

"लाश को तुमने जाते हुए देखा था या आते हुए देखा था" गोखले उस बुजुर्ग को ही शायद किसी अपराधी की तरह ट्रीट करने के मूड में था।

"साहब मुझे लगता है मैंने यहां आकर कोई भारी गलती कर दी है? मै तो अपना फ़र्ज़ समझ कर आपको यहाँ बताने आ गया था? आप बजाए लाश के पास पहुचने के मुझ से ही सवाल कर रहे हो" वो बुजुर्ग अब झल्ला कर तैश में आ चुका था।

"हम भी अपना काम ही कर रहे है? हमें हमारा काम मत सिखाओ? गोखले भी अब अपनी पुलिसिया धौंसपट्टी पर उतर आया।
****

अचानक से ट्रैन की रफ़्तार कम होती चली गई और अचानक से एक झटके से ट्रेन रुक गई । आपके ख़ादिम की आँख भी एक झटके से खुल गई।

"क्या हुआ भाई ट्रैन क्यू रुक गई? कोई स्टेशन आ गया क्या? मैंने अपने सामने वाली बर्थ पर बैठे उन सज्जन से पुछा।

"स्टेशन तो कोई नहीं आया अभी स्टेशन आने में तो अभी दस पंद्रह मिनट है बाबू? पता नही ट्रैन क्यू रुक गई है? मेरे सामने बैठे उन सज्जन को भी नहीं पता था कि ट्रेन क्यू रुक गई थी?
मै आपका ख़ादिम अनुज! पहचान तो लिया होगा आपने? मै जासूसी के उस दुर्लभ धंधे से अपनी दाल रोटी चलाता हूँ, जो हमारे देश में कोई कोई शख्स करता है।

कोतूहलवश मैं भी ट्रैन के कुछ अन्य यात्रिओ की भांति ट्रेन से नीचे उतर आया था। तभी ट्रैन की पटरियो के सहारे कुछ स्थानीय लोगो को आते हुए देखा तो मेरे कदम भी बरबस ही उन लोगो की और बढ़ गए।

"क्या हुआ भाई? ये ट्रैन क्यो रुकी हुई है? मैंने उन लोगो से पूछा।

"बाबूजी किसी आदमी को मार कर डाल रखा है रेल की पटरियो पर इसी वजह से ट्रेन रुकी हुई है" उनमे से एक आदमी ने जवाब दिया।

अब लाश और आपके इस खाकसार का तो चोली दामन का साथ है, इसलिये लाश का नाम सुनते ही मेरे कदम खुद ब खुद उस तरफ बढ़ गए।

रेल की पटरी पर लोगो का भारी मजमा लगा हुआ था। रेलवे पुलिस भी वहां पहुंच चुकी थी। लेकिन मुझे ये देखकर भारी अचरज हुआ कि लोग लाश के आसपास तक ऐसे घूम रहे थे मानो वो कंपनी बाग में घूम रहे हो।

"जनाब इस भीड़ को तो लाश के आसपास जाने से रोकिए, अगर भीड़ की वजह से साक्ष्य नष्ट हो गए तो फिर अंधेरे में तीर चलाते रहना? मैंने एक दो सितारे वाले एक पुलिसिये से बोला। उसने मुझे खा जाने वाली नजरो से घूरा।

"क्यो भाई तुम क्या जासूस करमचंद लग रहे हो जो हमे हमारा काम सीखा रहे हो" उस पुलिसिये ने जो शायद इस समय वहां सबसे सीनियर लग रहा था मुझ से कुपित स्वर में बोला।

"जासूस करंचमद तो नहीं हूँ ! लेकिन पेशे से मैं भी जासूस ही हूँ! और इस खाकसार को अनुज कहते

है !" मैंने अपना परिचय उस पुलिसिये को दिया। मेरा परिचय सुनकर वो पुलिसिया मुझे बिल्कुल भी प्रभावित नही लगा बल्कि उसके चेहरे पर मेरे प्रति उपहास के भाव साफ साफ नजर आए।

" जासूस साहब फिर अपनी मुफ्त की सलाह को अपने पास ही रखिये ? हमें मत सिखाइये की किसी केस की जांच कैसे की जाती है ? उस पुलिसिये ने अकड़ के साथ बोला।

" ठीक है जनाब ! मुझे लोगो का यहाँ इस तरह घूमना गलत लगा तो मैंने बोल दिया ? क्योकि बाद में आपको ही इस लापरवाही का खामियाजा भुगतना पड़ेगा ? मैंने अब उस पुलिसिये को आइना दिखाने की कोशिश की।

शायद इस बार मेरी बात का कुछ असर उस पुलिसिये पर हुआ , और वो अपने साथी पुलिसकर्मी के ऊपर बुरी तरह बरस पड़ा।

" तिवारी तुम क्या यहां रामलीला देखने आए हो ? तुम इस भीड़ की यहां से हटा नही सकते ?

" ज जजी जी ... अभी हटाता हूँ जनाब !" वो तिवारी नाम का सहकर्मी हड़बड़ा कर बोला।
उसके बाद तिवारी उस भीड़ की और मुखातिब होकर भीड़ की कंट्रोल करने में लग गया। तभी वहां स्टेशन मास्टर भी अपने कुछ कर्मियो के साथ आ गये।

" अरे गोखले साहब ट्रैक को जल्दी खाली करवाइए ? हम ट्रैन को कितनी देर तक रोक कर रखे ? उस पुलिसिये का नाम शायद गोखले था।

" सर मामला कत्ल का है लाश को इतनी जल्दी नही हटवा पाऊँगा ? आप ट्रैन को दूसरे ट्रैक पर डाल

कर रवाना करवा दीजिये। गोखले ने स्टेशन मास्टर को जवाब दिया।

"आपको क्या लगता है कि लाश को कही और कत्ल करके यहां डाला गया है या किसी ट्रैन से इसे यहां फेंका गया है? मेरे इस सवाल से वो गोखले नाम का पुलिसिया एकाएक हड़बड़ा गया।

"अरे जासूस साहब अभी तो इन्वेस्टीगेशन शुरू की है अभी एक दम से कैसे नतीजे पर पहुंच जाए कि लाश कहाँ से यहां पर आ गई? गोखले ने इस बार थोड़ा नरमी से जवाब दिया।

आपका ख़ादिम इस समय गुजरात के भरूच नामक स्थान पर था। अगर आप मुम्बई राजधानी से मुम्बई के लिए आते हो तो वडोदरा और सूरत के बीच मे ये शहर आपको मिलेगा। खैर इस वक़्त मसला ये नही था कि मैं यहां क्या कर रहा था ? मसला ये था कि मरने वाला कौन था और कौन उसे निपटा कर चला गया।

इस बात का शुक्र था कि लाश का चेहरा नही बिगड़ा हुआ था और उसकी पहचान हो सकती थी। तभी गोखले साहब लाश की जेब की तलाशी लेने लगे। उन्हें भी शायद उस लाश की पहचान की तलाश होगी। लेकिन थोड़ी देर बाद ही वो अफसोसजनक मुद्रा में खड़े हो गए और असहाय मुद्रा में मेरी और गर्दन हिलाकर देखने लगे।

तभी फोरेंसिक टीम अपने दलबल के साथ वहां पहुंच गई। फ़ोटोग्राफर भी अपना काम पूरी तन्मयता से करने लगा। फोरेंसिक टीम के काम पूरा करने के बाद अब ट्रैक से लाश को हटाने का काम शुरू किया गया। गोखले साहब के सामने लाश की पहचान का संकट अभी भी बना हुआ था। तभी ट्रैन ने अपने चलने का

हॉर्न बजाना शुरू कर दिया। आपका ख़ाकसार भी अब अपने ट्रैन के डब्बे की और बढ़ गया।

****

दिल्ली का घनी आबादी वाला कृष्णा नगर का इलाका। इसी इलाके में भल्ला ग्रुप के मालिक सुदर्शन भल्ला अपने भरे पूरे परिवार के साथ रहते थे। परिवार में सुदर्शन भल्ला की धर्म पत्नी विमला देवी उनके तीन सुपुत्र और दो पुत्रियां और उनके दो बड़े लड़को की पत्नियां इस कृष्णा नगर की कोठी में रहते थे। सुदर्शन भल्ला का व्यापार देश मे ही नही विदेश तक मे फैला हुआ था।बड़ी मेहनत और लगन के साथ सुदर्शन भल्ला ने इतना बड़ा एम्पायर खड़ा किया था।भल्ला साहब के बड़े लड़के का नाम था गुलशन भल्ला और उसकी पत्नी का नाम था वैशाली। उनके दूसरे लड़के का नाम था अखिल भल्ला और उसकी पत्नी का नाम था कंचन और तीसरा लड़का था मानव ?

जिसकी लाश दिल्ली से लगभग 1100 किलोमीटर दूर भरूच नाम के उस छोटे से शहर की रेल की पटरियो पर पड़ी थी। अभी तक भल्ला परिवार तक मानव की हत्या की खबर पहुंची नही थी।इसलिये परिवार में किसी किस्म का कोलाहल नही था। पूरा परिवार रात्रि का खाना खाने के उपरांत अपने अपने शयनकक्ष की शोभा बढ़ा चुका था।

तभी रात के कोई साढ़े बारह बजे के आसपास गुलशन भल्ला के फ़ोन की घण्टी ने घरघरा कर अपने बजने का इशारा किया। गुलशन भल्ला ने अलसाई हालत में फ़ोन को उठाया।उधर से जो कुछ बोला गया उसे सुनकर गुलशन के हाथ से मोबाइल छूट कर जमीन पर गिर चुका था। अचानक से गुलशन अपने पिता सुदर्शन भल्ला को आवाज लगाता हुआ बाहर

की और भागा! गुलशन की पत्नी वैशाली भी इतनी हलचल होने के बाद नींद के आगोश से बाहर आ चुकी थी। वैशाली भी क्या हुआ? ये जानने के लिए अपने पति के पीछे पीछे भागी।

सभी लोग नीचे हाल में आ चुके थे। सुदर्शन भल्ला की उस कोठी में आधी रात को कोहराम मच चुका था।
****

मानव की हत्या की खबर रात रात में ही जंगल मे आग की तरह फैल चुकी थी। जिसने भी सुना वही इतनी रात को भी भल्ला परिवार के गम में शरीक होने के लिए उनके घर पहुंच चुका था। टी वी के न्यूज़ चैनल भी अपने अपने माइक कैमरे लेकर भल्ला साहब के घर के बाहर मजमा लगा चुके थे। इतने बड़े बिज़नेस एम्पायर के मालिक के सबसे छोटे बेटे की हत्या हुई थी, ये कोई छोटी बात तो थी नही? इसलिये हड़कम्प मचना तो निश्चिन्त था।

घर के अंदर सुदर्शन भल्ला अपने परिवार से घिरे बैठे थे। एक फ़ोन कॉल ने पूरे परिवार को सदमे और गम में डुबो दिया था। किसी को कुछ समझ ही नही आ रहा था कि ये अचानक हुआ क्या? उनके परिवार की खुशियो को किसकी नजर लग गई। भल्ला साहब की धर्मपत्नी कमला देवी के आंसू रुकने का नाम नही ले रहे थे।
गुलशन और अखिल अपने एक दो जानकर के साथ भरूच जाने की तैयारी में लग गए थे।
****

जब सुबह के दस बजे के करीब मेरे मोबाइल पर मेरी पुलिस सायरन वाली रिंगटोन बजी तो ट्रैन के उस डिब्बे में मेरे साथ वाली सीटों पर बैठे सभी सहयात्रियो की नजरें मेरी और उठ चुकी थी। लेकिन

मैंने उन नजरो को इग्नोर किया और तत्काल फ़ोन को उठाया क्योकि फ़ोन मेरी रिसेप्शनिस्ट रागिनी का था।

"कहाँ आग लग गयी? जो इतनी सुबह सुबह फ़ोन कर रही हो? मैंने अपनी आदत से मजबूर होकर रागिनी को बोला।

"दस बजे आपके लिए सुबह होगी? हमारे जैसे पापी पेट के मारे लोग तो अपने अपने काम पर इस समय तक पहुंच जाते है? रागिनी की हाजिरजवाबी हमेशा मुझ पर भारी पड़ती थी।

"तो तुमने ये बताने के लिए फ़ोन किया है कि तुम आफिस पहुंच गई हो? मैंने जानबूझकर रागिनी की खिंचाई करने की सोची।

"नही कुछ और बताने के लिए फ़ोन किया है? अगर इधर उधर की बाते खत्म हो गयी हो तो मै अब काम की बात बताऊं आपको? रागिनी अब झल्ला चुकी थी।

"हम्म नॉन स्टॉप शुरू हो जाओ? मैंने अचानक से अपने स्वर में गम्भीरता का पुट लाते हुए कहा।
रागिनी भी शायद मेरी बदली हुई आवाज को पहचान गई थी।

"दिल्ली के मशहूर उद्योगपति सुदर्शन भल्ला के सबसे छोटे बेटे मानव भल्ला का कत्ल कर दिया है किसी ने? रागिनी ने एक सांस में ही बोला।

"व्हाट? मेरे मुंह से बस इतना ही निकला।

"और कत्ल भी दिल्ली में नही गुजरात के भरूच में हुआ है? एक रेलवे लाइन पर उनकी लाश मिली है? रागिनी की ये बात सुनते ही मुझे भरूच रेलवे स्टेशन

से कुछ पहले ही पड़ी उस शख्स की लाश का चेहरा मेरी आंखों के आगे घूम गया।

"उस लाश को तो मैंने देखा है" बरबस ही मेरे मुंह से ये निकल गया।

"क्या? इस बार चौकने की बारी रागिनी की थी।

"हां जब मेरी ट्रैन भरूच स्टेशन के नजदीक पहुंची तो अचानक से ट्रेन रुक गयी! जब काफी देर तक ट्रेन नही चली तो मैं ये देखने के लिए ट्रेन से उतर गया कि आखिर ऐसा क्या हुआ है ? जो इतनी देर से ट्रेन रुकी खड़ी है" मैंने रागिनी को पूरी बात तफसील से बताई।

"ओह्ह तो आप दिल्ली वापस पहुँचने वालो हो? इस बार फिर से रागिनी की टोन बदल चुकी थी।

" हां साढ़े बारह बजे के आसपास मैं निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन पहुंच जाऊँगा? वहां से सीधा घर!" मैंने रागिनी को आज का अपना दिन का अगला प्रोग्राम बताया।

"नहीं! आप सीधा पहले आफिस आयेंगे! उसके बाद आप घर जायेंगे? रागिनी ने लगभग आदेश देने के अंदाज में मुझे बोला।

"जो हुक्म मेरी शेरा वाली माँ! मैं सीधा आफिस ही आऊँगा " ये बोलकर मैने फ़ोन काट दिया।
****

मैं लगभग एक बजे के करीब निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पहुंच चुका था। अब मेरा सबसे पहला काम अपने आफिस में पहुंचने का था जहां रागिनी मेरा बेसब्री से इन्तजार कर रही थी। मुझे एक ऐसे कत्ल की जानकारी अगले दिन मिली थी जिसकी लाश से

आपके खादिम का वास्ता एक दिन पहले ही हो चुका था। भगवान भी न जाने कैसे कैसे खेल दिखाता है? इतने बड़े एम्पायर के मालिक का बेटा ऐसी अवस्था मे लावारिसों की तरह रेल की पटरियो पर मरा हुआ पाया जाता है।
इन्ही ख्यालों में डूबा हुआ मैं स्टेशन से बाहर तक आ गया।मैंने एक टैक्सी पकड़ी और वजीरपुर स्थित नेताजी सुभाष प्लेस के लिए रवाना हो गया! जहां इस गरीब का एक छोटा सा आफिस है I
****

मैं अपने आफिस में पहुंचा तो रागिनी कंप्यूटर मे खोई हुई थी और सुरेश अखबार पड़ने में बीजी था। मुझे देखते ही सुरेश तो सावधान कि मुद्रा में खड़ा हो गया लेकिन रागिनी अभी भी कंप्यूटर में ही बिजी थी। मैं रागिनी को बिना कुछ बोले सीधा अपने केबिन में चला गया। थोड़ी देर बाद रागिनी हाथों में एक फाइल लिए हुए मेरे केबिन में दाखिल हुई।

"जब बॉस आफिस में आता है तो उसे कोई दुआ सलाम की जाती है या नही? मैंने बनावटी गुस्से में रागिनी को डांटा।

"लेकिन मैं तो गुड मॉर्निंग सुबह ही बोल चुकी जब आपको फ़ोन किया था।

"वो तो सुबह की बोली थी! अब दोपहर की कौन बोलेगा? मैं आज रागिनी की फुल खिंचाई के मूड में था।

"अच्छा फिर बोलना शाम की बोलो? फिर बोलना की गुड नाईट भी बोलो? मैं तो बस इस दुआ सलाम में ही लगी रहूंगी दिन रात! और तो कोई काम है नही अब इस आफिस में? कहाँ तो में रागिनी की

खिंचाई के मूड में था और कहां वो ही मुझ पर झांसी की रानी बनकर टूट पड़ी थी।

"ओए झांसी की रानी! कूल बेबी कूल! मैं तो मजाक कर रहा था यार ? मुझे रागिनी के ऐसे रौद्र रुप धारण करने की जरा भी आशंका नही थी।

"तो मैं कौन सा सीरियस बोल रही हूँ" ये बोलकर रागिनी जोर से हँस पड़ी। रागिनी को हँसता देखकर मैंने भी राहत की सांस ली।

आप भी सोच रहे होंगे क कैसा बॉस है जिसे उसका स्टाफ ही डांट लगा देता है? लेकिन ऐसा कुछ भी नही है? रागिनी एक सिंपल सी लड़की है! वो भले ही खूबसूरती का ताजमहल न हो लेकिन एक सच्चे दिल की मालिक थी। उसमें मैंने कभी कोई छल कपट नही देखा था। वैसे भी मेरी नेचर हमेशा सभी से घुलमिल कर रहने की रही है चाहे वो मेरा स्टाफ हो चाहे मेरा क्लाइंट ?

"अब ये तो बताओ क मुझे आफिस क्यो बुलाया है? तुम्हे मालूम है न मैं सफर से कितना थका हुआ आया हूँ? मैंने रागिनी से ऑफिस बुलाने का औचित्य पूछा।

"मैंने आपको इसलिये यहां बुलाया हैं क इस मानव भल्ला वाले केस में मैं भी आपके साथ काम करुँगी? रागिनी ने एक नया स्यापा छेड़ दिया था।

"फिर ऑफिस कौन देखेगा? मैंने रागिनी को बोला।

"यहां कौन सी कस्टमर की लाइन लगी रहती है दिन भर? कोई भूला भटका आता भी है तो वो पहले फ़ोन करता है? उसके फ़ोन के हिसाब से मैं काम को सम्हाल लूंगी? फिर यहां सुरेश तो है ही? रागिनी ने पूरी कहानी फिट करी हुई थी।

"लेकिन ये सुरेश है कहाँ ? अभी तक चाय क्यो नही लाया ? मैंने रागिनी से पूछा।

" मैंने बोला था उसे अगर आप मुझे अपने साथ इस केस पर काम करने को राजी हो गए ? तभी चाय लेकर आना ? रागिनी ने किसी ब्लैकमेलर की तरह कहा।

"ब्लैकमेल कर रही हो ? चलो ठीक है ? इस केस में मैं तुम्हे अपने साथ रखूंगा ? लेकिन सोच लो मेरे काम करने की कोई टाइमिंग नही है ? कभी कभी पूरी रात भी बाहर रहना पड़ता है ? दुश्मनों के फटके भी खाने पड़ते है ? फिर मत बोलना की केस के चक्कर में तुम्हारा जुगराफ़िया बदल गया ? मैंने अपने काम में क्या क्या झेलना पड़ता है ? वो रागिनी को बताया।

"मुझे सब पता है ! जनाबे आली ! और आपकी ये खिदमतगार जुडो कराटे में ब्लैक बेल्ट है ? आप भी मेरी पनाह में सुरक्षित रहोगे ? रागिनी ने अपने बारे में वो बात बता दी जो आज से पहले उसने कभी नही बताई थी।

"अच्छा ? तुम ब्लैक बेल्ट हो ? तुमने बताया तो नही कभी ? मुझे एक बारगी तो यक़ीन ही नही हुआ।

"आपने कभी कोई गलत हरकत की ही नही मेरे साथ ऑफिस में ? अगर करते तो जलवा दिखाती आपको " रागिनी ने हँसते हुए कहा।

"अच्छा तुम्हे क्या मैं कोई छिछोरा लगता हूँ ? जो तुम्हारे साथ कोई गलत हरकत करूँगा ? मैंने रागिनी को नाराजगी भरे स्वर में बोला।

" जब मैंने ऑफिस जॉइन किया था तो आपके फ्लीटिंग के बहुत किस्से सुने थे ? इसलिये उम्मीद कर

रही थी कि हो सकता है मेरे साथ भी कुछ करने की कोशिश करो? रागिनी ने बोला।

"हे भगवान! कैसी लड़की हो तुम? जो रोज ये सोच कर ऑफिस आती थी कि तुम्हारा बॉस तुम्हे छेड़े? मैंने अजीब सा मुंह बना कर रागिनी को बोला।

"बात को बदलो मत हुज़ूर? मैं ये सोचकर नही आती थी कि मेरा बॉस मुझे छेड़े? मैं ये सोचकर आती थी कि अगर मेरा बॉस मुझे छेड़े तो उसे अपने हुनर से सामना करवाऊ? रागिनी से बातो में तो मैं कभी जीत ही नही सकता था।

"चलो ठीक है! आज तो मैं बहुत थका हुआ हूँ! अभी घर जाकर आराम करूँगा? कल से देखते है क्या होता है? मैंने रागिनी को बोला।

"ओ के बॉस " रागिनी के चेहरे की मुस्कान और 6" गहरी हो गयी थी।

"अब तो चाय पिला दो महारानी?" मैंने रागिनी को बोला।

"अब तो चाय के साथ साथ तुम्हे कुछ और भी मिलेगा?" रागिनी की बात सुनकर मेरी उम्मीदों को पंख लग चुके थे।

"क्या मिलेगा? मैंने उम्मीद भरी नजरों से रागिनी की आंखों में झांका।

"अभी पता चल जायेगा? जहाँपनाह! ये बोलकर रागिनी ने मेरे केबिन का दरवाजा खोला। दरवाजे पर सुरेश चाय के साथ पारले जी के बिस्कुट भी लेकर खड़ा था।

"यही है तुम्हारा साथ मे कुछ? मैंने उन सूखे हुए बिस्किट पर एक नजर गुस्से से डाली।

"हां इस केस में अपने साथ ले जाने की खुशी में बस यही ट्रीट दे सकती हूँ? क्या करुँ? इस गरीब की इतनी सी तनख्वाह में यही आ सकता था? रागिनी ने मासूम सा चेहरा बना कर बोला।

उसकी ये मासूमियत देखकर मेरे होठो पर बरबस ही हँसी आ गई। मैंने चाय के साथ दो बिस्कुट खाये और फिर वहां से रुखसत होकर अपने गरीबखाने की और निकल लिया।

****

मानव की लाश पोस्टमार्टम के बाद अगले दिन शाम को मिली।उससे अगले दिन सुबह गुलशन भल्ला और अखिल अपने भाई की लाश को लेकर घर पहुंचे। लाश के घर पहुंचते ही घर मे रोने के क्रुन्दन स्वर और तेज हो गए। घर मे कोहराम मचा हुआ था। रिस्तेदारो का तो मानो सैलाब उमड़ आया हो। हर किसी के चेहरे पर गम और अवसाद की परछाई देखी जा सकती थी। किसी की समझ मे कुछ नही आ रहा था की ये अचानक से हुआ क्या?

सुदर्शन भल्ला रिस्तेदारो की भीड़ से घिरे थे। लेकिन वे भी समझ नही पा रहे थे कि वक़्त ने ये अचानक कैसी करवट ली है। जवान बेटे की हत्या और वो भी घर से इतनी दूर ! उन्हें समझ ही नही आ रहा था कि ऐसा कौन उनका दुश्मन आ गया, जो इस हद तक आ गया।

मैं जब सुदर्शन भल्ला की कोठी पर पहुंचा तब तक वहां लोगो का सैलाब उमड़ चुका था। शायद सुदर्शन भल्ला का कारोबारी होने के साथ साथ राजनीतिक रसूख भी रहा होगा।इसलिये ही लोगो का इतना हुजूम वहा नजर आ रहा था। पुलिस का भी वहां भारी बंदोबस्त था।मीडिया को तो ऐसी घटनाओं का

थी ! जिस कारण हमारी ट्रैन वहां काफी देर तक रुकी रही ! तब मैंने उतर कर देखा तो वहां आपके भाई की लाश थी और वहां की पुलिस बहुत ही लचर तरीके से घटना स्थल की जांच कर रही थी ?" मैंने एक ही सांस में पूरा घटनाक्रम सुना दिया। अखिल मेरी और बस अपलक निहारे जा रहा था।

" पुलिस ने क्या लापरवाही बरती वहां ? अखिल ने मुझ से पूछा।

" घटनास्थल पर सारी पब्लिक निर्विघिन आ रही थी जा रही थी ? जिस कारण सबूतों के नष्ट होने का खतरा हो गया था " मैंने अखिल को वस्तुस्थिति से अवगत कराया।

" आप पुलिस महकमे से होक्या ? जो पुलिस इन्वेस्टीगेशन के बारे में इतनी बारीकी से जानते हो ? अखिल मेरी बातों से प्रभावित नजर आ रहा था। आसपास खड़े रिश्तेदार भी हमारी बातचीत बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

" जी नही पुलिस महकमे से तो नही हूँ ? लेकिन मेरा काम पुलिस वाला ही है ? बस इतना फर्क है कि वो ये काम सरकारी तौर पर करते है और मैं निजी स्तर पर ? मतलब की मैं एक प्राइवेट जासूस हूँ !" मैंने अखिल को अपना परिचय विस्तार से दिया।

" ओह्ह फिर तो आप बहुत काम की चीज़ हो भाई ? आपका नाम क्या है ? अखिल ने मुझ से पूछा।

" जी बन्दे को अनुज कहते है और ये मेरी असिस्टेंट है रागिनी ! मैंने अपने साथ साथ रागिनी का भी परिचय करवाया। अखिल ने एक उड़ती हुई नजर रागिनी पर डाली।

लोगो को मेरे बारे में बता दिया था। तभी ये लोग हमारे बाहर निकलते ही हमें घेर चुके थे।

"मैंने कुछ नही देखा भाई लोगो? अभी यहां का माहौल ऐसा नही है कि हम इस तरह की बाते करे? फिर कभी बात करते है? मैंने उन लोगो से पीछा छुड़ाने की गरज से बोला। क्योकि मेरे धन्धे में किसी भी किस्म की सस्ती लोकप्रियता से बचने की सलाह दी जाती है ।

"लेकिन सर हमें पता लगा है कि आप घटनास्थल पर मौजूद थे? तो आपने कुछ तो देखा होगा? उस मीडियाकर्मी ने अपना सवाल फिर से उछाला।

"हमें ये भी पता लगा है कि आप वहां की पुलिस इन्वेस्टीगेशन के तौर तरीकों से खफा थे? आपने वहां की पुलिस की क्या क्या लापरवाही देखी सर? एक लड़की कुछ ज्यादा ही उत्साहित थी।

"भाई लोगो मैंने बोला न कि बाद में बात करेगे? अभी मैं कुछ नही बता पाऊँगा? ये बोलकर मैंने वहां से जल्दी से निकलने की सोची और मैं रागिनी को इशारा करके तेजी से अपनी गाड़ी की और बढ़ गया।

गाड़ी में बैठते ही मैंने गाड़ी को दौड़ा दिया। लेकिन जनाब इन मीडियाकर्मियो का गजब का प्रशिक्षण होता है।कुछ लोग माइक लेकर गाड़ी के साथ साथ दौड़ने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन कुछ ही दूर के बाद उन लोगो के कदम रुक गए और फिर मैं निर्विघिन वहां से अपने आफिस की और निकल आया।

कत्ल भरूच में चलती ट्रेन में हुआ था या किसी ने कही और कत्ल करके लाश को वहां ट्रेन की पटरी पर डाला था ये अभी मेरे लिए भी रहस्य ही था।

"आप कल आकर मिलो मुझ से? आज तो इस माहौल में कोई बात नही हो पाएगी? कल मैं आपकी मुलाकात पापा और भैया से भी करवा दूँगा!" अखिल ने मुझे बोला।

"ठीक है अखिल जी! कल मिलते है" ये बोलकर मैंने अखिल से हाथ मिलाकर विदा ली। रागिनी भी मेरे पीछे पीछे बाहर की और लपकी।

"वाह सर आपने तो कमाल कर दिया? किस अंदाज में अखिल जी को शीशे में उतारा तुमने? रागिनी शायद लाइफ में पहली बार मुझ से प्रभावित दिखी।

"अभी आगे आगे देखना होता है क्या? और तुम मुझे एक बात बताओ? मेरे सामने तो बड़ी चबर चबर करती रहती है और अंदर तुम्हारे मुंह से एक शब्द नही निकला? मैंने रागिनी की अब खिंचाई करने की सोची।

"बॉस अभी ट्रेनिंग पर हूँ? ट्रेनिंग पूरी होने दो उसके बाद सिर्फ मैं बोलूंगी और आप सुनते और देखते रह जाओगे ? रागिनी ने फिल्मी स्टाइल में डायलॉग मारा।

"देखता हूँ तुम्हारी ट्रेनिंग को भी? मुझे रागिनी की काबलियत पर पूरा भरोसा था।

जैसे ही हम दोनों ने कोठी से कदम बाहर रखा! मीडिया कर्मियो ने मुझे अचानक से घेर लिया।

"सर हमें पता चला है कि आप भरुच में उस घटना स्थल पर मौजूद थे जहाँ पर मानव के साथ ये हादसा हुआ? आपने वहां क्या देखा ? एक मीडियाकमी ने अपना बड़ा सा माइक मेरे मुंह के आगे करते हुए पूछा। लगता था अंदर मौजूद किसी शख्स ने इन

अगर ट्रैन से कत्ल करने के बाद मानव की लाश को बाहर फेका जाता तो लाश की हालत को और ज्यादा खराब होना चाहिए था। लेकिन लाश को जब मैंने देखा था तो लाश की हालत इतनी खराब नही थी। चेहरा तो साफ साफ पहचान में आ रहा था। मुझे एक बार फिर भरूच जाना पड़ सकता था।

"रागिनी लगता है मुझे भरूच दोबारा जाना पड़ेगा? मैंने रागिनी को बोला।

"मुझे नही हमें सर? अब इस केस में जो भी काम करेंगे एक साथ ही करेंगे सर" रागिनी ने तुरंत मेरे शब्द को पकड़ लिया था।

"ठीक है हम दोनों ही जायेगे? मैंने भी रागिनी की हां में हां मिलाने में ही अपनी भलाई समझी।

"लेकिन हमें वहां जाकर करना क्या है? रागिनी ने मेरी और सवालिया निगाहों से देखा।

"सबसे बड़ा सवाल तो ये है कि लाश उस ट्रैन की पटरी पर आई कहाँ से ? क्या उसे किसी ट्रैन में कत्ल करके वहाँ फेंका गया या कही और उसका कत्ल करके उसकी लाश को उस पटरी पर डाला गया।

"लेकिन अगर लाश की तलाशी में किसी ट्रैन का टिकट मिलता है तो फिर तो सिद्ध हो ही जायेगा कि मानव किसी ट्रैन में था? रागिनी ने भी अब अपनी अक्ल के घोड़े दौड़ाने शुरू कर दिए थे।

"लेकिन मेरी आंखों के सामने उस पुलिसिये ने मानव के कपड़ो की तलाशी ली थी! उस समय तो उसकी जेब से कुछ भी नही निकला था? मैंने रागिनी की और देखकर बोला।

"अब इतना बड़ा आदमी अगर ट्रैन से इतना लंबा सफर कर रहा होगा तो कोई खाली हाथ तो नही होंगा वो? कोई बैग इत्यादि तो उसके पास जरूर होगा? हमें पता करना होगा कि कोई लावारिस बैग रेलवे को मिला है क्या? उस 5 फुट 4 इंच की सावली सलोनी लड़की ने बात पते की कि थी। मैंने कायल नजरो से उसे निहारा। वो मेरी और देखकर मंद मंद मुस्करा रही थी।

" मुझे पता नही था कि तुम्हारा दिमाग भी जासूसों की तरह चलता है!" मैंने रागिनी का उत्साह बढ़ाया।

"लेकिन मानव के बैग को तलाश करना बहुत लंबा काम होगा? अब पता नही किस स्टेशन पर उसके बैग को उतारा गया होगा? और अभी हम अंधेरे में तीर मार रहे है? क्या पता लाश को कहीं और से लाकर वहां डाला गया हो" मैंने सभी परेशानियो को रागिनी के सामने रखा।

"हम्म बात तो आप सही कह रहे हो? अब तो कल उनकी फैमिली बताएगी की मानव वहां कैसे पहुंचा" रागिनी ने बोला।

"हां अब तो कल तक इंतजार करना ही पड़ेगा?" मैंने असहाय मुद्रा में रागिनी को बोला।

"फिर अब क्या करना है?" रागिनी ने मासूमियत से मेरी और देखकर कहा।

"करने का दिल तो बहुत कुछ कर रहा है? लेकिन फिर तुम्हारी ब्लैक बेल्ट की डिग्री याद आ जाती है? मैंने मुस्करा कर रागनी को बोला।

"ऐसे ही दिन के लिए ब्लैक बेल्ट हासिल की थी? पता नही कब किस की नीयत खराब हो जाये? रागिनी ने भी मुस्करा कर जवाब दिया।

"चिंता मत कर मेरी नीयत तो तब भी खराब नही होती जब मुझे सामने से आफर मिलता है?" मैंने रागिनी को जवाब दिया।

"इतनी तो इंसान की पहचान है मुझे सर! तभी आज आपके साथ यहां बैठी हूँ! और खुद जिद करके आई हूं" रागिनी ने भी मेरी बात का बिल्कुल सीधा जवाब दिया।

"चलो आफिस ही चलते है फिर? वहां कम से कम सुरेश चाय तो पिलायेगा? मैंने रागिनी की और देख कर बोला।

"हाय कैसे कंजूस बॉस से पाला पड़ा है? किसी कॉफ़ी शॉप में चल कर कॉफ़ी ही पिला दो? रागिनी ने मुझ पर तंज कसते हुए कहा।

"रागिनी मैडम लोग मेहनत कर कर के पैसे कमाते है और मैं तो मेहनत के साथ साथ पिटाई भी खाकर पैसे कमाता हूँ, इसलिए पैसे की कद्र मुझे ज्यादा करनी चाहिये" मैंने रागिनी को पैसा बचाने की एक तरह से नसीहत दी।

"पैसे की कद्र उसे तिजोरी में कैद करने से नही होती बल्कि पैसे की कद्र पैसे को खर्च करने से ही होती है? सरकार भी लोगो के खर्च करने के लिए ही नोट छापती है न कि उन्हें तिजोरी में छुपाने के लिए" मैंने आपको पहले भी बोला है कि मैं रागिनी से बातो में तो जीत नही सकता, इसलिये अपनी गाड़ी को मैंने चुपचाप कॉफ़ी डे की और बढ़ा दी।
****

"उसकी लाश पहचान में कैसे आ गयी? तुम्हे क्या बोला था मैंने? फ़ोन पर कोई आदमी उस शख्स को डांट रहा था जिसने मानव को ठिकाने लगाया था।

"गलती हो गयी सर? हमने तो उसे ट्रैक पर इसलिए फेंका था कि कोई न कोई गाड़ी तो गुजरेगी जो उसका हुलिया बिगाड़ देगी? लेकिन बदकिस्मती से उस ट्रैक से रात को कोई गाड़ी ही नही गुजरी?" वो शख्स बिल्कुल मिमयाने वाले अंदाज में बोल रहा था।

"सारे प्लान की वाट लगा दी तुमने और अब गलती होने का रोना रो रहे हो! गलती से भी मेरे सामने मत पड़ जाना वरना तुम्हारा अंजाम भी मानव वाला होगा?" उधर से उस आदमी ने उस शख्स को साफ साफ धमकी दी।

"लेकिन सर हमारे बाकी पैसे? अब उस शख्स का स्वर कुछ बदल गया था।

"अभी जरा मामले को ठंडा होने दो? उसके बाद पैसे का लेनदेन करुगां? अगर इतनी बड़ी रकम अभी इधर से उधर की तो हजार सवाल उठेंगे? उस आदमी ने अपनी आवाज में अब नरमी लाते हुए कहा।

"ठीक है सर हम इंतजार कर लेंगे थोड़े दिन" उस शख्स ने भी अपनी टोन चेंज करते हुए कहा।
उसके बाद उधर से फ़ोन काट दिया गया। इधर इस शख्स के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान नाच उठी।
****

मैं अगले दिन फिर से भल्ला निवास पर रागिनी के साथ पहुंच गया था। मेरी नजरे अखिल भल्ला को ढूंढ रही थी। तभी एक शख्स मेरे पास आया।

"आप वही हो न जिन्हें कल अखिल ने आज मिलने के लिए बुलाया था" वो शख्स शायद कल हमारी बातचीत के दौरान वहां मौजूद था।

"जी हां हम वही है! कहाँ मिलेंगे आपके अखिल बाबू? मैंने उस शख्स से अखिल भल्ला के बारे में पूछा।

"चलिए हम आपको बड़े बाबूजी से मिलवा देते है? अखिल ने बोला था कि आप आओ तो बाबूजी से मिलवा देना" उस शख्स ने मुझे बोला।

"अखिल बाबू कहाँ गए है? मैंने उस शख्स से पूछा जो बाबूजी को तो सम्मान से बुला रहा था लेकिन अखिल भल्ला का नाम बेअदबी से ले रहा था।

"साहब मानव बाबू के आज ही फूल लेकर हरिद्वार जाना था तो अखिल अपने बड़े भाई गुलशन बाबू के साथ हरिद्वार गए है? उस शख्स ने अखिल भल्ला के वहा न होने की वजह बताई।

हमारी पूरी बातचीत के दौरान रागिनी पूरी तरह से शांत खड़ी थी।
"आप कौन हो इस घर मे" आख़िर में मैंने उस शख्स का परिचय पूछ ही लिया।

"जी हम तो इस घर के वर्षो पुराने खानसामे है, नाम है पवैया? उस पवैया नाम के शख्स ने मेरी और देख कर बोला।

"तुम्हारे इस अजीब से नाम के बारे में फिर कभी डिस्कस करेंगे? पहले तुम बड़े बाबूजी से मिलवाओ जल्दी से" मैंने पवैया को हुकुम सा सुना दिया।

"जी बाबूजी अंदर आने जाने वालों के साथ बैठे है ?

"जी आप यही रुकिए मैं अभी उन्हें आपके बारे में बता कर आता हूँ" पवैया ये बोल कर जल्दी से अंदर हाल की तरफ बढ़ गया, जहाँ आने जाने वाला का तांता अभी भी लगा हुआ था।

थोड़ी देर बाद पवैया लगभग दौड़ता हुआ मेरे पास आया।

"बाबूजी आपको अंदर बुला रहे है, आप मेरे साथ चलिए" पवैया ये बोलकर वापस अंदर जाने के लिए मुड़ गया। हम भी उसके पीछे पीछे चल दिये।

अंदर हम जिस कमरे में पहुँचे वो एक विशालकाय कमरा था। और उसमें मानव भल्ला की एक बडी सी फ़ोटो लगी थी। बन्दे की पर्सनलटी किसी फिल्म स्टार से कम नही थी। उसी कमरे के एक सोफे पर सुदर्शन भल्ला बैठे हुए थे।

"आप लोगो के बारे में अखिल ने कल ही बता दिया था, क्या जानते हो आप इस कत्ल के बारे में"

"जी अभी तो मैं कुछ नही जानता इस कत्ल के बारे में? लेकिन अगर आप लोग चाहेगे तो बहुत जल्दी जानने की काबलियत रखता हूँ? मैंने सुदर्शन भल्ला को साफ साफ बोला।

"मैं बस अपने बेटे के हत्यारे को फांसी पर चढ़ते हुए देखना चाहता हूँ? मैं देखना चाहता हूँ कि ऐसा कौन है वो जिसने मेरे बेटे का ये हाल किया है!" सुदर्शन भल्ला के गुस्से और क्षोभ को मैं समझ सकता था। दौलत का नशा एक ऐसा नशा होता है जिसके नशे में इंसान खुद को ही भगवान समझ बैठता है? लेकिन वक़्त की लाठी हर किसी को जमीन पर ला देती है? इसकी जीती जागती मिसाल मेरे सामने सुदर्शन भल्ला के रूप में बैठी थी।

"मैंने मानव को भरूच की रेलवे लाइन पर पड़े हुए देखा था उसके मर्डर के बाद? आप बता सकते हैं कि वो भरूच कैसे पहुंचा? मैं स्वयं भी कल से ही ये बात जानने को उत्सुक था।

"वो किसी काम के सिलसिले में मुम्बई जा रहा था! उसे प्लैन से ज्यादा ट्रैन में सफर करना अच्छा लगता था! इसलिये वो किसी ट्रैन में ही होगा जो उसकी बॉडी ट्रैन के ट्रैक पर मिली? सुदर्शन जी ने एक मिनट में हमारी परेशानी हल कर दी थी।

"वो किस ट्रैन से मुम्बई गए थे उसकी कोई जानकारी मिल सकती है? इस बार सवाल रागिनी ने पूछा। लड़की सही दिशा में जा रही थी।

"वो तो हमारे ट्रेवल एजेंट से सब पता चल जाएगा" सुदर्शन भल्ला हमारी एक के बाद एक परेशानी का हल दे रहे थे।

"आपको किसी पर शक या कोई आपका ऐसा बिज़नेस राइवल जो आपको इस तरीके के ज़ख्म भी दे सकता हो?" मैंने दुश्मनी का एंगल भी जानने की कोशिश की।

"अभी तो इस बारे में कुछ नही बता सकता? थोड़ा दिमाग शांत हो जाए तो फिर गहराई से सोचकर बताउंगा आपको" सुदर्शन भल्ला मेरे इस सवाल से कुछ विचलित नजर आए।

"मानव की किसी से दुश्मनी हो सकती है क्या? रागिनी के मुंह से अब सवाल निकल रहे थे।

"नही बेटी? वो तो किसी से भी कोई खास मतलब नही रखता था, पता नही किन जालिमो ने मेरे सबसे प्यारे बच्चे की जान ले ली?" ये बोलते बोलते भल्ला साहब की आवाज भर्रा गयी थी।

तभी एक बूढ़ी सी दिखने वाली अम्मा हमारे लिए पानी के ग्लास लेकर आ गई। हमने बिना किसी तकल्लुफ के पानी ले लिया। वो अम्मा हंमे अजीब सी नजरो से देखते हुए बाहर निकल गई।

"सर बिना वजह तो कोई किसी को नही मारता? कोई तो वजह इस मर्डर की रही होगी? रागिनी व्यग्र स्वर में बोली। वो शायद आज ही केस को सुलझा लेना चाहती थी।

"वजह का भी पता लग जायेगा जब कातिल हमारी पकड़ में होगा रागिनी? मैंने रागिनी के उतावलेपन को सम्हाला।

"आपके परिवार के बारे में बताइये सर! तीनो भाइयों में कैसे रिलेशन है? मैंने अपनी जानकारी को और बढाना चाहा।

"मेरे तीनो बेटो में कही कोई मनमुटाव नही था। जब तक मैं जिंदा हूँ तब तक बिज़नेस में भी किसी किस्म के बंटवारे की कोई गुंजाइश नही है" सुंदर्शन जी ने अपने परिवार की एक आदर्श पिक्चर हमारे सामने रख दी।

"आपकी दो लड़कियां भी है, उनके बारे में बताये सर कुछ? मैंने उनकी लड़कियो के बारे में भी जानना चाहा। लड़कियो का नाम आते ही उनके चेहरे के भाव थोड़े से बिगड़ से गये।

"उनके बारे में क्या बताऊँ? एक कि शादी हो चुकी है और एक अभी पढ़ रही है ? उनका इन सबसे क्या लेना देना।

"नही सर लेना देना कुछ नही है? हम बस पूरी फैमिली के बारे में जानना चाह रहे है" मैंने भल्ला साहब को बोला।

"अच्छा सर ! अब हम चलते है! आपके ट्रेवल एजेंट का नाम क्या है सर? मैंने आज का आखिरी सवाल पूछा। भल्ला साहब ने तत्काल अपने ट्रेवल एजेंट का नाम उसके फ़ोन नंबर सहित मुझे दे दिया।

मैंने और रागिनी ने उनका अभिवादन किया और बाहर की और बढ़ चले।
****

मैंने बाहर निकलते ही फिर से उस बुड्ढी अम्मा को देखा। वो अभी भी मुझे अजीब सी निगाहों से देख रही थी। मैं अम्मा की और बढ़ा। मुझे अपनी तरफ बढ़ते देखकर वो अम्मा कोठी से बाहर की और चल दी। इस उम्र में भी उस अम्मा की चाल में गजब की तेजी थी।अम्मा कोठी के सामने जाने की बजाय कोठी के पीछे की और मुड़ गयी। मैं और रागिनी भी अम्मा के पीछे जा रहे थे। लेकिन हम अम्मा की तरह तेज नही चल रहे थे। अम्मा घर से थोड़ी दूर बने पार्क के पास जाकर खड़ी हो गई और हमारी और ही देखने लगी। हमे नजदीक आते हुए देखकर अब अम्मा पार्क के अंदर जा चुकी थी। शायद अम्मा हमसे बात करते वक़्त किसी की नजरों में नही आना चाहती थी। अब मुझे पक्का यकीन हो चला था कि इस कत्ल से जुड़ा कोई बहुत बड़ा राज अम्मा के पास है।

पार्क इस वक़्त सुनसान पड़ा था। कहीं कहीं इक्का दुक्का लोग दिखाई पड़ रहे थे। अम्मा एक पेड़ की ओट में खड़ी हो चुकी थी। मैं और रागिनी ने उसके बिल्कुल पास पहुंच गए।

"कहो अम्मा कैसी हो आप" रागिनी ने माहौल को हल्का बनाना चाहा।

अम्मा ने कोई जवाब नही दिया बस अपलक हमें देखती रही।

"भल्ला साहब के घर मे कब से काम कर रही हो अम्मा? मैंने अम्मा से पूछा।

"तुम कुछ नही कर पाओगे बेटा? ये बड़े लोगो की लीला है? इस लीला को इन लोगो को ही करने दो। अम्मा ने पहेलियां बुझाने वाले अंदाज में बोला।

" मतलब? मैं कुछ समझ नही पाया अम्मा?" मैंने अम्मा की और सवालिया नजरो से देखा।

"न ही समझो तो अच्छा है? मानव की मौत के बाद इस खानदान की बर्बादी शुरू हो चुकी है? अम्मा किसी गहरे राज को अपने सीने में दफन किये हुए बैठी थी।

" आप कुछ जानती है इस कत्ल के बारे में" मैंने अम्मा की आंखों में झांका।

"मानव तो बहुत नेक बच्चा था! इस घर का सबसे छोटा लड़का था! पता नही किस नासपीटे ने उसकी जान ले ली?" अम्मा के चेहरे पर अवसाद और गुस्सा साफ देखा जा सकता था।

"आप कुछ जानती हो इस कत्ल के बारे में?" मैंने दोबारा से अम्मा को अपना सवाल याद दिलाया।

मेरा सवाल सुनकर अम्मा की आंखों में एक चमक आ गयी।

****

मैं उन अम्मा की आंखों में एक अनोखी चमक साफ देख रहा था लेकिन जिस तेजी से वो चमक उभरी थी उसी तेजी से लुप्त भी हो गयी थी।

"बताओ अम्मा अगर कुछ जानती हो तो? इस बार रागिनी ने मोर्चा सम्हाला।

"वक़्त आने दो बेटा सब बताऊँगी" अम्मा भी कुछ घाघपना दिखा रही थी।

"अब किस वक़्त का इंतज़ार कर रही हो अम्मा? मरने वाला तो मर चुका? अब तो उसे मारने वाले को पकड़ने का समय है?" रागिनी अपनी बातों से अम्मा को सही तरीके से घेर रही थी। मैं बिना कुछ बोले रागिनी की मंत्रमुग्ध सा देख रहा था।

"ये सब सुदर्शन के कमी का फल है? और मानव की बलि तो चढ़नी ही थी बेटी? अम्मा की ये बात सुनकर मैं और रागिनी दोनों एक साथ चौंक पड़े।

"कैसा पाप और मानव की ही बलि क्यों चढ़नी थी अम्मा? इस बार आपके ख़ादिम ने दखलअंदाजी की।

"मानव सुदर्शन भल्ला की रखैल की औलाद है" अभी ये वाक्य अम्मा के मुंह से निकला ही था कि किसी दिशा से गोली चलने की आवाज आई! मैंने और रागिनी ने एक साथ अम्मा को किसी कटे बृक्ष की भांति पार्क की रेलिंग पर गिरते हुए देखा। मैं तत्काल गोली चलने की दिशा में भागा। लेकिन मुझे कहीं कोई हलचल सुनाई नही दी। कातिल शायद अभी भी उस पार्क में ही कहीं छुपा हुआ था। मुझे अब खुद की नही रागिनी की फिक्र थी। अगर कातिल ने हम दोनों को भी साथ ही निबटाने की सोची तो उसे किसी भी रुकावट का सामना नही करना पड़ेगा। मुझे पता नही था कि कातिल पार्क से बाहर जा चुका है या वही कही छुपा हुआ है। मैं दौड़कर रागिनी के पास पहुंचा। रागिनी फ़टी हुई आँखों से अभी तक अम्मा को देखे जा रही थी। आपके खाकसार ने तो इतनी जिंदगी में रोटियाँ नही खाई होंगी जितनी लाशों से मेरा वास्ता पड़ चुका है? लेकिन रागिनी के लिए किसी लाश को प्रत्यक्ष देखना पहली बार था। मैंने एक पल रागिनी को देखा और उसे हल्का सा झिंझोड़ा। रागिनी अपनी चेतना में वापस लौटी।

"सर अम्मा ???? रागिनी ने हाथ की उंगली के इशारे से अम्मा की लाश की तरफ इशारा किया।

"ह्म्म्म अम्मा मर चुकी है? हमें सबसे पहले पुलिस को कॉल करनी होगी!" मैंने रागिनी को बोला।

"लेकिन अम्मा को किसी ने क्यो मारा होगा? उस परिस्थिति में भी रागिनी का दिमाग एक जासूस की तरह ही सोच रहा था।

"वो कौन है जो सुदर्शन भल्ला की सच्चाई हम तक नही पहुंचने देना चाहता है? रागिनी मानो अपने आप से ही बातें कर रही हो।

"सर कातिल घर मे ही कोई है?" रागिनी एकदम से दो जमा दो जोड़कर चार के नतीजे पर पहुंच गई।

"कई बार जो हम देखते है या जो हमें दिखाया जाता है वो सब सच नही होता है? अभी किसी भी नतीजे पर पहुंचना जल्दबाजी होगी? पहले तो इस अम्मा के मर्डर के झमेले से हमें निकलना है? मैंने रागिनी को बोला।

"झमेले से निकलना है मतलब? कत्ल कोई हमने थोड़ी किया है सर? जो भी घटना घटी है उसे साफ साफ पुलिस को बता देंगे? रागिनी के लिए दुनिया अभी बिल्कुल सीधी थी लेकिन ये मासूम सी लड़की अभी दुनियादारी से अनजान थी।

मैंने रागिनी को कोई जवाब न देकर पुलिस को फ़ोन किया।पुलिसिया इन्वेस्टीगेशन से भी रागिनी का सामना पहली बार होने वाला था। मैं अब खामोशी के साथ वहां पुलिस का इंतजार करने लगा। अम्मा की लाश हमसे कुछ ही कदमो की दूरी पर पड़ी थी। पूरे पार्क में सन्नाटा पसरा हुआ था। मैं कातिल के बारे में अभी अंधेरे में था कि वो अभी भी पार्क में ही

था या वहां से निकल चुका था।
****

स्थानीय थाने से थाना इंचार्ज कृष्णकांत गौतम अपने दलबल के साथ पार्क में पहुंच चुके थे। फ़ोटो ग्राफर और फोरेंसिक की टीम अपने काम मे लग चुकी थी। थाना इंचार्ज और उनका एक सहायक मूझे और रागिनी को घेर कर खड़े थे।

"तो आप दोनों इस कत्ल के चश्मदीद गवाह है? आप लोगो के सामने ये कत्ल हुआ ? इंस्पेक्टर गौतम ने मेरी आँखों मे अपनी कठोर नजरो से देखा।

"जी हां! मेरे सामने ही इनका कत्ल हुआ है और मैंने ही आप लोगो को इस कत्ल की सूचना दी थी" मैंने भी सीधा इंस्पेकटर गौतम की आंखों में ही झांककर बोला।

"पहले तो ये बताओ इतनी दोपहर और भरी गमी में जब यह चिड़िया का बच्चा भी पंख नही मार रहा है! तुम दोनों इस पार्क में कर क्या रहे हो? इस बार थाना इंचार्ज के सहायक ने दखलंदाजी की।

"क्यो ऐसा कोई कानून है क्या जो इतनी दोपहर में और भरी गमी में इस पार्क में आने से रोकता हो? मैंने उसी पुलिसिये की टोन में उसे जवाब दिया।

"छोड़ वर्मा? बेचारे कही तन्हाई की तलाश में जगह ढूढ़ते ढूढ़ते यहां आ गए होंगे? ये उम्र ही ऐसी है इन दोनों की? इस उम्र में यही सब सूझता है? इंस्पेक्टर गौतम को लग रहा था कि वो यहां का थाना इंचार्ज है तो वो कुछ भी बोल सकता है? मैंने रागिनी की और देखा उसके चेहरे पर मुझे शर्म की लालिमा दिखाई पड़ी।

"इंस्पेक्टर साहब लगता है एक शरीफ शहरी का फर्ज निभाकर मैंने कोई गलती कर दी? जब आप जैसे बड़े अफसर ही ऐसे छिछोरे कमेंट करेगे तो जो आती जाती लड़कियो को भरे बाज़ार में छेड़ते है तो उनको किस मुंह से रोकोगे आप?" मेरी बात सुनते है इंस्पेक्टर गौतम बगले झांकना लगा। उनका सहायक जिसका नाम वर्मा था, मेरी बात का जवाब देने के लिए अभी अपना मुंह खोलना ही चाहता था कि इंस्पेक्टर गौतम ने आंख के इशारे से उसे चुप करवाया।

"ये बताओ आप दोनों यहां कर क्या रहे हो? इस बार इंस्पेक्टर गौतम ने अपना सुर बदलते हुए कहा।

"हम दोनों इन अम्मा से कुछ बात कर रहे थे कि पता नही किस तरफ से एक गोली आई और अम्मा को धरासाई कर गयी" मैंने इंस्पेक्टर गौतम से सच्चाई को छुपाया नही।

"तुम जानते हो क्या इन अम्मा को? इंस्पेक्टर गौतम ने मेरी और सवालिया निगाहो से देखा।

"नही सिर्फ इतना जानता हूँ कि ये अम्मा सुदर्शन भल्ला के यहाँ नौकरानी थी? मैंने इंस्पेक्टर को जवाब दिया।

"कौन सुदर्शन भल्ला? वही जिनके बेटे का अभी मर्डर हुआ है? ये उनके यहां नौकरानी थी?

"जी हां? और मैं एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ नाम है अनुज? शायद आप नही जानते होंगे लेकिन आपके ही महकमे के बहुत लोग जानते है? मैंने बातो बातो में इंस्पेक्टर गौतम को अपना परिचय भी दे दिया।

"अच्छा तो जासूस साहब तो आप सुदर्शन भल्ला के बेटे के मर्डर की इन्वेस्टीगेशन के सिलसिले में इन

"लाश के गिरने के एंगल से लगता है कि गोली सामने से चलाई गई है? अब कितनी दूरी से गोली मारी गयी है ये तो रिपोर्ट आने पर ही पता चलेगा? उन शर्मा नाम के शख्स ने इंस्पेक्टर को बताया।

"कमाल है दो दो चश्मदीद गवाह और किसी ने गोली मारने वाले को नही देखा? इंस्पेक्टर गौतम ने फिर से हम दोनों की और नजर उठाकर देखा।

"क्यो जासूस साहब कही तुम्ही कोई खेल तो नही रच दिए हो इन मोहतरमा के साथ मिलकर? इस बार इंस्पेक्टर गौतम ने सीधे सीधे हमें ही दोषी मान लिया।

"चलो लाश को जल्दी से पोस्टमार्टम के लिए भेजो? और जासूस साहब आप भी जरा थाने चलिए! आपकी भी स्टेटमेंट दर्ज करनी होगी? उसके बाद आप जा सकते हो और जब भी हमें इस केस में आपकी जरुरत होगी आपको आना पड़ेगा" इंस्पेक्टर गौतम ने हमे ताकीद किया।

"जी जनाब" मैंने उस बेवकूफ पुलिसिये के सजदे में सर को झुकाया। इंस्पेक्टर गौतम ने एक बार भी मानव के मर्डर और अम्मा के मर्डर की कडीओ को एक साथ जोड़ने की कोशिश नही की? शायद मर्डर क्योकि उनके क्षेत्र से कोई 1100 किलोमीटर दूर हुआ था! इसलिए शायद गौतम साहब खुद को इस केस में इन्वाल्व नही करना चाह रहे होंगे? क्योकि कायदे से वो मामला वहां की स्थानीय पुलिस के कार्यक्षेत्र का हिस्सा था।

मैं लाश को पोस्टमार्टम के लिए ले जाने के बाद रागिनी के साथ थाने पहुँचा और अपने बयान दर्ज करवाये, उसके बाद हम थाने से बाहर आ गए। इस पूरे वाक्य के दौरान रागिनी बिल्कुल चुप चुप रही

थी। शायद उसके अंतर्मन पर अम्मा के कत्ल ने कोई बुरा प्रभाव छोड़ दिया था। अब आपके इस खाकसार का तो लाशों के साथ चोली दामन का साथ है? लेकिन इस बेचारी का तो लाइव मर्डर देखने का ये पहला मौका था।खैर रागिनी के जासूसी करियर की शुरुआत अच्छी हुई थी? दूसरे ही दिन एक लाश से पाला पड़ जाना उसके उज्ज्वल भविष्य की और संकेत कर रहा था। अब भाई लोगो मेरी इस बात का बुरा नही मानना क्योकि इस बन्दे की दाल रोटी तो चलती तभी है जब कोई इस दुनिया से रुखसत हो जाये? वो भी किसी हादसे के रुप में?...
****

मैं और रागिनी थाने से निकल कर सबसे पहले एक कॉफी हाउस में पहुंचे? क्योकि पहले अम्मा का कत्ल और फिर उस इंस्पेक्टर ने बुरी तरह पका डाला था।भीषण गर्मी के इस मौसम में हमने कोल्ड कॉफी पीने को ही तवज्जो दी।

"सर उन अम्मा का कत्ल किसने किया होगा? रागिनी शायद इतनी देर से इसी सोच में गुम थी।

"रागिनी इस भल्ला परिवार में ही कोई खिचड़ी पक रही है? ये जो दौलत होती है ना और वो भी हद से ज्यादा दौलत ये सबसे पहले रिस्तो का ही खून करती है? इस परिवार में जरूर इस दौलत के लिए कोई अंदरूनी जंग छिड़ी है? जिसका शिकार पहले मानव और अब वो अम्माजी हो चुकी है? अभी और लोग भी इसका शिकार हो सकते है? मैंने अपनी अभी तक की सोच को रागिनी के साथ सांझा किया।

"ये तो मुझे भी लग रहा है? लेकिन अम्मा के कत्ल से एक बात तो साबित हो गयी कि उस घर के हर छोटे से छोटे इंसान पर बड़ी बारीकी से नजर रखी जा

Where is my Train

रहा है? रागिनी ने बड़ी गहराई से इस बात को परखा था शायद।

"अब सबसे पहले सुदर्शन भल्ला की उस रखैल का पता लगाना होगा जिसकी कोख से ये मानव पैदा हुआ था" मैने इस केस में अपना अगला टारगेट सेट कर लिया था।

"लेकिन उसके बारे में हमे कौन बताएगा? रागिनी ने उलझन भरे स्वर में कहा।

"खुद सुदर्शन भल्ला बताएगा?" मैंने रागिनी की और मुस्करा कर देख कर बोला।

"वो क्यो बताएंगे? अपनी अय्यासी की कहानी? रागिनी को पता नही क्यो मेरी बात पर विश्वास नही हो रहा था।

"आगे आगे देखना क्या होता है? सभी कुछ तुम्हारे सामने होगा? मैंने रागिनी को बोला।

"ठीक है वैसे तो आपकी काबलियत पर मुझे इतना भरोसा नही है लेकिन फिर भी एक बार भरोसा करके देख लेती हूँ? रागिनी ने हँसकर मेरी बात का जवाब दिया।

"मेरी काबलियत पर वो सभी मुर्दे भरोसा करते है मैडम जिनके कातिलों को मैंने जेल के सीखचों के पीछे पहुंचा दिया?" मैंने भी फिल्मी स्टाइल में डायलॉग मारा।

"मतलब जिंदा लोगो को तो आपके ऊपर भरोसा नही है ना हाहाहा? ये बोलकर रागिनी खिलखिला कर हँस दी। मैं उस सावली सलोनी सूरत को बस असमंजस से निहारता रहा।

****

Where is my Train

मैं रागिनी को उसके घर पर ड्राप करके अपने घर पर आ गया। मैंने घर पहुचते ही सबसे पहले अपने खबरी को फ़ोन मिलाया।

"कहो गुरु कैसे हो?" उधर से मेरी आवाज सुनते ही मेरा खबरी चहका।

"तुम्हे पता तो होगा कि मशहूर उद्योगपति सुदर्शन भल्ला के बेटे का कत्ल हुआ है? इस केस पर कल सुबह से लग जा? मैंने अपने खबरी को बोला।

"हां आजकल सारे न्यूज़ चैनल और अखबार उसी की खबरों से भरे पड़े है और गुरु आप भी तो छाए हुए हो टी वी पर? मेरा खबरी चहका। शायद उस न्यूज़ चैनल ने मेरी उस छोटी सी बातचीत को अपने चैनल पर चला दिया था।

"तू छोड़ यार इन टी वी चैनल को? तुम्हे जो काम कल से करना है वो ध्यान से सुन?" उसके बाद मैं अपने खबरी को उसका काम समझाता चला गया और वो बस मेरी हर बात में अपनी हां को मिलाता चला गया। थोड़ी देर बाद मैंने फ़ोन को रख दिया।

उसके बाद मैंने खुद को बिस्तर के हवाले कर दिया! उसके बाद कब मैं किस हसीना के ख्यालो में डूब कर सोया ये पता ही नही चला।
****

गुजरात का भरुच पुलिस की रेलवे चौकी।

उस पुलिस चौकी में इस समय अफरातफरी मची हुई थी।खुद रेलवे पुलिस के बड़े पुलिस अधिकारी उस चौकी में मौजूद थे।

"तुम्हारा नाम रामावतार गोखले है? जिस पुलिस अधिकारी ने ये सवाल उस चौकी के इंचार्ज

रामावतार गोखले से किया वो एस पी लेबल के अधिकारी थे।

"तुम्हे पता है तीन दिन पहले जो लाश आपको यहां की रेल की पटरी पर मिली थी वो किसकी लाश थी? एस पी साहब एक एक शब्द को चबा चबा कर बोल रहे थे।

"जी उस समय नही पता था? लेकिन अब पता है कि वो मशहूर उद्योगपति सुदर्शन भल्ला के बेटे मानव की लाश थी? गोखले मिमियाए स्वर में बोला।

"मेरा सवाल तुमसे ये है कि क्या तुम किसी लाश के साथ इंसाफ क्या उसकी हैसियत देखकर करोगें? क्या किसी गरीब इंसान के साथ अगर ये हादसा हो जाये तो क्या महज कागजी खानापूर्ति करके केस बन्द कर दोगे? एस पी साहब
गुस्से से बोले।

"नही सर ऐसा तो बिल्कुल भी नही है? हमने तो मानव बाबू के केस में भी ऐसा नही किया? गोखले कि मिमियाहट कम होने का नाम नही ले रही थी।

"नही किया तो मुझे इस केस से सम्बंधित अभी तक जितने भी एक्शन तुमने लिए है वो दिखाओ? एस पी साहब ने अब गोखले को घेर लिया था।

"मानव की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में क्या मिला तुम्हे? उसे किस गाड़ी से यहां फेका गया उसके लिए रेलवे से क्या क्या जानकारी जुटाई तुमने? एस पी साहब की बात सुनकर गोखले बगले झांकने लगा।

"जी पोस्टमार्टम रिपोर्ट तो अभी तक आई नही? गोखले ने जवाब दिया।

"तो तुमने पोस्टमार्टम टीम से खुद क्यो नही कंसल्ट किया? क्यो नही पूछा कि मानव की हत्या कैसे हुई? किस बात का इंतजार कर रहे थे तुम? तुम्हारी इस लापरवाही वो भी मर्डर जैसी संगीन वारदात में भी ऐसी लापरवाही के लिए तुम्हे अभी ससपेंड किया जाता है? कल तक यहां का चार्ज किसी और को सौपने की तैयारी कर लो? ये बोलकर एस पी साहब वहां से निकल लिए।

रामावतार गोखले बस लुटे पिटे अंदाज में एस पी साहब को जाता हुआ देखता रह गया।
****

"सुदर्शन भल्ला तेरी और तेरे खानदान की अब उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है? एक कोई चालीस साल के लगभग उम्र की वो महिला सुदर्शन भल्ला के पोट्रेट के आगे खड़ी होकर नफरत भरी निगाहों से सुदर्शन भल्ला को देख रही थी।

"तुझ से अपनी जिंदगी के बीस वर्षो के एक एक पल का हिसाब लूंगी? हमारे बहे हुए हर आंसू का हिसाब तुझे अपने खून से देना होगा भल्ला? वो महिला खुद ही बड़बड़ाये जा रही थी।

"अब तू अपनी जिंदगी की उतनी सांसे नही जी पायेगा जितनी तेरे घर मे लाशें गिरेगी? कोई नही बचेगा? सब मरेंगे बारी बारी?" उसके बाद वो महिला इस प्रकार हँसने लगी जैसे वो किसी पागलखाने से छूट कर आई हो।

****

अगले दिन जब सोकर उठा तो देखा रागिनी के दस मिसकॉल मेरे मोबाइल में आये हुए थे। मैंने रागिनी को फ़ोन मिलाया तो उसने पहली ही बेल पर फ़ोन उठा लिया।

"अभी तक घोड़े बेचकर सोये हो क्या सर? उधर से रागिनी की खिलखिलाती आवाज सुनाई दी।

"मेरी नींद की दुश्मन? ये बता कहाँ पर आग लग गई जो इतनी सुबह सुबह दस कॉल कर डाले?" मैंने अपनी आदत के मुताबिक रागिनी की क्लास लगानी शुरू की।

"आग तो कही नही लगी है? सिर्फ ये याद दिलाने के लिए फ़ोन कर रही थी कि आप जल्दी से ऑफिस आ जाइए! क्योकि फिर हमे सुदर्शन भल्ला से मिलने जाना है? रागिनी इस केस को लेकर कुछ ज्यादा ही उत्साहित थी।

"तो सुबह का नाश्ता क्या भल्ला साहब के घर पर ही करना है तुम्हे? थोड़ा आराम से चलेंगे यार? आता हूँ तैयार होकर ऑफिस? मैंने रागिनी को बोला।

"जरा अच्छे से तैयार होकर आना? आजकल एक खूबसूरत सी लड़की भी तुम्हारे साथ होती है? तो जरा लोगो पर टशन पड़ना चाहिए" रागिनी के दो दिन में ही पंख निकल आये थे। मैं उसकी सोच पर मंद मंद मुस्काया!

"क्यो मेरे साथ क्या तुमने बाहों में बाहें डाल कर डुएट सांग गाने है? जो मैं अच्छे से तैयार होकर आऊँ? मैनें भी रागिनी को उसी की टोन में जवाब दिया।

"सांग नही गाने तो क्या बंदर बनकर चलोगे मेरे साथ? रागिनी आज पता नही सुबह सुबह किस मूड में थी।

"देवी जी अगर में अंडरवियर बनियान में भी तुम्हारे साथ चलूंगा तो तुमसे ज्यादा स्मार्ट लगूंगा" मैंने रागिनी को चिढ़ाते हुए बोला।

"ज्यादा डॉलर अंडरवियर के अक्षय कुमार बनने की कोशिश मत करो अब तुम बुढ़ापे के शाहरुख खान की तरह रहने लगे हो? इसलिये कह रही हूँ कि अच्छे से तैयार होकर आना" रागिनी आज मेरी खिंचाई करने के फुल मूड में थी।

"आये तेजाब की माधुरी दीक्षित, ज्यादा हवा में मत उड़? लगता है कल अम्मा की लाश ने तेरे दिमाग के कलपुर्जे ढीले कर दिए है जो आज सुबह सुबह बहकी बहकी बातें कर रही है? मैंने रागिनी को कल की याद दिलाई।

"आप बना लो बात? कल की बात पर? लेकिन मैं इतने कमजोर दिल वाली नही हूँ सर? ये आप भी जानते है" रागिनी हार मानने वालों में से नही थी ये तो आप लोग भी जानते है। आख़िर मैं मुझे ही अपने हथियार डालने पड़े, और उससे ये कहकर पीछा छुड़ाया की अभी एक घण्टे में तैयार होकर ऑफिस पहुंचता हूँ।

****

नेताजी सुभाष प्लेस पहुंच कर मैंने रागिनी को नीचे ही बुला लिया, और फिर हम वहां से कृष्णा नगर के लिए रवाना हो गए, जहाँ हमें सुदर्शन भल्ला से मिलना था। आज हो सकता था कि उनके बड़े सुपुत्र गुलशन भल्ला और अखिल भल्ला से भी मुलाकात हो जाये। अभी उन अम्मा के बारे में भी पूरी जानकारी जुटानी थी, जिनका कल हमारी बातचीत के दौरान कत्ल हो गया था। अम्मा का कत्ल और मानव का कत्ल दोनों एक ही कड़ी से जुड़े थे। इन्ही विचारों और रागिनी से मगजमारी में उलझा हुआ मैं भल्ला साहब की कोठी पर पहुंच गया।

भल्ला साहब के एक नौकर ने हमारे आने की जानकारी उन तक पहुंचाई। कुछ ही पलों में हम उस नौकर के साथ भल्ला साहब के कमरे में उनके सामने खड़े थे।

"बैठिये अनुज साहब" सुदर्शन भल्ला ने बड़ी विनम्रता से हमें बैठने का आग्रह किया। भल्ला साहब ने हमारे साथ आये नौकर को ही नाश्ता इत्यादि लाने को बोला। कल तक जो गम का माहौल पूरी कोठी में पसरा हुआ था, उसका असर आज कुछ कम नजर आ रहा था।

"कल आपके घर की नौकरानी का भी कत्ल हो गया? इसकी खबर तो आपको लग ही चुकी होगी? मैंने बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

"हां पुलिस आई थी कल यहाँ कमला के बारे में बात करने? पता नही किस की नजर हमारे घर को लग गई है? सुदर्शन भल्ला ने चिंतित स्वर में कहा।

"जिस वक्त उनका मर्डर हुआ वो हमारे ही साथ थी वो हमें कुछ बताने ही वाली थी कि किसी गोली ने उनकी जुबान हमेशा के लिए बन्द कर दी? ये बोलकर मैंने भल्ला साहब के चेहरे की और देखा। मैं अपनी बात का उनके चेहरे पर असर देखना चाहता था। भल्ला साहब बेचैनी से अपना पहलू बदल रहे थे।

"आप कुछ रोशनी डाल सकते है इस बात पर की कोई कमला को क्यो मारेगा और क्या कमला की हत्या भी मानव की हत्या की सच्चाई को छुपाने के लिए की गई? मैंने बिना रुके भल्ला साहब पर अपने सवाल दाग दिए।

"आपकी बातो से तो लग रहा है कि हमारा परिवार किसी बहुत बड़ी साजिश का शिकार हो रहा है? अब तो और भी ज्यादा जरूरी हो गया है कि हम तुरंत इस बात का पता लगाएं की इन सबके पीछे कौन है? भल्ला साहब ने खुद किसी साजिश की आशंका जाहिर करके मेरी उस सोच को परिवर्तित करने के लिए मजबूर कर दिया जिस एंगल से सोचकर मैंने ये सवाल भल्ला साहब से पूछे थे।

"अनुज साहब मैंने कल आपके बारे में जानकारी निकलवाई थी और मुझे पता लगा कि आप इन मामलों को हैंडल करने के लिए सबसे काबिल इंसान है? मेरा आपसे आग्रह है कि आप स्वयं इस सारी साजिश का पता लगाएं? सुदर्शन भल्ला ने अचानक से मुझे असमंजस में डालकर निरुत्तर कर दिया था। लेकिन सब्जबाग में अगर आपका ख़ादिम आ जाये तो उसे फिर अनुज कौन कहेगा।

"ठीक है मैं आपका ये केस हैंडल करूँगा और सारी साजिश भी आपके सामने लाकर रख दूँगा? लेकिन आपको मेरी एक बात का सच सच जवाब देना होंगा? मैंने भल्ला साहब की और देख कर बोला।

"क्या?" भल्ला साहब ने सवालिया नजर मुझ पर टिका दी।

"मानव किसका बेटा था?" मैं एक बार फिर भल्ला साहब के चेहरे के भाव पढ़ने की कोशिश करने लगा।

"लगता है कमला तुम्हे बता गयी कि मानव किसका बेटा है" भल्ला साहब के मुंह से अचानक से निकला।

"नही पता शायद मर भी चुकी हो? मैं नही जानता पिछले बीस बाइस वर्षो से वो कहाँ है? भल्ला साहब असहाय स्वर में बोले।

"क्यो सिर्फ बच्चा पैदा करने तक ही आपका उसके साथ संबंध था? उसके बाद वो जिये या मरे? उससे आपका कुछ लेना देना नही था? रागिनी जो अब तक सिर्फ हमारी बातें सुन रही थी वो इस नारी सुलभ सवाल को करने से रोक नही पाई।

"मैं उस वक़्त किसी कारणवश मजबूर था बेटी, जो मै उसके लिए कुछ भी नही कर सका" भल्ला साहब ने अपनी मजबूरी जताई।

"अच्छा आप हमें ये तो बता सकते हैं की आखिरी बार वो कहाँ रहती थी" मैंने बातचीत की बागडोर को फिर से अपने हाथों में सम्हाला।

"वो उस समय रोहतक के मॉडल टाउन एरिया में रहती थी? मानव के होने के बाद वो एकदम से गायब हो गयी थी? भल्ला साहब खोई खोई सी आवाज में बोले।

"भल्ला साहब जीवन मे कोई भी घटना बिना कारण नही घटती है? हर घटना के पीछे इंसान के अपने पुराने कर्म ही जिम्मेदार होते है? अब पता नही आपके घर मे घट रही घटनाओं के पीछे किसके कर्म जिम्मेदार है ये तो पता लगाने से ही पता लगेगा? अभी फिलहाल इतना ही काफी है? जरुरत पड़ी तो बंदा खुद आपके सामने हाजिर हो जायेगा" ये बोलकर मैं और रागिनी दोनों वहां से उठ खड़े हुए। भल्ला साहब का अभिवादन करके हम लोग बाहर आ गए।

हम तीन दिन से लगातार भल्ला साहब की कोठी पर आ रहे थे। लेकिन उनके परिवार के बाकी सदस्य कहाँ छुपे रहते थे, यही सोचते हुए मैं रागिनी के साथ गाड़ी में बैठ चुका था। मेरा अगला कदम अब रोहतक जाकर सुदर्शन भल्ला और पुष्पा के संबंधों के बारे में पता करना था। सुदर्शन भल्ला की अपनी ही सगी साली के साथ नाजायज़ सम्बन्ध थे। एक बहन ही अपनी दूसरी बहन का घर उजाड़ने पर क्यो तुली थी? इसकी भी जानकारी वहां जाकर जुटानी थी।

"चलो रोहतक चलते है वहा तुम्हे एक परांठा खिलाऊँगा जिसकी कीमत 350 रुपये है? मैंने रागिनी को उस फेमस पराठे के बारे में बताया।

"क्या 350 रु में तो मैं 70 पराठे बना दूं? रागिनी ने अचंभित स्वर में कहा।

"अरे यार मैं सच बोल रहा हूँ? तुम चलोगी तो तुम खुद देख लेना? वो दुकानदार बोलता है कि जो शख्स उसके दो पराठे एक साथ खा लेगा उसे वो पूरी उम्र अपनी दुकान पर फ्री परांठे खिलायेगा!" मैंने रागिनी को बताया।

"क्या? अगर ऐसी बात है तो मैं दो क्या तीन पराठे खा जाऊँगी? और उस दुकान वाले को बोलूंगी की भाई अब तुम मेरे साथ साथ मेरे बच्चो को भी पूरी उम्र फ्री में पराठे खिलाना?" ये बोलकर रागिनी खिलखिलाकर हँस पड़ी।

रागिनी की इस बात पर मुझे भी हँसी आ गई।

"अच्छा ये तो बताओ कि रोहतक अभी चले या कल सुबह सुबह निकले? क्योकि आज तो फिर रात हो जाएगी वापस आते आते? मैंने रागिनी की राय जाननी चाही।

"कल सुबह निकलते है सर? लेकिन कल सुबह का मतलब सुबह के 9 बजे तक निकल लेंगे? ऐसा न हो कि आप उठो ही दस बजे? रागिनी मेरी लेटलतीफी से अच्छी तरह परिचित थी! इसलिए उसने मुझे ताकीद किया।

"ठीक है मेरी माँ! सुबह 9 बजे आपको ये बन्दा ऑफिस के नीचे ही बिल्कुल तैयार मिलेगा" मैंने रागिनी को बोला।
इसके बाद मैंने रागनी को उसके घर पर ड्राप किया और खुद अपने घर की और निकल गया। मेरे खबरी की तरफ से अभी तक कोई खबर नही मिली थी मुझे? कुछ ही देर में मैंने अपने घर की पार्किंग में अपनी गाड़ी को लगाया और अपने फ्लैट में घुस गया।
****
अगले दिन सुबह 9 बजे रागिनी मेरे साथ मेरी गाड़ी में थी और मैं इस वक़्त रोहतक रोड पर अपनी गाड़ी को दौड़ा रहा था। रोहतक का दिल्ली से अब लगभग डेढ़ घण्टे का रास्ता रह गया था। शीला चौक पर वो पराठे वाले थे जिनके बारे में मैंने कल रागिनी को बताया था।

"पराठे जाते हुए खाओगी या वापसी में आते हुए खाओगी" मैंने रागिनी से पूछा।

"सर मैं तो आपके पराठो के चक्कर मे सुबह का नाश्ता भी करके नही आई! इसलिए सबसे पहले गाड़ी को पराठे की दुकान पर ही ले चलो" रागिनी कुछ ज्यादा ही व्यग्र थी पराठो के लिए।

मैंने बहादुरगढ़ से रोहतक पहुंचते ही गाड़ी को शीला चौक की तरफ दौड़ा दिया। कुछ ही देर के सफर में मेरी गाड़ी उस पराठे वाले कि दुकान के सामने खड़ी

थी। दुकान के बाहर ही उन बड़े बड़े पराठो की तस्वीर लगी हुई थी और उनमें कुछ फ़ोटो ऐसे लोगो की भी लगी थी जो उस पराठे वाले का चैलेन्ज जीत कर अब उम्र भर फ्री पराठो मजा ले रहे थे।मैं और रागिनी दुकान के अंदर पहुंचे और एक टेबल पर हमने कब्जा जमा लिया।
पहले मैंने एक ही पनीर पराठे का आर्डर दिया क्योकि मुझे लग रहा था कि रागिनी ज्यादा पराठे नही खा पाएगी।जब पराठा आया तो उसके साथ ढेर सारा मक्खन अचार और एक बाल्टी नुमा बर्तन भरकर दही का आया। रागिनी तो अचरज से उस पराठे के साइज को ही देखे जा रही थी।

"सर ये इतना बड़ा पराठा बनाते कैसे है?" रागिनी ने उत्सुकता से पूछा।

"क्यो तुमने क्या पराठे की रेसिपी पूछ कर दिल्ली में पराठे की दुकान खोलनी है क्या? मैंने रागिनी से मजाक किया।

"तो क्या बुराई है पराठे की दुकान खोलने में ? सोचो सर एक पराठा 350 रुपये का जी एस टी लगा कर 400 का तो बिकेगा ही? अगर दिन में हमने 20 पराठे भी रोज के बेचे तो एक दिन में 8000 की सेल? महीने में दो लाख 40 हजार? इतनी सैलरी तो आप मुझे एक साल में भी नही दोगे? जितना मैं एक महीने में कमाऊंगी? रागिनी ने पराठे खाने से पहले ही मैकडोनाल्ड की पराठे की चैन खोलने की योजना बना ली थी।

"ओये मुंगेरीलाल के हसीन सपनो से बाहर निकल? जल्दी से पराठा खत्म कर फिर अभी पुष्पा जी का पुराना मकान भी ढूढ़ना है? मैंने रागिनी को उसकी ख्वाबो की दुनिया से बाहर निकाला। उसके बाद

रागिनी और मैंने चुपचाप उन पराठो का भक्षण किया और वहां से निकल लिये। अब हमारी मंजिल थी मॉडल टाउन की गलियां।

मॉडल टाउन अब पूरी तरह से शहरी रंग में अपने को ढाल चुका था। इतने बड़े शहर में सिर्फ एक नाम के सहारे किसी को ढूढ़ना? भूसे के ढेर में सुई तलासने के समान था।लेकिन जब ओखली में सिर दे ही दिया था तो मूसलों से क्या डरना? हम किसी ऐसे बन्दे की किसी दुकान को ढूढने लगे जो यहां का कम से कम 40 वर्ष पुराना वाशिंदा हो। आख़िरखार थोड़ी देर की तलाश के बाद हमे एक किरयाना स्टोर मिल ही गया, जिस पर एक लगभग 50-55 साल के एक व्यक्ति बैठे हुए थे। मैंने उनकी दुकान पर जाकर पहले दो कोल्ड ड्रिंक की बोतल खुलवाई! फिर उसके बाद मैंने बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

" भाई साहब वर्षो पहले इस इलाके में एक पंजाबी फैमिली रहती थी। जिनके रिश्तेदार हुआ करते थे दिल्ली वाले सुदर्शन भल्ला साहब? उनके बारे में आप कुछ जानते है? मैंने उन सज्जन से सज्जनता के साथ ही पूछा।

"आप क्यो पूछ रहे हो जी उनके बारे में?" उस बन्दे ने मुझे शक्की निगाहो से देखा।

"उस परिवार में एक लड़की रहती थी जी जिसका नाम पुष्पा था? उसके बारे में पता लगाना था कि वो आजकल कहाँ पर है? मैंनें उन साहब को साफ साफ बताया।

"उस लड़की को कौन नही जानता जी यहां? जो भी यहां के पुराने लोग है जी वो तो उस परिवार की बर्बादी की उस कहानी को भूल ही नही सकते? अब वो भाई साहब कुछ रहस्यमयी अंदाज में बोल रहा

था। रागिनी भी अब कान लगाकर ध्यान से सुन रही थी।

"अपने ही जीजा के साथ चक्कर था जी उसका? और अपने जीजा से ही वो पेट से भी हो गई थी? वो साला सुदर्शन भल्ला आज होगा जी अरबपति? पहले तो अपनी ससुराल के टूकडो पर ही पलता था जी? कोई खानदानी रईस नही है जी सुदर्शन भल्ला? सब अपने ससुराल के माल पर बना है आज वो जो कुछ भी है? ये किरयाने वाले भाई साहब तो बड़े काम के आदमी लग रहे थे मुझे। मैंने दो कोल्ड ड्रिंक का और आर्डर दिया।

"फिर जब पुष्पा प्रेग्नेंट हो गयी तो उसके बाद क्या हुआ?" मेरे मन मे भी अब उत्सुकता जाग रही थी सब कुछ जानने की।

"बहुत बुरा हुआ जी? एक गलत कदम ने एक हँसता खेलता परिवार खत्म कर दिया जी" वो भाई साहब अचानक ऐसे खो गए जैसे सब कुछ किसी चलचित्र की भांति उनकी आँखों के आगे चल रहा हो।

"लोगो को तो इतना ही पता है जी की एक दिन उनके मकान में आग लग गयी जी और पुष्पा की मम्मी पापा उस आग में जल कर मर गए! उस दिन के बाद से पुष्पा को किसी ने नही देखा? कोई बोलता था वो पागल हो गई थी और पागलखाने पहुंच गई थी? कोई बोलता है जी वो भी कही पर मर खप गई जी? वो दुकान वाला अब बताते हुए उदास हो चला था।

"उसके बच्चे का क्या हुआ ? वो तो प्रेग्नेंट थी ना? मैंने फिर से पूछा।

"उसकी डिलीवरी तो तब तक हुई नही थी जब घर मे आग लगी थी? जो उसका हुआ होगा? वही उसके बच्चे का हुआ होगा? उस दुकानदार ने गहरी सोच में डूबककर कहा।

"बहुत बहुत धन्यवाद आपका भाई साहब! आपने इतना कुछ बताया हमें! आपका ये एहसान हम हमेशा याद रखेंगे" ये बोलकर और कोल्डड्रिंक का बिल चुका कर हम उस दुकान से चल दिये।
अभी भी बहुत सारे सवाल मेरे दिमाग में घूम रहे थे? जो कि सुदर्शन भल्ला को ही कठघरे में खड़ा कर रहे थे। मैंने अपनी गाड़ी को अब वापस दिल्ली की और घुमा दिया।

****

रोहतक से वापस आने के बाद एक पॉइंट तो हमारे दिमाग मे साफ साफ क्लियर हो गया था, कि सुदर्शन भल्ला ने जो आज एम्पायर खड़ा किया है और जो दौलत का अंबार लगाया है उसके नीचे न जाने कितने पाप किये गए है? सुदर्शन भल्ला की साली पुष्पा अभी भी एक पहेली बनी हुई थी।

उनके घर मे आग लग जाने के बाद और उस आग में उसके माँ बाप के मर जाने के बाद उस बेचारी का क्या हुआ? ये कोई भी नही जानता था?

हम तीन दिन से लगातार सुदर्शन भल्ला की कोठी पर जा रहे थे, लेकिन अभी तक हमें भल्ला परिवार के किसी भी सदस्य के दर्शन नही हुए थे? सिवाय अखिल भल्ला के? गुलशन भल्ला की अभी तक हमने शक्ल भी नही देखी थी? मानव की दोनों बहनें उसकी भाभियां सुदर्शन भल्ला की धर्मपत्नी न जाने कोठी के कौन से कौने में बैठे थे कि हमें कभी नजर ही नही आई।

"अच्छा तो आप मानव भैया के कातिल को पकड़ेंगे ? उस महिला ने अपनी भवें सिकोड़ते हुए कहा।

"इरादा तो बंदे का कुछ कुछ ऐसा ही है? अगर आप मना करोगी तो नही पकड़ेंगे ? मैंने बात को आगे बढ़ाने के लिए उन मोहतरमा को अटपटा सा जवाब दिया।

"मैं क्यो मना करुँगी ? मेरी बात सुनकर वो मोहतरमा कुछ हड़बड़ा गई थी।

"आप ने अपना परिचय नही दिया ? कि आप कौन हो ? जो हमसे इतने सवाल पूछ रही हो ? मैंने बात को अब घुमाना चाहा।

"मेरा नाम कंचन है और मैं आपके अखिल सर की वाइफ हूँ! अब तो मेरे कुछ पूछने पर आपको कोई ऐतराज नही होगा।

"जी बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर ? आप इस घर की पहली महिला है जिनसे हमारी मुलाकात हुई है ? मैने कंचन जी को बोला।

"अच्छा तो बताओ मानव भैया के कातिल को कैसे पकड़ोगे ? कंचन को मानव के कातिल को पकड़ने में बहुत इंटरेस्ट लग रहा था।

"जी पकड़ तो जल्दी ही लेगें ? अगर आप थोड़ी हेल्प कर देगी तो ज्यादा जल्दी पकड़ लेगें ? मैंने आशापूर्ण नजरो से कंचन की नीली और नशीली आँखों मे झांक कर बोला।

"मैं आपकी कैसे हेल्प कर सकती हूँ? कंचन के चेहरे पर फिर से सवाल उभर आए थे ?

"आप मेरा ये विजिटिंग कार्ड रखिये ? यहां हमारा बात करना ठीक नही है ? आप जब भी फ्री हो आप

एक बड़े से पंडाल में लोगो की भारी भीड़ उमड़ी हुई थी। उठाला की रस्म चल रही थी। हम दोनों भीड़ में आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे थे। थोड़ी सी मशक्कत के बाद हम भीड़ में जगह बनाते हुए आगे तक पहुंच गए, लेकिन आगे सुरक्षा कर्मियो ने हमें आगे बढ़ने से रोक दिया। लेकिन हम वहां तक पहुंच चुके थे कि भल्ला परिवार के समस्त सदस्यों को देख सके।

तभी अखिल भल्ला वहां से उठकर पंडाल से बाहर की और जाने लगा! उसके साथ साथ कुछ रिश्तेदार भी थे। मैं भी अखिल के पीछे लपका और रागिनी को तो अभी मेरा अनुसरण करना ही था।सामने से आते हुए अखिल की नजर भी हम पर पड़ चुकी थी। उसने इशारे से हमें वही रुकने का इशारा किया। थोड़ी देर बाद एक आदमी हमें वहां से कोठी के अंदर की और ले जाने लगा। कुछ ही पलों के बाद मैं और रागिनी एक बेहद सुस्सजित कमरे के आरामदायक सोफे पर विराजमान थे।

तभी कमरे में एक महिला ने प्रवेश किया। उसने हमारी और एक उड़ती नजर डाली।

"जी आप कौन? उसने सवालिया निगाहो से हमारी और देखते हुए पूछा।

"जी मैं अनुज और ये रागिनी है! हमें अखिल सर ने किसी काम से बुलाया है और यहां बैठने को बोला है! मैंने बड़े अदब से उस महिला को जवाब दिया।

"किस काम से बुलाया है आपको? उनकी नजरो में अभी भी कुछ प्रश्न लहरा रहे थे?

"जी हम डिटेक्टिव है और मानव के मर्डर के सिलसिले में हमें बात करने के लिए यहाँ बुलाया है? मैंने उनको साफ साफ बताया।

मुझे कॉल कर सकती है? मैं फिर आपको बताऊंगा की आप कैसे इस नाचीज़ की मदद कर सकती हो? मैंने कंचन से कहा।

कंचन ने मेरा कार्ड तत्काल ले लिया। उसके बाद उसने मेरी और देखकर एक स्माइल पास की। रागिनी अभी तक चुपचाप हमारी बातो को सुन रही थी।

"आपको एक कॉम्पलिमेंट दू अगर आप बुरा न माने तो? मैंने अपनी आदत के अनुसार कहा और ये भूल गया कि रागिनी मेरे पास ही खड़ी है।

"आपकी आंखें बहुत खूबसूरत है! ये मुझे किसी की याद दिलाती है? मैंने कंचन पर बलिहारी स्वर में बोला।

"जी किसकी याद दिलाती है? अब कंचन को भी मेरी बातों में मजा आने लगा था।

"जी पुराने जमाने के फिल्मस्टार राजकपूर साहब की? उनकी आंखें भी आपकी आंखों की तरह ही नीली स्वप्निली और झील सी गहरी थी" मैंने राजकपूर साहब की आड़ में कंचन कि आँखों की बेशुमार तारीफ़ कर दी।लेकिन मेरा ये दांव उल्टा पड़ गया। अपनी इतनी तारीफ को कंचन सहन नही कर पाई और वो हल्की सी स्माइल के साथ तेज तेज कदमो से कमरे से बाहर निकल गई।

कंचन के कमरे से बाहर जाते ही मैंने दुर्गा रूपधारी रागिनी की और देखा। वो कहर बरपाती नजरो से मुझे ही घूर रही थी। मैने एक खिसयानी सी हँसी के साथ उसकी और देखा। लेकिन तभी किसी के कदमो की आहट ने मुझे कुछ भी बोलने से रोक दिया।

मैंने देखा कि अखिल कमरे में प्रवेश कर चुके थे।

"सॉरी अनुज जी! आपको इंतजार करवाया? क्या करे आज घर मे काम ही बहुत ज्यादा है? अखिल ने देर से आने के लिए खेद प्रकट करते हुए कहा।

"मैं समझ सकता हूँ सर? इतने बिजि होने के बाद भी आपने हमारे लिए समय निकाला ? इसके लिए तो हमें आपका शुक्रगुजार होना चाहिए? मैंने भी अपने शब्दों में जलेबी की चाशनी और थोड़ा सा देशी घी घोलते हुए कहा।

"आप कहिए कोई प्रोग्रेस हुई इस केस में? अखिल ने अब फॉर्मेलिटीज से बाहर आते हुए सीधा पूछा।

"जब तक कत्ल का उद्देश्य समझ मे नही आये तब तक किसी भी केस में कोई तरक्की सम्भव नही होती सर" मैंने अखिल की सच्चाई बताई।

"मानव को मारने का उद्देश्य तो मैं भी नही समझ पा रहा हूँ? जबसे मानव के साथ ये हादसा हुआ है तब से मैं भी यही सोच रहा हूँ? अखिल ने भी मेरी हां में हां मिलाई।

"आप कुछ बता सकते है कि आपके परिवार से किसी की कोई दुश्मनी या कोई पारिवारिक एंगल जो मानव को कत्ल की और ले गया हो? मैंने अखिल से जानना चाहा।

"अनुज जी बिज़नेस में दुश्मनी नही कॉम्पटीशन होता है? हमारे भी बहुत सारे कॉम्पटीटर है? लेकिन कोई ऐसे किसी को मारकर तो किसी का बिज़नेस लॉस नही कर सकता?" मानव ने बात सही बोली थी।

"हर कत्ल के पिछे सिर्फ तीन कारण होते है सर? जर जोरू और जमीन? दुश्मनी के लिए आप मना कर रहे हो? फिर या तो मानव किसी की प्रेमलीला का शिकार होकर मारा गया या फिर किसी ने सम्पति के

लिए उसे मार डाला? ये बोलकर मैंने अपनी नज़रे अखिल के चेहरे पर जमा दी।

"सम्पति का तो अभी हम लोगो के बीच में किसी किस्म का कोई झगड़ा नही था? क्योकि जब तक पापा बैठे है तो सम्पति का बंटवारा हो नही सकता? हां मैं किसी लव स्टोरी का एंगल मान सकता हूँ? अखिल ने एक चौकाने वाली बात बोली।

"आप जानते है ऐसे किसी एंगल को? मैंने उम्मीद भरी नजरों से अखिल को देखा।

"हां लडकिया तो उसके ऊपर भँवरों की तरह मंडराती थी? और उसने भी कितनी ही कलियों का रसपान करके उनका दिल तोड़ा होगा वो शायद खुद भी नही जानता होंगा? अखिल ने मानव के एक अलग ही पहलू से मेरा परिचय करवाया।

"ऐसी किसी लड़की के बारे में बताइये? ताकि मैं इस केस की तहकीकात में कुछ आगे बढ़ सकूँ? मैंने अब किसी लव एंगल के बारे में भी सोचना शुरू कर दिया था।

"हा ऐसी एक लड़की के बारे में तो मैं भी बता सकता हूँ आपको? निकिता नाम है उसका? एक रिटायर्ड कर्नल की बेटी है? उसका और मानव का बहुत समय तक अफेयर चला था? फिर पता नही किस बात पर वो दोनों अलग हो गए? ये तो अब निकिता ही बता सकती है? अखिल ने किसी निकिता नाम की लड़की के बारे में जानकारी दी।

"ये मोहतरमा कहाँ पाई जाती है? मैने निकिता के बारे में और जानकारी जुटानी चाही?

"किसी बार रेस्टोरेंट या कोई फाइव स्टार होटल ऐसी तितलियों की मनपसंद जगह होती है? अखिल को

भी शायद काफी जाती तजुर्बा था लड़कियो के बारे में ?

"मानव की मनपसंद जगह कौन सी थी ? जाहिर सी बात है जहां मानव जाता होंगा वही उसकी चाहने वाली भी पहुंचती होगी ?

"मानव को दो जगह ही सबसे ज्यादा पसंद थी हयात और शंगरीला ! वो वही ज्यादा जाता था ! शायद वहां से कोई जानकारी मिल जाये आपको ? अखिल ने मुझे इस अँधे केस में आगे बढ़ने की राह दिखाई।

"इसके अलावा एक फैमिली एंगल भी मेरे सामने आया है ? मुझे पता लगा है कि मानव आपका सगा भाई नही था ? मैंने अपना आखिरी तीर चला दिया था ? अब उस तीर से अखिल बचता या घायल होता ? ये जानने के लिए मैंने एक बार फिर अपनी नजर अखिल के चेहरे पर जमा दी।

"हां ये बात तो सभी जानते है की मानव हमारा सगा भाई नही है वो हमारी मौसी का बेटा है ? मेरी माँ की सगी बहन का बेटा है वो ? अखिल ने बिना किसी हिचकिचाहट के जवाब दिया।

"आपकी वो मौसी अब कहाँ है ? इस बारे में कुछ बता सकते है हमें ? मैंने अखिल से जानना चाहा।

"मुझे तो सिर्फ इतना पता है कि मौसी मानव को जन्म देकर मर गई थी ? उसके बाद पापा और मम्मी मानव को घर ले आये और उसकी परवरिश भी अपने सगे बेटो जैसी की है बल्कि उससे बढ़कर की है ? शायद अखिल से और हो सकता है फैमिली के अन्य सदस्यों से सुदर्शन भल्ला और पुष्पा की सच्चाई छुपाने के लिये बच्चो को कुछ न बताया गया हो।

"कभी कभी जब उस दुनिया मे जाने वाले का दिल नही लगता है तो वो लौट कर वापस इसी दुनिया मे आ जाते है? अखिल जी!" मुझे खुद समझ मे नही आया कि मैंने क्या बोला है। लेकिन ये बोलकर बन्दा वहां से निकल लिया था। और अखिल आंख फाड़े सिर्फ हमें जाते हुए देखता रहा।
****

"तुम्हे क्या लगता है अखिल ने सभी कुछ सच सच बोला है? मैंने अब रागिनी की परीक्षा लेनी चाही। हम दोनों सुदर्शन भल्ला की कोठी से बहुत दूर आ चुके थे।इस वक़्त हम स्थानीय थाने की और जा रहे थे, जहाँ हमें अब अम्मा के कत्ल के केस के सिलसिले में इंस्पेक्टर गौतम से मिलना था।

"मुझे ना जाने क्यों ऐसा लग रहा है कि अखिल हमारा ध्यान कही और भटकाना चाहता है? रागिनी मानो किसी सोच के समुंदर में डूबकर बोल रही हो।

"तुम्हे ऐसा क्यों लगा? मैंने मुस्करा कर उसकी और देखा।

"उसने अपने भाई गुलशन के बारे में लूज़ बात बोलकर अपने इरादों के बारे में जतला दिया? रागिनी ने सही में साबित कर दिया कि वो आने वाले समय में एक काबिल जासूस जरूर बनेगी।

"ह्म्म्म तुमने बिल्कुल सही सोचा? जासूसी का पहला उसूल है की जो तुम्हे सामने से दिखाया जा रहा है? उसपर कभी यकीन मत करो? क्योकि सच्चाई उसके बिल्कुल उलट होती है" मैं खुद को जासूसी दुनिया का कोई धुरन्धर या तीसमारखाँ समझ कर रागिनी को समझा रहा था। अपनी सोच पर मैं मन ही मन खुद ही हँस पड़ा।

"ठीक है गुरुदेव? आपका दिया हुआ ज्ञान ये बालिका कभी नही भूलेगी" रागिनी ने ऐसे नाटकीय अंदाज में बोला कि मेरी भी हँसी छूट गयी।

"निकिता के बारे में जो कुछ अखिल ने बताया, क्या वो सच होगा?

"सच या झूठ तो अब निकिता से मिलकर ही पता चलेगा सर? लेकिन अखिल ने निकिता के बारे में बता कर हमारे लिए तहकीकात का एक नया दरवाजा तो खोल ही दिया।

"ठीक है अभी यहां थाने से निकलने के बाद हमें भल्ला साहब के ट्रेवल एजेंट से भी आज ही मिलकर पता लगाना होगा की मानव भरूच में कैसे पहुंचा?

"सारे काम आज ही करने है? टाइम देख रहे हो क्या हो रहा है? रागिनी ने मेरी और देखकर बोला।

"मैडम मैं कभी घड़ी देखकर काम नही करता? जो भी काम दिमाग मे आ रहे है वो सभी काम आज ही खत्म करने है? मैंने रागिनी को फिर से उपदेश दिया।

"ठीक है गुरुदेव? जैसा आपका हुकुम? हम तो आपके हुकुम के ताबेदार है हुजूर?" रागिनी ने फिर से नाटकीय अंदाज में कहा, लेकिन इस बार मुझे उसकी हरकत पर हँसी नही आई? क्योकि मुझे पता था की वो मुझ पर तंज कस रही है।

अभी रागिनी की नाटकबाजी चालू ही थी कि हम थाने के सामने पहुंच चुके थे। मैंने एक नजर थाने पर डाली और अपनी गाड़ी को सीधा थाने के अंदर घुसा दिया।

हमनें थाने के स्वागत कक्ष में जाकर इंस्पेक्टर गौतम के कमरे के बारे में पूछा। स्वागत कक्ष में बैठे उस पुलिसिये ने उनके रूम के बारे में बताया।

मैं और रागिनी उस पुलिसिये के बताये रूम में पहुंचे! सामने ही इंस्पेक्टर गौतम किसी फ़ाइल में बड़ी तन्मयता से खोए हुए थे।
" जनाब अंदर आने की इजाजत मिलेगी क्या? मैंने गौतम साहब का ध्यान अपनी और करने की इच्छा से बोला।

गौतम साहब ने मेरी और देखा! मुझ पर नजर पड़ते ही उनके चेहरे की मस्कान 6" चौड़ी हो गयी।

" आओ आओ जासूस महोदय? मैं आपको ही याद कर रहा था? अगर आज आप नही आते तो घर से उठवा कर मंगवाना पड़ता आपको? गौतम साहब अजीबो गरीब तरीके से हमसे बोले?

" क्यो जनाब मुझ से क्या गलती हो गयी जो मुझे घर से उठवाने की नौबत आ गई? मैंने गौतम साहब से पूछा।

" उन अम्मा के कत्ल का शक तुम दोनों पर है? हमारी अब तक कि जांच में तुम्हारे सिवाय ऐसा कोई शख्स हमारी नजर में नही आ रहा है जो उस वक़्त उन अम्मा के आसपास भी फटका हो? इंस्पेक्टर गौतम ने मेरी आंखों में आंख डालकर कहा।

" सिर्फ अम्मा के पास उस समय हम थे तो आप कूद कर इस नतीजे पर पहुंच गए कि कत्ल हमने किया है? आप कत्ल के केस की इन्वेस्टीगेशन कर रहे है या किसी जेब काटने की केस की कर रहे है? मेरी बात को सुनकर गौतम साहब तिलमिला कर रह गए?

"अपने आपको बहुत बड़े जासूस समझते हो? अब मेरे शिकंजे से बचकर दिखाओ? एक बार पेपर बना कर जेल भेज दिया न तुमको तो 3 महीने से पहले जमानत पर भी सुनवाई नही होगी जासूस साहब? और साथ मे तुम्हारी ये असिस्टेंट भी अंदर जायेगी? गौतम के स्वर में उसकी तिलमिलाहट साफ नजर आ रही थी?

"किस जुर्म में ? जो हमने किया ही नही? उस झूठे केस में हमें फ़साओगे? इस बार रागिनी ने अपना मुंह खोला।

"चाहे तुमने किया हो या नही किया हो? मैं कोर्ट में साबित कर दूँगा की कत्ल तुम दोनों ने ही किया हैं? गौतम साहब को पता नही हमसे किस बात की चिढ़ थी कि वो हमे झूठे केस में भी फसाने को तैयार थे।

"क्या बोला सर अभी आपने? एक बार दोबारा बोलोगे? की हमने चाहे कुछ किया हो या नही किया हो लेकिन आप हमे इस केस में फसा कर ही रहोगे? रागिनी अब अपने शब्द गौतम साहब के मुंह मे डाल रही थी।

"तुम अभी पुलिसिया हथकंडों को जानते नही हो? पुलिस की मार के आगे तो भूत भी नाचते है? तुम खुद ही बोलोगे की अम्मा को तुमने ही मारा है? और ज्यादा बोलोगे तो इस इलाके के जितने भी मर्डर केस है उनमे से दो तीन और तुम्हारे माथे मढ़ दूँगा? इंस्पेक्टर गौतम अपनी ही रौ में बोले चला जा रहा था।

"आप तो बहुत काबिल पुलिस अफसर हो गौतम साहब? मेरे ख्याल से किसी न किसी को हर केस में पकड़ कर अपने केस सुलझा लेते होंगे आप? इस

"चलो सर ? साहब ने हुकुम दिया है कि आपको लॉकअप में बन्द करने का है? उस हवलदार ने मुझे टोका।

"तुम जानते हो मैं अभी किससे बात कर रहा था? मैंने उस पुलिसिये को बोला।

"नही मुझे क्या पता? आप किससे बात कर रहे थे? हवलदार ने मुझे अनभिज्ञता जताई।

"आपके डीसीपी रावत साहब से बात कर रहा था? अभी वो यही आ रहे है? उनके आने के बाद मुझे जिस मजी लॉकअप में डाल देना? तब तक थोड़ी शांति रखो? मैंने खीज भरे स्वर में उस पुलिसिये को डीसीपी साहब के नाम की हूल दी। मेरी हूल काम कर गई और वो चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया। शायद इंस्पेक्टर गौतम को डीसीपी साहब के आने की खबर देने गया हो।

कुछ देर के इंतज़ार के बाद डीसीपी रावत साहब ने थाने में अपने कदम रखे। उनके आते ही पूरे थाने में हड़कंप मच गया ? तभी एक दूसरा हवलदार मुझे बुलाने के लिए गौतम साहब के कमरे में आया।

"चलिए सर जी! आपको डीसीपी साहब ने बुलाया है? उस हवलदार के स्वर में इस समय शहद टपक रहा था।

मैं और रागिनी उसकी बात का जवाब दिए बगैर ही उसके पीछे पीछे चल दिये। एक दूसरे कमरे में जाकर देखा तो इंस्पेक्टर गौतम के चेहरे पर हवाइयां उड़ी हुई थी और डीसीपी साहब खा जाने वाली नजरो से उसे घूर रहे थे।

"बताओ मुझे ये किन सा तरीका है किसी कत्ल के केस की तफ्तीश करने का? यही ट्रेनिंग मिली

" आपको तो पता होगा मशहूर उधोगपति सुदर्शन भल्ला के बेटे मानव भल्ला का और उनकी नौकरानी का कत्ल हो गया है ? मैंने ये बोलकर अपनी वाणी को विराम दिया।

" हां और उनकी नौकरानी की हत्या के केस की जांच चल रही है ? आपका क्या इंटरेस्ट है अनुज इस केस में ? रावत साहब को पता था कि मैं जासूसी के धन्धे में हूँ।

" उसी नौकरानी के कत्ल के जुर्म में आपका इंस्पेक्टर कृष्णकांत गौतम बिना किसी सबूत के मुझे और मेरी असिस्टेन्ट को अरेस्ट कर रहा है ? मैंने अब रावत साहब को असली बात से अवगत कराया।

" ऐसा कैसे हो सकता है ? क्या वो ऑफिसर आपके बारे में नही जानता ? रावत साहब के लहजे में हैरानी झलक रही थी।

" सर मैंने उन्हें बताया था कि मैं जासूसी के धंधे में हूँ ? और सुदर्शन भल्ला ने मुझे अपने बेटे के कातिल को पकड़ने का काम सौपा है ! इसी सिलसिले में मैं उनकी नौकरानी से बातचीत कर रहा था और वो मुझे कुछ इस कत्ल के बारे में बताने ही वाली थी कि किसी ने उसे गोली मार दी ? लेकिन गौतम साहब तो बेसिरपैर की दलील देकर सिर्फ मुझे कातिल साबित करने की कोशिश कर रहे है ?

" ठीक है आप वही रुको अनुज ? मैं थोड़ी देर में अभी वही पहुंचता हूँ ? जरा अपने ऑफीसर का भी नजरिया जान लूं ? आप बेफिक्र रहो आपके साथ कोई भी नाइंसाफी नही होगी ? ये बोलकर रावत साहब ने फ़ोन रख दिया ?

है क्या आपको? की किसी भी निर्दोष नागरिक को इतने जघन्य केस में बिना किसी सबूत और तथ्यों के फसाने की धमकी दो?

"सर हमने तो इन्हें पूछताछ के लिए बुलाया था? और ये जांच में सहयोग नही कर रहे थे तब मैंने कहा था कि तुम्हे कोर्ट में पेश करके तुमसे पूछताछ की परमिशन लेंगे? उसके बाद तुम खुद सच सच बताओगे? गौतम साहब अब बौखलाहट में कुछ भी अनाप सनाप कहानी बना कर सुना रहे थे।

"तुम जानते हो गौतम ये बात तुम किस शख्स के बारे में बोल रहे हो? जिसका ट्रैक रिकॉर्ड हमेशा पुलिस की मदद करने का रहा है? जिसने पता नही कितने ही कातिलों को अपनी जान पर खेल कर उसको पकड़ने का सेहरा हमारे ही किसी न किसी पुलिस के ऑफिसर के सर पर बांधा है? तुम उसके बारे में बोल रहे हो कि वो जांच में सहयोग नही कर रहा है? डीसीपी साहब मेरी तरफ से इतनी जबरदस्त बैटिंग कर रहे थे कि मुझे कुछ बोलने की आवश्यकता ही नही पड़ रही थी।

"सॉरी सर मैं इनके बारे में इतना कुछ जानता नही था? फ्यूचर में ऐसी गलती नही होगी? गौतम बेबसी भरे स्वर में बोला।

"तुम सॉरी बोलकर बच नही पाओगे गौतम? और अगर सॉरी बोलनी ही है तो अनुज साहब से बोलो? जिनकी तुमने इतनी देर हरासमेंट की है कि मुझे खुद यहां उठकर आना पड़ा? रावत साहब बुरी तरह गौतम को लताड़ रहे थे और गौतम के कांटो तो खून नहीं था। उसने लाचारी भरी नजरों से आखिर में मेरी और ही देखा।

"सॉरी अनुज जी ? मुझे आपके बारे में कुछ भी पता नही था ? गौतम याचना भरे स्वर में बोला।

"आप अभी भी गलत ट्रैक पर चल रहे हो गौतम साहब ? मतलब अगर मेरी डीसीपी साहब से जानकारी नही होती तो आप तो मुझे इस केस में फंसाने का सारा बंदोबस्त कर ही चुके थे ? सिर्फ मेरे बारे में ही मत सोचो ? ये सोचो कि किसी भी आम नागरिक के साथ आप इस तरह का व्यवहार कैसे कर सकते है ? मतलब जिन लोगों की कही कोई पहुंच नही है उसे तो आप अपने सिस्टम के जरिये लोहे के चने चबवा दोंगे ? मैंने भी कुपित अंदाज में गौतम को खरी खरी सुना ही दी।

"सॉरी ! आगे से ऐसा कभी किसी के भी साथ नही करूँगा ? मैंने तो आज तक किसी के साथ भी ऐसा नही किया है ? पता नही आपके साथ ही ऐसा ? कैसे कर बैठा ? गौतम मिमयाये स्वर में अब बोल रहा था।

डीसीपी रावत ने मेरी और देखा ! मैंने आंखों ही आँखों मे उन्हें बख्स देने का इशारा किया ? वैसे भी आपके खादिम के धंधे में पुलिस वाले से दुश्मनी के लिए कही कोई जगह नही थी ? लेकिन अगर बिना वजह सर पर आ पड़े तो अपना बचाव हर कोई करता है। वैसे भी अभी सुदर्शन भल्ला के परिवार का केस बहुत लंबा चलने की संभावना थी और इस थाने से मेरा वास्ता कई बार पड़ने वाला था।

"ठीक है अनुज साहब ? अपने ऑफिसर की गलती के लिए मैं आपकी सॉरी बोलता हूँ ? और ये भी उम्मीद करता हूँ कि ये भविष्य में ऐसी गलती किसी के भी साथ नही करेगे ? आखिर मैं डीसीपी साहब ने अपना बड़प्पन दिखाया।

"नही सर आप क्यो सॉरी बोल रहे है बल्कि मुझे आपको धन्यवाद बोलना चाहिए जो इस अदने से इंसान के लिए आप मेरी एक फरियाद पर यहां तक चल कर आये! मैं डीसीपी साहब का दिल से शुक्रगुजार था।

"नही अनुज जी? आप हमेशा कानून की मदद करते है? फिर हम आपकी मदद करने से कैसे पीछे हट सकते है!" रावत।साहब ने मुझे बोला।

"चलो गौतम तुम्हारी सजा ये है कि अब सबके लिए डिनर का इंतजाम यही करो? देखो ये बच्ची कबं से हलकान खड़ी है? डीसीपी साहब ने रागिनी की और देखकर बोला।रावत साहब के द्वारा अपने बारे में बात सुनकर रागिनी अचानक से शर्मा गई।
उधर गौतम की भी जान में जान आई और वो खुशी खुशी सभी के लिए डिनर की व्यवस्था करने में लग गया।
****

थाने में डिनर करके मैं और रागिनी घर के लिए रवाना हो गए।भल्ला साहब के ट्रेवल एजेंट से मिलने का प्रोग्राम अब कल के लिए फिक्स हुआ था, क्योकि आज का पूरा समय थाने में खराब हो चुका था। मैंने रागिनी को उसके घर पर छोड़ा और फिर अपने आशियाने की और निकल पड़ा।
****

अगले दिन दोपहर में कोई 2 बजे हम भल्ला साहब के ट्रेवल एजेंट के यहां बैठे थे।ट्रेवल एजेंट कोई पंजाबी पुत्तर था।जिसका नाम रवींद्र बत्रा था।उसने हमारी और ऐसी घाघ नजरो से देखा मानो नजरों ही नजरों में हजम कर जाना चाहता हो।

"मुझे आपसे दो बातों का जवाब चाहिए? सबसे पहले तो ये बताओ कि मानव किस ट्रैन से मुम्बई जा रहा था? और क्या उसके किसी रिश्तेदार ने भी उसी ट्रैन की टिकट तुमसे करवाई थी? मैंने भी उसकी नजरो में नजरे डाल कर अपने सवाल को दोहराया।

"आप ये सब क्यो जानना चाहते है? और मैं अपने क्लाइंट और वो भी इतने वी आई पी क्लाइंट की कोई भी डिटेल क्यो शेयर करू? बन्दा सचमुच घाघ था?

"आपकी भल्ला साहब से बात करवा दूं? उन्होंने ही हमें आपके पास भेजा है? ये तो आप जानते ही होंगे कि जिस इंसान की तुमने टिकट बनाई थी वो अब इस दुनिया मे नही रहा? उसी के केस के सिलसिले में हमे आपसे ये जानकारी चाहिए? मैंने उस लगभग 45 वर्षीय अधेड़ उम्र के व्यक्ति विनती भरे शब्दों में कहा।

" बड़ा चंगा मुंडा था जी मानव पुत्तर? हर समय बन्दे के चेहरे पर मुस्कान खिली रहती थी? पता नही किस हरामी ने ऐसे चंगे मुण्डे की जान ले ली? अचानक से वो व्यक्ति भावुक हो उठा।

"जब आप इतना मानते थे मानव बाबू को तो ? आप ये भी दिल से चाहते होंगे की उसका हत्यारा जल्द से जल्द पकड़ा भी जाये? मैंने अब उसे और भावुक करने की सोची।

"बिल्कुल चाहता हूँ जी! दिल से चाहता हूँ! जिस भी हरामी ने उसकी जान ली है उसे फांसी होनी चाहिए? बत्रा साहब अब जोश में भी आ चुके थे।

" तो सरजी, फिर बिना ब्रेक के शुरू हो जाओ और सबसे पहले हमे उस ट्रैन की डिटेल बताओ जिससे

मानव मुम्बई जा रहा था ? मैं नही चाहता था कि अब ये शख्स भावुकता के भवँर से बाहर निकले।

"रुको जी अभी पूरा रिकॉर्ड मंगवाता हूँ ? उसके बाद आपको जो जानकारी चाहिए मिल जाएगी ? बत्रा साहब ने फिर वही से किसी निम्मो नाम की लड़की को आवाज लगाई। निम्मो ने बड़ी अदा से बत्रा साहब के केबिन में प्रवेश किया। लेकिन वहां मुझे और रागिनी को देखकर वो सम्हल गई, और तत्काल अपने चेहरे के भाव बदल कर बोली।

"जी सर"

"निम्मो वो मानव बाबू वाली फ़ाइल लेकर आ जरा ?" बत्रा साहब ने निम्मो को बोला।

"जी अभी लाई" ये बोलकर निम्मो वापस मुड़ गयी।

कुछ ही देर में निम्मो फ़ाइल के साथ वहां हाजिर थी।

मानव बाबू के लिए जो हमने आखिरी टिकट मुम्बई के लिए बुक की थी ? उसकी पूरी जानकारी इन साहब को दे" बत्रा साहब का खुद उस फ़ाइल को देखने मे कोई इंटरेस्ट नही था।

बत्रा जी का आदेश सुनते ही निम्मो तुरंत फ़ाइल खोलकर हमें मानव की जनी का पूरा ब्यौरा हमें देने लगी। निम्मो ने बताया !

मानव 22 अगस्त को राजधानी मुंबई से शाम को 4:30 बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से रवाना हुआ था और उसे अगले दिन सुबह 8 -9 बजे तक मुम्बई सेंट्रल पर उतर जाना था।

मैंने मुंबई राजधानी के पूरे रूट को तुरंत चेक किया लेकिन मुम्बई राजधानी सिर्फ बड़े स्टेशनों पर रुकती थी। गुजरात मे प्रवेश करने के बाद बड़ोदरा सूरत के

उस दिन के बाद से मेरे खबरी का कुछ भी अता पता नही था।

"अपने किसी जानकर पुलिसिये की मदद लो और उस दिन के राजधानी के सभी यात्रिओ की लिस्ट निकलवाओ? उसके बाद उस लिस्ट में से चेक करो कि उसमे कौन मानव का जानकार हो सकता है? उसके बाद ही हमे हमारी मंजिल मिलेगी सर? रागिनी ने गम्भीर होकर कहा।

"तुम तो बिल्कुल मेरी तरह ही सोच रही हो? मैंने उन्मुक्त भाव से रागिनी की प्रशंसा की।

"जब आपकी शागिर्द हूँ तो सोच भी आप जैसी ही रखनी पड़ेगी? रागिनी हाजिरजवाबी में तो माहिर थी।

"कौन पुलिसवाला इस मामले में हमारी मदद कर सकता है? मैं अभी भी इसी सोच में डूबा हुआ था।

"उस इंस्पेक्टर गौतम को ही पकड़ो? अब वो ही इस मामले में हमारी मदद करेगा। रागिनी ने बिल्कुल सही आदमी को पकड़ा था।

"क्या वो हमारी मदद करेगा? मेरे मन मे अभी भी संशय था।

" भाग कर करेगा! अपने नंबर डीसीपी साहब के पास बढ़वाने के लिए जरूर करेगा? डीसीपी साहब आपका जलवा उसे दिखा चुके है? रागिनी बात तो पते की ही कर रही थी।

" उससे पहले क्यो ना निकिता से मिला जाए? मैंने रागिनी को बोला।

" उससे मिलने की बड़ी जल्दी है आपको? आपका तो वही हाल है? जिधर देखी तवा परात, वही गुजारी सारी रात? रागिनी की बच्ची ने मुझ पर पंच मारा।

"मोहतरमा वो भी हमारी सस्पेक्ट लिस्ट में है? क्या पता उससे भी कोई काम की बात पता चल जाये? मैंने उसके पंच को इग्नोर करके बोला।

"मेरी राय तो ये कहती है कि पहले थाने चलकर हमें गौतम साहब से मिलना चाहिए! उसके बाद हमे निकिता को तलाश करना चाहिए, वैसे भी निकिता को अगर हयात या शनगरिला में ढूढ़ना है तो रात का वक़्त ही उसके लिए मुनासिब है? रागिनी ने बात सही बोली थी। पाठक बंधु ये मत समझना कि रागिनी के सामने मेरा दिमाग चलना बन्द हो जाता है? दर असल मैं बीच बीच मे ये चेक करता रहता हूँ कि रागिनी का दिमाग चल रहा या नही चल रहा है?

"जैसी आपकी इच्छा हुज़ूर? हम तो आपके आदेश के गुलाम है? ये बोलकर मैंने गाड़ी को थाने की और मोड़ दिया। जहां एक बार फिर से हमारी मुलाकात इंस्पेक्टर गौतम से होनी थी।
****

भरुच की रेलवे पुलिस चौकी !

चौकी का प्रभार नए एस आई शेखर पटेल ने संभाल लिया था। मानव मर्डर केस से जुड़ी फ़ाइल इस समय टेबल पर उनके सामने खुली पड़ी हुई थी।

मानव की पोस्टमार्टम और फोरेंसिक रिपोर्ट आ चुकी थी! जो कि इस समय उस फ़ाइल में लगी हुई थी।

"साहब आपसे कोई मिलने आया है? एक सिपाही ने आकर एस आई पटेल की तन्द्रा भंग की।

"कौन है गोहिल? पटेल ने सर उठाकर उस सिपाही से पूछा।

"मालूम नही साहब? कोई बड़े अफसर दिखते है? गोहिल नाम के उस सिपाही ने बोला।

"जब से इस शख्स की लाश यहां मिली है कोई ना कोई बड़ा अफसर यहां आ ही रहा है? भेजो उन्हें अंदर? पटेल ने गोहिल को बोला।

गोहिल कुछ ही पलों में उस शख्स के साथ फिर से पटेल के दरबार में हाजिर हो चुका था।

"मैं दीपक पारिख सीबीआई से हूँ! उस शख्स ने अपना परिचय दिया।

" जय हिन्द सर" पटेल हड़बड़ा कर कुसी छोडकर खड़ा हो गया था।

" आप आराम से बैठो पटेल साहब? आपको तो पता ही होगा कि सेंट्रल गवर्नमेंट ने इस केस को अब सीबीआई के हवाले करने का फैसला किया है? इसलिए मैं यहां घटनास्थल का मुआयना और इस केस से सम्बंधित सभी कागजात लेने आया हूँ" दीपक पारीख नाम के उन सीबीआई अफसर ने बड़ी शालीनता से पटेल को बैठने के लिए बोलते हुए कहा।

" जी मालूम है सर हमें? आप चलिए सर पहले हम आपको उस जगह का मुआयना करवा देते है, जिस जगह हमें डेडबॉडी मिली थी।

पटेल की बात सुनकर दीपक पारीख अपनी कुसी से खड़ा हो गया और पटेल के पीछे पीछे चल पड़ा।

इंस्पेक्टर गौतम हमें थाने में ही मिल गए। इस बार गौतम साहब ने गर्मजोशी से हमारा स्वागत किया। मैंने अपना उनके पास आने का आशय बताया। मेरी बात को उन्होंने गंभीरता से सुना और मुझे रेलवे से जल्द

से जल्द राजधानी मुम्बई की यात्रिओ की लिस्ट निकलवाने का आश्वासन दिया।उसके बाद हम थाने से निकल गए। अब हमारा अगला लक्ष्य निकिता को तलाश करने का था। निकिता को तलाश करना कोई दुरुह कार्य नही था। इन जगहों की ये फेमस चेहरे और नामवर लोग होते है। मैंने पहले आज हयात होटल में निकिता को तलाशने के लिए अपनी गाड़ी हयात होटल की और दौड़ा दी।

"फिर आज तो हयात में दो चार पेग मार लेना ? मैंने रागिनी को छेड़ते हुए कहा।

"किस चीज़ के पेग" रागिनी ने अंजान बनते हुए कहा।

"सोमरस के बारे में नही जानती ? मैने खिल्ली उड़ाने वाले अंदाज में उसकी और देखा।

"सौंफ़रस के बारे में तो जानते है! वो कभी कभी हम सुबह की चाय के साथ मे नास्ते में लेते है! लेकिन ये सोमरस क्या होता है? रागिनी ने फिर से मासूमियत से बोला।

"मधुशाला के बारे में सुना है? मैनें रागिनी से फिर से पूछा।

"नही सिर्फ गौशाला के बारे में सुना है? मैं समझ चुका था की रागिनी अब मेरी टांग खिंचाई कर रही है।

"अच्छा तुम गौमूत्र को तो सोमरस नही बोल रहे हो?" अचानक से रागिनी ने अपना नया ज्ञान मुझ पर उड़ेला।

"मैं दारू शारु की बात कर रहा हूँ पगली?" आख़िर में मुझे सीधा सीधा ही बोलना पड़ा।

" आप पीते हो दारू ?" रागिनी ने मेरी और आश्चर्य से देखा।

" कभी कभी शादी ब्याह में पी लेता हूँ बस ? वैसे कभी नही पीता ? मैनें अपना एक गुप्त राज रागिनी के सामने खोला।

" अभी हम होटल हयात में किसी की शादी में जा रहे है क्या ? मैं तो समझी थी कि हम निकिता को ढूढने जा रहे है ? रागिनी अभी भी मेरी टांग खिंचाई से बाज नही आ रही थी।

" नही मैं तो तुम से पूछ रहा था ? अगर तुम पीती हो तो हयात में लगा लेना दो चार पेग ? मैंने रागिनी की और एक मुस्कान उछाली।

" अच्छा मान लो मैंने पेग लगा लिए और मैं नशे में टल्ली हो गयी ? फिर आप क्या करोगे ? रागिनी मेरी फिरकी लेने के फूल मूड में थी।

" करूँगा क्या ? तुझे अपनी गाड़ी की छत पर बाँधूँगा और तुझे तुम्हारे घर पर फेंक कर आऊँगा ? मैंने अब पीछा छुड़ाने वाले अंदाज में बोला।

" क्यो ऐसा कोई ख्याल मन मे नही आया कि अकेली लड़की , नशे में टल्ली ? इसे अपने घर ही ले चलो ? रागिनी के दिमाग मे पता नही मेरी कौन सी रोमियो वाली इमेज थी।

" क्यो घर के जाकर क्या तुझसे झाड़ू पोंछा करवाना है मुझे ? इस बार मैंने पंच मारा।

" झाड़ू पोछा मारेगी मेरी जूती ? ये बताओ आप मुझे आज दारू पिलाने के लिए इतने क्यो मरे जा रहे हो ? रागिनी अचानक से बदले हुए स्वर में बोली। मैंने अभी जवाब देने के लिए मुंह खोला ही था कि मुझे हयात

Where is my Train...

होटल नजर आ गया। मैंने अपने जवाब को बाद में देने के लिए टाला और गाड़ी को हयात होटल की पार्किंग की और मोड़ दिया।
****

हम दोनों हयात के अंदर पहुंचे। हम अंदर पहुँच तो गए थे, लेकिन हमें ये समझ नही आ रहा था कि शुरुआत कहाँ से करे।

"निकिता को कैसे पहचानेंगे यहां पर? हमारे पास तो उसकी कोई फ़ोटो भी नही है? मैनें रागिनी को बोला।

"यहां तक आ गए है तो कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेंगें सर? चलो नाईट क्लब की तरफ चलो? हो सकता है वहां से कुछ पता चले? रागिनी ने अपना दिमाग सही दिशा में लगाया था।

हम नाईट क्लब की और बढ़े, लेकिन हमें दरवाजे पर ही रोक दिया गया।

"सर क्लब मेम्बरशिप का कार्ड दिखाइए" गेट पर खड़े दरबान ने बड़े अदब से हमें बोला।

"हम तो यहां पहली बार आये है और यहां किसी की तलाश में है यार? बस एक बार जाकर बाहर आ जायेंगे? मैंने उस दरबान से रिक्वेस्ट की।

"नही सर ? इस तरह यहां किसी का भी अंदर जाना मना है? आप अंदर नही जा सकते है? उस दरबान ने एक सोम्य मस्कान के साथ हमें अंदर जाने से मना किया।

"चलो_मत जाने दो? आप सिर्फ इतना बता दो की यहां कोई निकिता नाम नाम की किसी लड़की को

जानते हो ?" मैंने उस दरबान से ही निकिता के बारे में पूछ लिया।

" क्या काम है आपको उनसे ? अचानक से एक महीन सी आवाज मेरे कानों में पड़ी। मैनें आश्चर्य से दरबान की तरफ देखा।

" आपकी आवाज को क्या हुआ भाई " मैनें हैरानी से दरबान की ओर देख कर पूछा।

" उनकी आवाज को कुछ नही हुआ है ? ये मै बोल रही हूँ जरा पीछे मुड़कर देखो ? मैं तुरंत ही उस आवाज की दिशा में घूम गया। मेरे पीछे एक लगभग 25 साल की सांचे में ढली बेहद दिलकश खूबसूरत महजबीं खड़ी थी।

बन्दा कुछ लम्हो तक उस महजबीं को अपलक निहारता रहा , तभी एक जोर की कोहनी मेरी कमर से टकराई और मैं फ़ौरन अपने होश में आया।

" आपने बताया नही आप निकिता को क्यो ढूंढ रहे हो ? उस नाजनीन दिलकश हसींना ने मुझ से फिर से पूछा।

" वो तो मैं उनको ही मिलकर बताऊंगा की मुझे क्या काम है ? लेकिन पहले आप बताओ कि आप कौन हो ? मैनें उस महजबीं से ही सवाल कर दिया।

" तो फिर बता ही दीजिये की आपको क्या काम है ? क्योंकि मैं ही निकिता हूँ " आखिरकार उस हसींना ने अपना परिचय दे ही दिया।

" जी बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर ? मैनें अपना हाथ उस हसींना की तरफ बढ़ाया।

" लेकिन मुझे ये खुशी तब तक नही होगी जब तक आप मुझ से मिलने का अपना मकसद नही बता

देंगे ? निकिता ने मेरे हाथ को लगभग इग्नोर करते हुए जवाब दिया। मैनें मायूसी से अपने हाथ को वापस किया। तभी रागिनी बोल पड़ी।

" निकिता जी हमें आपसे मानव के बारे में कुछ बात करनी थी ? रागिनी सीधे सीधे मतलब की बात पर आते हुए बोली।

मैनें नोट किया कि मानव का नाम लेते ही उस खूबसूरत चेहरे की रंगत अब बदलने लगी थी।

" मानव के बारे में मुझ से क्या बात करनी है आपको ? निकिता मानव का नाम सुनते ही कुछ हड़बड़ा सी गयी थी।

" कहीं बैठकर बात करेंगे तो ज्यादा अच्छा रहेगा " मैनें बातचीत को वीराम देने की कोशिश की।

" चलिए लाउंज में चल कर बात करते है " ये बोलकर निकिता लाउंज की और मुड़ गयी और बन्दा रागिनी के साथ निकिता की मतवाली चाल का नजारा करता हुआ उसके पीछे पीछे चलने लगा। मुझे इस बात को कहने में कोई संकोच नही है कि ऊपरवाले ने जब भी अपनी मिट्टी से किसी हसींना को सांचे में ढाला है, उस मिट्टी में उसकी चाल का मतवालापन और जिस्म में नज़ाकत और मेरे जैसे छिछोरे से अदावत ? ये तीन गुण हर हसीना में डाल कर इस धरती पर भेजा है।

मैं अपनी सोच में अभी उलझा ही हुआ था कि लाउंज में एक सोफे पर निकिता और रागिनी बैठ चुके थे। मैं भी उन्ही के सामने सोफे पर बैठ गया।

" सबसे पहले तो आप ये बताइये की आप लोग है कौन ? निकिता ने हमारे कुछ पूछने से पहले ही अपना सवाल हम पर दाग दिया।

"मेरा नाम अनुज है और इनका नाम रागिनी है और हम पेशे से प्राइवेट डिटेक्टिव है" मैंने हम दोनों का परिचय निकिता को दिया।

"ओह्ह! आप मुझ से क्या पूछना चाहते है मानव के बारे में ?" निकिता ने उलझन भरी नजरों से मेरी और देखा।

" हमें पता चला है कि आप ही मानव के सबसे ज्यादा करीब थी? क्या आप बता सकती है कि मानव भल्ला का कत्ल आखिर क्यों हुआ होंगा? मैनें निकिता की और देखकर पूछा।

"ये किसने बताया आपको की मैं मानव के सबसे ज्यादा करीब थी? निकिता ने जवाब देने की बजाय मुझ से ही सवाल पूछा।

" जी उन्ही के बड़े भाई अखिल भल्ला ने आपके बारे में जानकारी दी है? मैनें निकिता को सच सच बताया।

"ओह्ह? शायद उन्हें कोई गलतफहमी हुई होगी? मैं मानव को उतना ही जानती हूँ जितना नाईट क्लब में आने वाले और लोगो को जानती हूँ? अगर मैं उसके इतने ही करीब होती तो उसकी मौत के हफ्ते भर के अंदर यहां क्लब में मस्ती करने नही आती बल्कि किसी अंधेरे कमरे में उनकी मौत का मना रही होती? निकिता के स्वर में इस बार गुस्सा झलक रहा था।

"हो सकता है कि आप सही बोल रही हो? लेकिन बिना आग के तो धुंआ नही उठता? कोई बात तो अखिल भल्ला तक पहुंची होंगी जो उन्होंने आप दोनों के बारे में ऐसी धारणा बनाई" इस बार सवाल रागिनी ने पूछा।

"हमारे बीच मे सिर्फ दोस्ती थी! जो अक्सर ऐसी जगहों पर हर किसी की हो जाती है! दोस्ती के नाते ही हम एक दो बार बाहर भी मिले है? लेकिन हमारे बीच में करीबीओ वाला कोई सम्बन्ध नही था? निकिता अभी भी अपनी बात पर कायम थी।

"ठीक है निकिता जी! आप बोल रही हो तो सच ही होगा? क्योकी आप दोनों के रिश्ते को आपसे ज्यादा कौन जान सकता है? मैंने ऊपरी मन से उसकी कही बातो को स्वीकार किया ? हालांकि मुझे पता था कि ये हसीन चेहरा इस समय झुठ के सिवाय कुछ नही बोल रहा है। लेकिन अभी हमारे पास उसको झूठा साबित करने के लिए कोई सबूत नही थे।

मैं और रागिनी अब खड़े हो चुके थे।

"ओ के निकिता जी अभी चलते है? भविष्य में आपसे कांटेक्ट कर सके इसके लिए आपका नंबर चाहिए था अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो? मैंने निकिता की तरफ मुस्करा कर देखते हुए बोला।

"नंबर तो मैं आपको दे दूँगी? लेकिन आशा करती हूँ कि आप बेवजह मुझे परेशान नही करेंगे? निकिता ने अपना नंबर देने के लिए एक शर्त सी बातो बातो में रख दी।

"अनुज हसीन लड़कियो की परेशानी को दूर करने के लिए जाना जाता है! किसी हसींना को परेशान करने के लिए नही?
मैंने अपनी आदत के अनुसार अपनी पंच लाइन दे मारी।

मेरी बात सुनकर निकिता खिलखिला कर हँस पड़ी।

"इंसान दिलचस्प लगते हो? लगता है जल्दी ही आपसे दोबारा मिलना पड़ेगा" ये बोलकर इस बार

उस महजबीं ने स्वयं अपना हाथ मेरी और बढ़ाया और मैंने उसे थामने में एक सेकंड के सौवे हिस्से जितनी देर भी नही की ! मेरी इस बेताबी पर वो क़यामत एक बार फिर से खिलखिला कर हँस पड़ी। उसके बाद हमने अपने नम्बरो का आदान प्रदान किया और फिर वहां से विदा हो गए। मुझे पता था की होटल से बाहर निकलते ही रागिनी के तानों की मुझ पर बरसात होने वाली है।
****

दीपक पारिख और एस आई शेखर पटेल उस जगह पर पहुंच चुके थे, जहां से मानव भल्ला की लाश बरामद हुई थी। दीपक पारिख फोरेंसिक एक्सपर्ट द्वारा वहां बनाये गए लाश के स्कैच को घ्यान से अपनी नजरें गढ़ा कर देख रहे थे।

"लाश की पोजीशन बता रही है पटेल साहब की लाश को किसी चलती हुई ट्रैन से यहां पर धकेला गया है ? पारिख साहब ने अपनी पारखी नजरो से उस स्कैच का बारीकी से निरीक्षण करने के बाद बोला।

"ह्म्म्म सर ! मैंने भी अपनी रिपोर्ट में यही लिखा है सर ? पटेल ने सम्मान पूर्वक अपनी राय भी बताई।

"फिर तो आपने ये भी पता लगा लिया होगा कि उस रात वो इस ट्रैक से गुजरने वाली आखिरी ट्रैन कौन सी थी ? जिससे मानव भल्ला की लाश को यहां फेका गया होगा ?

"जी सर ! वो ट्रैन मुम्बई राजधानी थी सर जिससे मानव की लाश को यहां पर फेंका गया होगा ? पटेल के स्वर में अभी भी संशय था।

"फेका गया होगा नही पटेल ? उसी से फेंका गया था ? कातिल अब मेरी पहुंच से कोई ज्यादा दूर नही

है ? बहुत जल्दी मैं उसे धर दबोचूंगा ? दीपक पारिख की नजरों में अब एक अलग ही चमक आ गई थी।

"चलो पटेल साहब मैं अब चलता हूँ! अभी बहुत सारा काम बाकी है इस केस में? ये बोलकर पारिख ने शेखर पटेल से विदाई ली और वहां से रुखसत हो गया।
****

आधी रात के वक़्त सुदर्शन भल्ला के मोबाइल की रिंग घररर घररर करके बज रही थी। भल्ला साहब की नींद में अचानक से खलल पड़ गया था। उन्होंने घबरा कर फ़ोन को उठाया। वैसे भी आधी रात को अगर किसी का फ़ोन बज उठे तो लोगो के मन मे आशँका के बादल मंडराने लगते है I

"हेलो" सुदर्शन भल्ला ने घबराई हुई आवाज में बोला।

"अभी से घबरा गए भल्ला? अभी तो बस कहानी शुरू हुई है? उधर से किसी महिला के फुसफुसाने की आवाज आई।

"कौन हो तुम" भल्ला ने कांपती हुई आवाज में बोला।

"भल्ला तेरी याददाश्त बहुत कमजोर हो गयी है? सुबह उठकर भीगे हुए बादाम खाने शुरू कर दे? क्योकी जब तू तिल तिल करके मरेगा उस दिन मैं चाहती हूँ कि तुझे तेरे सारे पाप तुझे याद रहे? नही तो मरने के बाद भी तेरी आत्मा इस गम में भटकती रहेगी कि तू किस गम में मारा गया" वो महिला अभी भी फुसफुसा कर बात कर रही थी।

"तू जो कोई भी हो सामने आकर बात कर न ? तू आख़िर चाहती क्या है ? भल्ला का दिमाग अभी भी चक्करघिन्नी बना हुआ था।

" सामने भी आऊँगी भल्ला ? क्योकि तुझे अपनी ही आंखों के सामने तड़प तड़प कर मरते हुए देखना ही तो अब मेरी जिंदगी की आखिरी इच्छा रह गई है " वो अजनबी महिला सिर्फ अपनी धमकियों और बातो से ही भल्ला साहब का पिछवाड़ा फाड़ने में लगी हुई थी।

"तेरी मेरी दुश्मनी क्या है ये तो बता दे कम से कम ? सुदर्शन भल्ला याचना भरे स्वर में बोला।

"जो इंसान अपने दुश्मन पैदा करके उन्हें भूल जाए ? वो समझ लो इस दुनिया का सबसे बेवकूफ इंसान है ?" उस अजनबी महिला की फुसफुसाहट अभी तक जारी थी।

"मानव और कमला को तूने ही मारा है क्या ? भल्ला साहब ने उस महिला से पूछा।

"भल्ला अभी तो मौत का ये सफर शुरू हुआ है ? और इस सफर में जो भी मिलेगा उसी को गले से लगाऊँगी और जिस जिसको गले से लगाऊँगी वो समझ लेना कि अपनी मौत से गले मिल रहा है " वो महिला अभी तक भल्ला का पिछवाड़ा फाड़ने में लगी हुई थी। आखिरकार भल्ला ने झल्ला कर अपना मोबाइल रख दिया। अचानक से भल्ला साहब की नजर अपने बराबर में सोई हुई अपनी पत्नी पर पड़ी लेकिन वो बिस्तर पर नही थी। भल्ला साहब ने राहत की सांस ली कि चलो जो भी हुआ उसे उसकी पत्नी ने नही सुना। लेकिन इतनी रात को ये गई कहाँ ? ये सोचकर ही भल्ला ने अपने बिस्तर से नीचे कदम रखा।लेकिन बेध्यानी में भल्ला का पांव किसी

"ये एक के बाद एक मुसीबत हमारे घर मे ही क्यो आ रही है, हे भगवान मम्मी पापा की रक्षा करना" कंचन ने हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना की।

तभी कमरे में सुदर्शन भल्ला की दोनों लड़कियो ने भी परेशानी भरी हालत में प्रवेश किया।

"क्या हुआ मम्मी पापा को" बड़ी लड़की जिसका नाम चंचल था घबराए हुए स्वर में बोली।

"भैया बताओ न क्या हुआ मम्मी पापा को?" इस बार छोटी लड़की जिसका नाम ज्योति था ने व्यग्र स्वर में अखिल से पूछा।

"ज्योति अभी तो हमें भी कुछ नही पता? डॉक्टर को आने दो ? फिर मम्मी पापा ही होश में आकर बताएंगे कि क्या हुआ था ? अखिल ने ज्योति को समझाया।

तभी भल्ला परिवार के फैमिली डॉक्टर विजय मल्होत्रा ने कमरे में प्रवेश किया।

डॉक्टर के आने से पहले सभी ने मिलकर अपने मम्मी पापा को बिस्तर पर लेटा दिया था।

"क्या हुआ अचानक से गुलशन बेटा? डॉक्टर मल्होत्रा ने गुलशन से पूछा।

"हमे तो खुद नही पता अंकल? हमने तो पापा की बहुत तेज चीखने की आवाज सुनाई दी थी? तब हम सभी यहां दौड़कर आये थे! यहाँ आकर देखा तो मम्मी पापा दोनों बेहोश पड़े हुए थे" गुलशन ने उस वक़्त की परिस्थिति का वर्णन किया।

डॉक्टर मल्होत्रा दोनों का चेकअप करने के बाद अब एक इंजेक्शन लगाने की तैयारी कर रहे थे।

"घबराओ मत बच्चो? अभी थोड़ी देर में दोनों को होश आया _जाएगा? मैंने इंजेक्शन दे दिया है!" डॉक्टर मल्होत्रा ने इंजेक्शन लगाने के बाद सभी की और मुखातिब होकर बोला।

"हमें पुलिस को भी खबर कर देनी चाहिये" गुलशन भल्ला ने सभी की और देखते हुए कहा।

"पहले मम्मी पापा को होश में तो आने दो? फिर जो वो बताएंगे उसके आधार पर देखते है कि पुलिस को बुलाये या नही बुलाये? अखिल ने गुलशन की बात का विरोध किया।

"ठीक है फिर थोड़ी देर वेट कर लेते है? गुलशन ने बिना किसी प्रतिवाद के अखिल की बात को मान लिया।

अब सभी अपने मम्मी पापा के होश में आने का इंतजार करने लगे।

कोई आधा घण्टे के बाद सुदर्शन भल्ला ने अपनी आँखें खोली।अपने चारों और परिवार के सभी सदस्यों का जमावड़ा देखकर एक बार कोतूहलवश चारो और अपनी नजरो को घुमा कर देखा।

"अब कैसी तबियत है आपकी पापा? सबसे पहले गुलशन ने पूछा।

"मुझे क्या हुआ है? मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ! और तुम सब लोग यहां क्या कर रहे हो? और ये डॉक्टर साहब को क्यो बुलाया है? तभी डॉक्टर मल्होत्रा पर भी सुदर्शन भल्ला की नजर पड़ी।

"पापा आप बेहोश हो गए थे और बड़ी तेज चीख भी आपने मारी थी? मम्मी और आप दोनों नीचे जमीन

पर बेहोश पड़े हुए मिले थे हमें ? इस बार अखिल ने अपना मुंह खोला।

" हां ! आपकी मम्मी कहां है ? ये बोलकर सुदर्शन भल्ला ने अपने चारों और नजर दौड़ाई , जब उसने अपनी पत्नी विमला देवी को अपने बेड पर ही साथ लेटे देखा तब उन्होंने राहत की सांस ली।

" डॉक्टर साहब आपने विमला को चेक किया क्या ? इसे क्या हुआ है ? ये अभी तक होश में क्यो नही आई ? अब सुदर्शन भल्ला अपने होशोहवास में आ चुका था।

" ये भी अभी थोड़ी देर में होश में आ जाएगी भल्ला साहब ? आप चिंता मत कीजिये ? डॉक्टर मल्होत्रा ने भल्ला साहब को आशवासन दिया।

" पापा ये तो बताओ हुआ क्या था ? आप और मम्मी बेहोश कैसे हो गए थे ? कोई आपके कमरे में घुसा था क्या ? इस बार चंचल ने अपने पापा से पूछा।

" मैं तो अपने बेड से खड़ा होकर बाथरूम की तरफ जा रहा था कि शायद तेरी मम्मी पहले से ही बेड से नीचे बेहोश होकर गिरी पड़ी थी ? बेध्यानी में मेरा पैर इनसे टकराया और मैं मुंह के बल धड़ाम से फर्श पर गिरा और मेरा माथा जोर से टकराया और मैं दर्द के मारे जोर से चीख कर बेहोश हो गया " सुदर्शन भल्ला ने अपने बेहोश होने की कहानी सुनाई।

सभी टकटकी लगाए सुदर्शन भल्ला की आपबीती को सुन रहे थे।तभी विमला बेहोशी की हालत में कुछ बड़बड़ाई ?
अब वहां मौजूद सभी लोगो की तवज्जो विमला देवी की और हो गयी।

डॉक्टर मल्होत्रा तेजी से विमला देवी के पास पहुंचे, और उनके हाथ की नब्ज को देखने लगे। विमला देवी थोड़ी थोड़ी देर में कुछ न कुछ बड़बड़ा रही थी लेकिन वो वहां मौजूद किसी भी शख्स के कुछ समझ मे नही आ रहा था।कुछ देर के उपरांत विमला देवी के शरीर ने एक जोर का झटका मारा और वो वापस बेहोशी के सागर में गोते लगाने लगी। डॉक्टर मल्होत्रा के चेहरे पर पसीने की बूंदे उभर आई। क्योकि विमला देवी की नब्ज डूबती जा रही थी।

"इन्ही जल्दी से किसी नजदीक के हॉस्पिटल में ले चलो" डॉक्टर मल्होत्रा की आवाज में घबराहट का पुट था। सभी हककबक्के से डॉक्टर मल्होत्रा का चेहरा देख रहे थे। तभी अखिल बाहर की और भागा।

"मम्मी को उठाकर बाहर ले चलो जल्दी भैया गाड़ी निकालने गए है। तब तक नौकरों की भीड़ का जमावड़ा वहां हो चुका था । सभी हाथ आनन फानन में मदद के लिए आगे बढे और विमला देवीं को उठाकर बाहर की और चल दिये।

"डॉक्टर साहब हुआ क्या है ये तो बताओ? अभी तो आप कह रहे थे कि ये थोड़ी देर में होश में आ जायेगी ? फिर अचानक से हॉस्पिटल ले जाने की जरूरत क्यो पड़ गयी? सुदर्शन भल्ला ने चलते चलते असमंजस भरे स्वर में बोला।

"मैं अभी कुछ नही बता सकता भल्ला साहब? वो एक बार होश में आई थी लेकिन उनकी नब्ज फिर से डूब रही है? इसलिए हॉस्पिटल लेकर जा रहे है? डॉक्टर मल्होत्रा ने भल्ला साहब को बोला।

तब तक विमला देवी को अखिल की गाड़ी में लिटा चुके थे और अखिल और गुलशन अपनी मम्मी को लेकर हॉस्पिटल की और गाड़ी को दौड़ा चुके थे।

सुदर्शन भल्ला और डॉक्टर मल्होत्रा भी उसी गाड़ी में सवार में थे।एक गाड़ी और उनके पीछे पीछे चल रही थी जिसमे परिवार के बाकी सभी सदस्य सवार थे। आधी रात को भल्ला परिवार पर एक नई मुसीबत आ पड़ी थी।

नजदीक के ही पारस हॉस्पिटल में विमला देवी को ले जाया गया। लेकिन जब विमला देवी को स्ट्रेचर पर लिटाया जा रहा था तब उनके मुंह से झाग निकलने लगे थे।

"जल्दी करो इन्हें अंदर लेकर चलो? डॉक्टर मल्होत्रा जोर से चिल्लाये। हॉस्पिटल का स्टाफ तेजी से विमला देवी को लेकर अंदर रूम की तरफ भागा। कुछ ही देर में डॉक्टरों की पूरी टीम विमला देवी के चेकअप में लग चुकी थी। लेकिन अब विमला देवी के शरीर ने नीला पड़ना शुरू कर दिया।

सुदर्शन भल्ला बेचैनी के साथ इधर से उधर चहलकदमी कर रहे थे। तभी उनके मोबाइल की घण्टी बज उठी। भल्ला साहब ने उस अंजान नंबर को एक बार तो अवॉयड करने की सोचा लेकिन फिर कुछ सोचकर उन्होंने फ़ोन को उठा लिया।

"नया तोहफा कबूल करो भल्ला साहब? उधर से वही रहस्यमयी औरत की आवाज सुनाई दी।

"अगर विमला को कुछ भी हुआ न तो तुझे पाताल से भी खोज कर वो सजा दूँगा की तेरे फरिश्ते भी रहम की भीख मांगेंगे।

"विमला तो ऊपर जा चुकी भल्ला? ये खबर देने के लिए बस डॉक्टर अभी आते ही होंगे? अभी तो ये शुरुआत है भल्ला? आगे आगे देख क्या होता है? तेरे कंधे कम पड़ जायेंगे लाशें ढोने के लिए? इतनी

लाशों का नजराना तुझे पेश करूँगी ?" वो महिला फिर से भल्ला के पसीने छुड़ाने लगी हुई थी। तभी हॉस्पिटल में क्रुन्दन स्वर आने लगे। भल्ला साहब की आंखे भी अब डबडबा आई। इस दुनिया मे एक मौत ही ऐसी शै है जिससे आजतक कोई धनवान कोई राजा कोई महाराजा नही जीत सका है। भल्ला साहब अब थके कदमो से उधर बढ़ने लगे, जिधर से वो क्रुन्दन स्वर आ रहे थे।
****

कोई सुबह के चार बजे होंगे जब मैं अपने मोबाइल के उस पुलिस सायरन वाली बैल को सुनकर नींद से जागा। मैंने अलसाए अंदाज में फ़ोन की और देखा। फ़ोन की स्क्रीन पर जो नंबर फ़्लैश हो रहा था वो मेरे खबरी का था। मैंने फ़ौरन फ़ोन को उठाया।

"गुरु सो रहे थे क्या ? उधर से मेरा खबरी कुछ ज्यादा ही मेरे साथ चककल्स करने लगा था।

"नही बेटा ? उम्र अब भजन कीर्तन करने की हो गयी है तो हनुमान चालीसा पढ़ रहा था" मैंने भी उसकी उल्टी बात का उल्टा ही जवाब दिया।

"गुरु आज सुबह की ताजा खबर सुनाऊ या आपके भजन कीर्तन के प्रोग्राम के बाद सुनाऊ ?" मेरा खबरी आजकल कुछ ज्यादा ही उड़ने लगा था।

"साले सीधा सीधा गोली मारू तुझे या किसी पुलिसिये से एनकाउंटर में मरेगा ? जल्दी बोल क्या खबर है ? मुझे फिर वापस सोना है अभी ? मैंने उड़ते हुए खबरी के पर काटने वाले अंदाज में बोला। मेरी बात सुनते ही खबरी किसी रटे हुए तोते की तरह शुरू हो गया।

"गुरु सुदर्शन भल्ला की वाइफ विमला की अब से एक घण्टे पहले मौत हो गयी ? मेरे खबरी ने मेरी नींद उड़ाने वाली खबर सुनाई थी।

" ऐसे कैसे ? विमला देवी की किसी से क्या दुश्मनी हो सकती है ? मेरे मुंह से अचानक से निकला।

"गुरु जिसकी भी दुश्मनी है वो सुदर्शन भल्ला से है और भल्ला के कर्मो का ही नतीजा इस वक़्त पूरा परिवार भुगत रहा है ? मेरे खबरी के पास जरूर कोई काम की खबर थी भल्ला साहब के बारे में जो उसने ये बात बोली।

" तुम जानते हो भल्ला के ऐसे किसी कर्म के बारे में ? मैंने खबरी से पूछा।

उसके बाद मेरा खबरी मुझे बताता चला गया। आश्चर्य से मेरी आँखें फटी की फटी रह गयी। हालांकि कहानी में अभी भी कई झोल थे। लेकिन मेरे खबरी ने एक रास्ता मुझे दिखा दिया था। जिस रास्ते पर चल कर मैं सुदर्शन भल्ला के परिवार के साथ जो भी अनहोनी हो रही थी उस अनहोनी का पर्दाफास कर सकूँ।

लेकिन इस समय मेरा भल्ला निवास पर पहुंचना बहुत जरूरी था। सुदर्शन भल्ला से बात करना इस वक़्त सबसे ज्यादा जरूरी था।अभी सुबह के साढ़े चार बजे थे। मैं अभी इसी उहापोह में था कि रागिनी को इस समय अपने साथ लू या नही। मैंने अभी रागिनी को सोने देना ही बेहतर समझा। उसे बाद में मैं वहां पर बुला लेता। यही सोचकर मैं जल्दी से नित्यकर्म से निपटा।फिर जल्दी जल्दी नहाकर मैं कृष्णा नगर के लिए निकल गया।
****

मैं कृष्णा नगर भल्ला साहब की कोठी पर पहुंचा। पिछले कई दिनों से इस घर मे सिर्फ मातम ही पसरा हुआ था।एक के बाद एक तीन मौत इस घर से जुड़े लोगों की हो चुकी थी। विमला देवी की मौत भी कोई सामान्य परिस्थितियों में नही हुई थी? जैसा कि मुझे वहां पहुंच कर पता लगा। मौत के वक्त विमला देवी का शरीर नीला पड़ चुका था। लेकिन घर के अंदर सोती हुई महिला को आधी रात के समय इस तरह से कोई कैसे मार सकता था। मेरे मन मे बहुत सारे सवाल उमड़ घुमड़ रहे थे। जिनमें से कुछ सवालों के जवाब तो मुझे सुदर्शन भल्ला से मिल जाने थे और कुछ सवालों के जवाब मुझे खुद तलाश करने थे। मैं सुदर्शन भल्ला को ढूढने के लिए कोठी के अंदर पहुंचा तो पता चला कि भल्ला साहब और उनके परिवार के सदस्य अभी तक घर नही पहुंचे थे।सभी लोग अभी पारस हॉस्पिटल में ही थी।शायद विमला देवी की डेडबॉडी अभी तक मिली नही थी। ये भी हो सकता है कि अस्पताल प्रसासन ने असामान्य मौत को देखते हुए स्थानीय पुलिस को भी सूचना दी हो और मामला और ज्यादा लंबा खींच गया हो। मेरा अब कोठी पर रुकना यू तो मुझे बेकार ही लग रहा था, लेकिन मैंने फिर भी वहां के नौकरों से इस बारे में कुछ पूछने की कोशिश की।

"हां तो राजाराम कइसे हो भैया? मैंने एक नौकर से बड़ी आत्मीयता से पूछा।

"साहब हमरा नाम राजाराम नाहीं है? हमरा नाम रामखिलावन है? उस नौकर ने अपने नाम का सही उच्चारण हमें बोला।

"भइया अब नाम में तो क्या रखा है? नाम राम खिलवान कि जगह राम लखन भी होता तो क्या फर्क पड़ता? तुम हमका ई बताओ कि आज रात

को तुम्हरी मालकिन के साथ का हुआ था" मैंने रामखिलावन से जानना चाहा।

"क्या बताये साहब? इस हँसते खेलते परिवार को किसी की नजर लग गई है साहब? मालकिन तो रात को अच्छी भली सोई थी? हम भी सो रहे थे कि अचानक शोर शराबा सुनकर उठे और ई सब देखें को मिला साहब? रामखिलवान के चेहरे से असीम दुख प्रकट हो रहा था।

"इसके अलावा कुछ और भी देखा क्या? मसलन कोई बाहर का आदमी जो उस समय कोठी के अंदर हो? मैनें फिर से रामखिलावन से पूछा।

" नही साहब बाहर का तो कोई नही देखा? लेकिन रात को 12 बजे के आसपास कंचन बहु को मालकिन के रूम की और जाते हुए देखा था? रामखिलावन कुछ सोचते हुए बोला।

"कंचन बहू कौन? मैंने रामखिलावन से जानना चाहा।

"अपने अखिल भैया की पत्नी है साहब? शादी के 5 साल बाद भी अभी तक कछु जना नही साहब तो पता नही कौनो तांत्रिक के चक्कर में उल्टा सीधा करत रहत है ? रामखिलावन ने एक नए रहस्य से पर्दा उठाया।

"क्या उल्टा सीधा करती है" मैंने रामखिलावान से फिर से पूछा।

"जो उ तांत्रिक बाबा बोल रहत है वही वा सब करत है बाबू? अब बाकी तो उ से ही पूछना साहब? रामखिलावन ज्यादा मुंह खोलने को तैयार नही दिखता था।

"ठीक है प्यारे लाल फिर मिलता हूँ तुमसे" ये बोलकर मैंने वहां से जाना चाहा।

"साहब हमरा नाम प्यारेलाल नही रामखिलवान है ! हम पहले भी बताए रही? रामखिलावन के चेहरे पर अब उसकी नाराजगी साफ झलक रही थी।

"अरे रामखिलावन भैया!हम भी बोले के रही कि नाम मे क्या रखा है? ये बोलकर ये बन्दा वहां से रुखसत हो लिया। मेरी अगली मंजिल अब पारस हॉस्पिटल थी।
****

मैं पारस हॉस्पिटल पहुंचा। इतनी सुबह भी वहां भल्ला परिवार के शुभचिंतकों का जमावड़ा लग चुका था। देश के इतने जाने माने परिवार पर एक के बाद एक विपदाओं ने सभी को हिलाकर रख दिया था। मीडिया के लिए भी ये एक मसालेदार सनसनी थी।मीडिया का हुजूम भी वहां उमड़ा हुआ था और हर कोई अपने अपने हिसाब से इस मौत की विवेचना कर रहा था। उस भीड़ में मैं भल्ला परिवार के किसी सदस्य को तलाश रहा था।तभी मेरे फ़ोन का पुलिस सायरन बज उठा। उस भीड़ की अनेक नजरे कोतूहलवश मेरी और उठ गईं। मैंने जल्दी से फ़ोन उठाया क्योकि फ़ोन रागिनी का था।

"कहां हो सर? भल्ला परिवार में एक और मौत हो गयी है? रागिनी ने एक ही सांस में पूरा वाक्य बोल दिया।

"पता है मुझे! सुबह 4 बजे ही खबरी का इस बाबत मेरे पास फ़ोन आ गया था? और मैं अभी वही हूँ? मैंने रागिनी को बोला।

क्या? आप वहां हो और मुझे लेकर नही गए? रागिनी के स्वर में अब गुस्सा झलक रहा था।

"सुबह के चार बजे तुझे उठाना मुझे ठीक नही लगा, तो मैंने सोचा कि तुम्हे फ़ोन करके बाद में बुला लूंगा? क्योकि अभी तो यहां शाम हो जानी है? मैंने रागिनी को समझाया।

"अच्छा ठीक है मैं भी तैयार होकर निकलती हूँ? ये बोलकर रागिनी ने फ़ोन रख दिया।

मेरी नजरे फिर से भल्ला परिवार को ढूढने लगी। तभी किसी का नरम और नाजुक हाथ मेरे कन्धे पर मुझे महसूस हुआ। लगभग एक 35 वर्षीय महिला मेरे कंधे पर हाथ रख कर मुस्करा रही थी। उस गमगीन माहौल में भी मुझे उसका मुस्कराना कुछ कुछ अजीब लगा।

"मोहतरमा आपको पहचाना नही? कौन हो आप? मैनें उस अजनबी महिला की आँखों मे आंखे डाल कर पूछा।

"हमारा परिचय भी आपको मिल जाएगा? जासूस महोदय! पहले हमसे इत्मीनान से मिल तो लीजिए" उस महिला के स्वर में उसकी बेबाकी झलक रही थी।

"मिलने का कारण तो बताओ? ये बन्दा बिना वजह किसी से मिलना पसंद नही करता" मैंने उस महिला को बोला जो इस उम्र में भी बता रही थी कि अगर रहने का सलीका हो तो औरत हर उम्र में सुंदर लगती है।

"मिलने की तो हजार वजह मिल जाएगी अनुज बाबू? खासकर बात जब भल्ला परिवार की हो? अब वो अजनबी महिला पहेलियां बुझा रही थी।

"क्या जानती हो आप भल्ला परिवार के बारे में" मैंने सवालिया निगाह से उस महिला को देखा।

का फायदा उठा कर गौतम साहब के साथ ही अंदर की और बढ़ गया।

मैं भी पुलिस टीम के साथ उस जगह पहुंचा जहां समूचा भल्ला परिवार इस समय गमगीन अवस्था मे बैठा हुआ था। इंस्पेक्टर गौतम सबसे पहले उस डॉक्टर के पास पहुंचा ! जिसने उन्हें काल करके यहां बुलाया था।

मैं भल्ला परिवार के पास ही रुक गया। सिर्फ सुदर्शन भल्ला और अखिल को छोड़कर सभी लोग मुझे कोतूहल से देखने लगे। मैं अखिल से मुखातिब हुआ।

"कैसे हुआ ये सब ? मेरे इस सवाल के जवाब में अखिल मुझे कल आधी रात से उनके घर मे घटा घटनाक्रम सुनाने लगा। सुनते सुनते मुझे जो बात सबसे अजीब लगी वो ये की सुदर्शन भल्ला को इस बात का एहसास कैसे नही हुआ क उनकी धर्मपत्नी बिस्तर में उनके साथ नही है और वो बेहोशी की हालत में कैसे पलंग से नीचे पहुंच गई। अगर वो रूम से बाहर भी गई होगी तो उनके कदमो की आहट तो सुनी होगी ?
बाहर जाते हुए नही सुनी होगी तो अंदर आकर जब उनके बेड के नजदीक आकर वो बेहोश होकर गिरी होगी तब तो उस हलचल को महसूस किया होगा।

क्या सुदर्शन भल्ला उस समय गहरी नींद में सोए हुए थे। इतनी गहरी नींद की उनके रूम में कुछ भी होता रहे और किसी को पता ही न चले। मेरे दिमाग मे अनेक सवाल कुलबुला रहे थे। मौत होने की परिस्थितियां अजीब थी। 15 दिन में 3 मौत ? एक ही घर से जुड़े हुए सभी लोग ? क्या कोई सुदर्शन भल्ला से अपनी किसी रंजिश का हिसाब पूरा कर

मैं अभी भल्ला परिवार के किसी सदस्य की तलाश कर ही रहा था कि पुलिस की जिप्सी पुलिस का सायरन बजाती हुई वहाँ आकर रुकी। जिप्सी से इंस्पेक्टर गौतम अपने दलबल के साथ उतरे। ये बन्दा भी गौतम साहब को देखकर उनकी और फ़ौरन लपका।

उन तक पहुंचने की मेरी बेताबी और जल्दबाजी की वजह से उनकी खुद ही नजर मेरे ऊपर पड़ गयी। मैं जल्दी से उनके नजदीक पहुंचा।

"परवर दिगार आलम? आप हमसे भी पहले पधारे हुए है" गौतम साहब ने हल्की सी मुस्कान के साथ मुझे बोला।

"क्या करे सर? बन्दे की दाल रोटी तभी चलती है जब किसी की आत्मा परमात्मा से मिल जाये? बड़ा ही नामाकूल धंधा है जनाब? मेरी बात सुनकर गौतम साहब के चेहरे की मुस्कान और ज्यादा गहरी हो गयी।

"जब इतनी देर से यहां हो तो कुछ तो पता लगा ही लिया होगा आपने? थोड़ी सी मदद पुलिस की भी कर देना" मैं समझ नही पाया कि गौतम साहब मुझ से हेल्प मांग रहे है या मुझ गरीब पर तंज कस रहे है?

"जैसे ही इस केस में किसी मुकाम तक पहुँचूँगा तो प्रेस कॉन्फ्रेंस आपके साथ ही करूँगा? मैंने भी उनके तंज का जवाब उन्ही के लहजे में दिया।

"अच्छा अनुज जी जरा अंदर जाकर देख लू क्या मसला है? यहां के डॉक्टर ने बताया है कि मौत संदिग्ध तरीके से हुई है? गौतम साहब ये बोलकर अंदर जाने के लिए आगे बढ़ गए। ये बंदा भी मौके

रहा है? कौन है जो हर हफ्ते तोहफे में एक लाश का नजराना उन्हें पेश कर रहा है? पता नही कितनी ही मौतों की गुत्थीया सुलझाने वाला आपका ये हर दिल अजीज बन्दा खुद इन मौतों की गुत्थी में उलझ कर रह गया था। अखिल से पूछने के बाद मैं सुंदर्शन भल्ला की और बढ़ा। भल्ला साहब मुझे अपनी और आता देखकर खुद ही एक एकांत कोने की और बढ़ने लगे। मैं उनके नजदीक पहुंचा।

"जब आपकी वाइफ आपके बेड के पास आकर बेहोश होकर गिरी तब आप सो रहे थे क्या? मैंने भल्ला साहब से पूछा।

"नही जगा हुआ था? मैं किसी से फ़ोन पर बात कर रहा था? और उस फ़ोन कॉल में मैं इतना उलझा हुआ था कि मुझे एहसास ही नही हुआ कि विमला कब मेरे पास से उठकर बाहर गयी ? कब वापस आई और कब वो बेहोश होकर गिरी? मुझे कुछ ख्याल नही रहा? जब मैंने उस फ़ोन कॉल को काटा तब मुझे एहसास हुआ कि विमला तो मेरे बेड पर है ही नही? मैं उसे देखने के लिए बाहर की और जाने के लिए उठा और उठते ही विमला के शरीर से मेरे पाव टकराये और मैं मुंह के बल फर्श पर गिरा उसके बाद मैं भी बेहोश हो गया? भल्ला साहब ने एक ही सांस में पूरा घटनाक्रम बता दिया।

"वो फ़ोन कॉल किसकी थी? इस बार मैंने भल्ला साहब के चेहरे पर अपनी नजरो का फोकस बनाया हुआ था?

"पिछले कुछ दिनो से मुझे एक औरत फ़ोन करके डरा रही है अनुज जी? मैं नही जानता वो कौन है? वो बोलती है कि वो मेरे पूरे परिवार को खात्मा कर देगी? वो कुछ नही बताती की वो कौन है? वो क्यो

मेरे परिवार और मेरे पीछे पड़ी हुई है ?" भल्ला साहब के माथे पर उस औरत के बारे में बताते हुए इस समय भी पसीना आ गया था।

"मुझे लगता है ? बहुत लोगो का दिल दुखा कर आपने ये बिज़नेस एम्पायर खड़ा किया है ? लक्ष्मी तो आई है आपके घर मे लेकिन वो शायद काली के रुप में आई है ? मैंने भल्ला साहब के स्टेटस और उनके रुतबे का बिना कोई ख्याल किये अपनी राय उनके बारे में जाहिर कर दी।

मेरी बात सुनकर भल्ला साहब एक बारगी शून्य में ताकने लगे।

"भल्ला साहब बिना आग के कभी धुंआ नही उठता ? अभी भी वक़्त है अपनी पिछली जिंदगी की किताब के पन्ने मेरे सामने खोल दो ? हो सकता है कि हम बाकी लोगो को मरने से बचा ले ? नही तो हम लाशें गिनने और उनका अंतिम संस्कार करने के अलावा कुछ नही कर पाएंगे ? मैंने भल्ला साहब की सोई हुई आत्मा को जगाने का प्रयास किया ?

"मेरी ऐसी कोई पिछली जिंदगी नही रही जिससे कि कोई इस तरह से हमारे परिवार के साथ व्यवहार करें ? ये कोई बहुत बड़ी साजिश है जो हमारे परिवार के खिलाफ रची गयी है शायद ? कोई हम सभी को मार कर हमारे बिज़नेस एम्पायर पर कब्जा करना चाहता है ? अनुज तुम्हे सच्चाई का पता लगाना होंगा ?

"आप मुझे वो नंबर दीजिये जिससे कल रात को आपको काल आया था !" अब मुझे अपनी जासूसी दिमाग के सारे घोड़े दौड़ाने थे।

भल्ला साहब ने मुझे वो नंबर बेजिझक दे दिया। तभी मुझे सामने से इंस्पेक्टर गौतम आते हुए नजर आए।

उनकी चाल की तेजी बता रही थी कि वो या तो बताने आ रहे थे या कुछ भल्ला परिवार से पूछने आ रहे थे ?

"ये मर्डर केस है ? भल्ला साहब ? आपकी वाइफ का पूरा शरीर नीला पड़ा हुआ है ? हमें शक है कि उन्हें जहर देकर मारा गया है ? अभी हम उनकी लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज रहे है ? आप हमारे साथ पहले घर चलिए ! हमें वहां के हालात का मुआयना भी करना है ? इंस्पेक्टर गौतम ने एकबारगी में ही पूरी तफसीस बयाँ कर दी।

" जी चलिए इंस्पेक्टर साहब " ये बोलकर भल्ला साहब इंस्पेक्टर गौतम के साथ निकल लिए।

मुझे अभी वही रागिनी का इंतजार करना था। आज रात को उन शालिनी नाम की मोहतरम से भी मिलना था।लेकिन अभी रागिनी के आने से पहले एक और मोहतरमा थी जिनसे मैं तत्काल मिलना चाहता था ? और वो थी अखिल की वाइफ कंचन। अखिल , कंचन , गुलशन , वैशाली और उनकी दोनों बहने इस समय उसी कमरे में मौजूद थी। उन सभी के सामने कंचन से बात करने का कोई औचित्य नही था। मैने कंचन से अकेले में ही बात करने का निश्चय किया। मैं अब उस रूम से बाहर की और चल दिया। अब मैं रागिनी का इंतजार कर रहा था।
****

लगभग एक घन्टा इंतजार करवाने के बाद रागिनी ने अपने दर्शन दिए। मैं वहां खड़े खड़े पक चुका था। लेकिन रागिनी का इंतजार करना भी निहायत ही जरूरी था। क्योकि मेरी पूछताछ की कड़ी में शामिल कंचन को अकेले में कही बुलाने के लिए रागिनी बहुत उपयोगी साबित होने वाली थी।

मैंने रागिनी को सुबह से लेकर अभी तक हुए समस्त घटनाक्रम से रागिनी को अवगत कराया। लेकिन मैं शालिनी की बात को अभी गोल कर गया। क्योकि शालिनी से ये बंदा पहली मुलाकात अकेले ही करना चाहता था। मैं जनता था कि रागिनी को बताने के बाद वो भी मेरे साथ चलने की जिद जरूर करती। फिर हो सकता था कि शालिनी को रागिनी के मेरे साथ आना गवारा होता या नही? इसलिए मैं अभी कोई खतरा नही उठाना चाहता था।

तभी बाहर भीड़ में कुछ हलचल हुई। पता लगा कि पुलिस लाश का पोस्टमार्टम करने के लिए लाश को पोस्टमार्टम हाउस लेकर जा रही थी। पहले विमला देवी की लाश को लेकर एक एम्बुलैंस वहां से रवाना हुई। उसके पीछे पीछें भल्ला फैमिली की गाडियो का काफ़िला रवाना हुआ। सबसे आखिर में मैंने भी उस काफिले के पीछे अपनी गाड़ी को लगा दिया। मेरा उद्देश्य आज सिर्फ कंचन से बातचीत करना था। आजकल ये जितने भी तांत्रिक होते है ये अपने जाल में फसे हुए लोगो से इसी प्रकार के कांड करवाते है जैसे आजकल भल्ला परिवार में हो रहे थे। कंचन का किसी तांत्रिक के प्रभाव में होना? उसे मेरे शक के दायरे में ला रहा था।

जब उन गाडियो का काफिला रुका तो मैंने भी अपनी गाड़ी को रोक दिया। विमला देवी की लाश को पोस्टमार्टम के लिए अंदर ले जाया चुका था। हम बाहर ही रुकने को मजबूर थे।तभी मैंने देखा कि कंचन उन लोगो से अलग होकर साइड में मोबाइल से किसी से बात कर रही थी।मैंने रागिनी को इशारा किया। रागिनी ने मेरे इशारे को समझा और फ़ौरन उसने अपने कदम कंचन कि और बढ़ा दिए।रागिनी ने कंचन के पास पहुंचते ही उसे बातो में लगा लिया। मेरा अनुभव

वाले इस वाक्य ने मेरी बात की स्वीकारोक्ति दे दी थी।

"मुझे तो ये भी पता है कि कल आधी रात के करीब आप अपनी सास विमला देवी के रूम के पास भी गई थी? मैंने कंचन को एक बार फिर जोर का झटका धीरे से दिया।

" वो तो मैं मम्मी जी को उनकी दवा देने के लिए गयी थी? कंचन ने मेरी दूसरी बात को भी मान लिया था।

"इसका मतलब विमला देवी से कल रात को मिलने वाली आप आखिरी महिला थी? मैंने एक बार फिर कंचन की नीली आँखो में देखा जहां अब एक असमंजस की परछाई तैरने लगी थी।

"ये जो मेरी असिस्टेंट है इसको ना कभी कभी पागलपन के दौरे पड़ते है? आप मुझे उस तांत्रिक के बारे में बता सकती है? की वो कहाँ मिलता है? मुझे इसका भी इलाज करवाना है। मैंने कंचन को अपने जाल में अच्छे से लपेट लिया था।

अब काफी देर के बाद मैंने रागिनी की और ध्यान दिया तो वो मुझे खा जाने वाली नजरो से घूर रही थी। मैने फिलहाल उसकी तरफ से अपनी तवज्जो हटाई और फिर से कंचन की और देखा।

"बताइये ना वो तांत्रिक बाबा कहां मिलेंगे? इस बेचारी का भी घर बस जाएगा? पागलपन के दौरों की वजह से इसकी शादी भी नही हो पा रही है? मैंने बेचारगी भरे स्वर में कंचन को बोला। कंचन कि उन खूबसूरत नीली आँखो में मुझे रागिनी के लिए हमदर्दी दिखाई दी।

"वो तो यही शाहदरा में मिल जायेंगे? बिहारी कॉलोनी में बाबा कमली वाले के बारे में किसी से पूछ लेना? कंचन की मासूमियत बता रही थी कि उसका इन मामलों से कुछ लेना देना नही था। लेकिन फिर भी एक बार उस तांत्रिक बाबा को भी चेक करना जरूरी था। कही कंचन की मासूमियत का फायदा उठाकर वो तांत्रिक ही कोई गलत काम कंचन से न करवा रहा हो।

"आप क्यो जाती हो उस बाबा के पास? मैंने अपना आखिरी सवाल कंचन से पूछा।

"जी शादी के इतने साल हो गए और अभी तक गोद सुनी है तो इसी सिलसिले में बाबा के बारे में किसी ने बताया था तो इसलिए वहां जाती हूँ? कंचन ने शर्माते हुए मेरी बात का जवाब दिया।

"ओह्ह! लेकिन इसका इलाज तांत्रिकों के पास नही डॉक्टर के पास होता है? आप अपने पति के साथ किसी अच्छे से डॉक्टर के पास जाइये? वो ज्यादा अच्छा रहेगा" मैंने अपनी बिन मांगी राय कंचन को दी।

मेरी बात का कोई जवाब कंचन ने नही दिया। अब रागिनी उसे वही छोड़ आई जहाँ से वो उसे लाई थी। रागिनी किसी दुर्गावाहिनी की लड़ाकू की तरह पूरी रफ्तार से मेरी और आ रही थी। मैं फ़ौरन गाड़ी में जाकर बैठ गया। रागिनी भी गाड़ी के अंदर आई और गाड़ी के दरवाजे पर अपनी भड़ास निकालते हुए उसे इतनी जोर से बंद किया कि आसपास खड़े सभी लोगो का ध्यान हमारी तरफ आकृष्ट हो गया। मैंने वहां से गाड़ी भगा लेने में ही अपनी भलाई समझी।
****

रात के 9 बजे के करीब मैं पहाड़गंज के लीला होटल में पहुंच चुका था।वहां आने से पहले ही मैंने किसी पर्सनल काम का बहाना बना कर उसे घर के लिए रवाना कर दिया था।उस होटल में कदम रखने से पहले मेरे मन मे अनेक आशंकाओं ने अपना घर बना लिया था।पता नही एक अजनबी महिला के द्वारा इस प्रकार के आमंत्रण को मुझे स्वीकार करना चाहिए था या नही? मेरे लिए ये कोई हनी ट्रैप तो नही था।शायद कातिल को मेरा इस केस में दखलंदाजी करना रास न आ रहा हो। लेकिन किसी अनहोनी की आशँका से अनुज अपने कदम पीछे खींच ले? ये तो असम्भव सी बात थी? हां इस वक़्त ये जरूर एहसास हो रहा था कि रागिनी को वापस भेजकर मैन गलती कर दी थी। रागिनी मुझे बाहर रहकर भी कवर कर सकती थी। मैंने अपनी सोच को झटका दिया। जब ओखली में सर दे ही दिया तो मूसलों से क्या डरना?

मैंने होटल के रिसेप्शन पर पहुंच कर रूम नंबर 18 के बारे में पूछा। मुझे बताया गया कि रूम नंबर 18 फर्स्ट फ्लोर पर था। मैं फर्स्ट फ़्लोर पर 18 नंबर के सामने पहुंचकर अभी दरवाजे की तरफ हाथ बढ़ाये ही थे कि दरवाजा अपने आप खुलता चला गया और वही सुबह वाली कयामत अब कयामत की आग बनकर मुझ पर शोले बरसा रही थी।मैंने एक नजर उसे ऊपर से नीचे तक देखा। मुझे मेरे इस तरह के स्वागत की कोई उम्मीद नही थी लेकिन अब जब हो रहा था तो मेरी छठी इंद्री मुझे बार बार सचेत कर रही थी।

"अब यही दरवाजे पर ही हजम कर जाने का इरादा है या अंदर भी आने दोगी? प्रत्यक्ष में अपने अंदर उठने वाले सवालों की अपने चेहरे पर मैंने झलक तक ना आने दी।

"जनाब हमारा बस चलता तो हम तो सुबह के नास्ते में ही आपको हजम कर जाते" शालिनी की मादकता उसके शरीर से ही नही उसकी आवाज से भी टपक रही थी

"फिर रात तक अपने साथ साथ हमें भी क्यो तड़पाया" बन्दा अपनी कमीनगी पर उतर ही आया था।

"इंतजार का फल मीठा होता है" शालिनी उसी मादक अंदाज में बोली। शालिनी अब बोलते बोलते बड़ी अदा से एक एक कदम को पीछे करती जा रही थी। मैं भी जितने कदम वो पीछे कर रही थी उतने ही कदम आगे बढ़ रहा था। रुम का माहौल एकदम रोमांटिक था।मुझे समझ नही आ रहा था कि एक अनजान हसींना मुझ पर इतनी मेहरबान क्यो थी कि पहली ही मुलाकात में मेरे आगे बिछी जा रही थी।

अचानक वो पीछे बिछे सोफे पर बीछती चली गई और मुझे भी अपने ऊपर आने का इशारा किया। मुझे उस समय पर कुछ भी नही सूझ रहा था। दिमाग कह रहा था बेटा की होश में रह नही तो किसी मुसीबत में फस जाएगा, लेकिन दिल कह रहा था कि चुग दे फट्टे, चक दे किल्ली? आखिरकार मेरे जैसे हुश्न के पुजारी को दिल की आवाज ही सुननी पड़ी। मैं उस शालिनी नाम की कयामत के ऊपर झुक ही रहा था कि उसने मेरे गले मे अपनी बाहें डाल कर मुझे अपनी और खींच लिया और अपने दहकते हुए लबो को मेरे होठो पर रख दिया। मैं उस पिघलती हुई शमां पर किसी परवाने की मानिंद शहीद होने के लिए तैयार था, लेकिन ना जाने मेरे माँ बाप के दिये कौन से संस्कार मुझमें थे कि मैं ऐसे नाजूक वक़्त पर ज्यादा बहक नही पाता। मैंने उस क़यामत की कैद से खुद को एक झटके से आज़ाद किया और उठकर सोफे

पर उसी की बगल में बैठ गया। वो किसी चोट खाई नागिन की तरह मुझे घूर रही थी।

"क्या हुआ? जनाब को मैं पसंद नही आई शायद? शालिनी ने जहर बुझे स्वर में कहा।

"नही यार तुम तो कयामत से कम नही हो लेकिन पहले जिस काम के लिए तुमने मुझे यहां बुलाया है वो काम कर ले? इस काम के लिये तो पूरी रात पड़ी है? मैं अभी उसकी आशाओं और उम्मीदों को मरने नही देना चाहता था।

मेरी बात सुनकर अब जाकर उस क़यामत के चेहरे पर एक कुटिल मस्कान उभरी।

"तुम सुदर्शन भल्ला के बारे में मुझे कुछ बताना चाहती थी? मैंने मतलब की बात पर आते हुए कहा।

"ऐसे ही सूखे सूखे भल्ला की रामकहानी सुनोगे? थोड़ा थोड़ा इस रात को रंगीन करने दो और साथ साथ उस कमीने की कहानी भी चलने दो?" मुझे पता नही था कि वो मेरे साथ सेक्स करने को इतना क्यो मरे जा रही थी। अब मैने उसकी इसी कमजोरी को अपना हथियार बनाने की सोची।

मैंने उस नाजनीन को उठाकर अपने से चिपका लिया! और उसके लबो को एक बार और चूमते हुए उसे बोला!

"तुम भल्ला की कहानी बतानी शुरू करो? तुम्हारी रात को जवां बनाने का काम मुझ पर छोड़ दो ये बोलकर मैंने एक चुम्बन और उसके गालों पर जड़ दिया।

अब उस मादकता से भरी औरत उम्मीदों को पर लग चुके थे, जवाब में उसने भी मुझे चूमा और बोली!

पापो से क्या लेना देना? मैं अभी भी भल्ला के बारे में सुनाई गई कहानी से एग्री नही कर पॉय रहा था।

"मैंने शुरू में ही बताया न कि भल्ला इस समय दो प्रकार की दुश्मनी का सामना कर रहा है? एक वो है जो उसकी दौलत के पीछे है और एक वो लोग है जो उसके जुल्म और धोखे के शिकार है? शालिनी ने अपनी बात पर पुरजोर बल दिया।

"जो दौलत के पीछे है वो क्या पूरे परिवार को खत्म करके दौलत पर कब्जा करेंगे? मैंने उलझन भरे स्वर में शालिनी से पूछा।

"कुछ सवालों के जवाब तुम्हे भल्ला फैमिली के अंदर से ही मिलेंगे मेरे सेक्सी" ये बोलकर वो हवस की भूखी शेरनी एक बार फिर से मेरे ऊपर टूट पड़ी। मुझे न जाने क्यों ऐसा लग रहा था कि वो मुझे एक खास सवाल तक नही पहुचने दे रही थी। मैंने एक बार फिर उसके पंजो से खुद को बचाया? यकीन मानिए सच मे आज मुझे अपनी इज्जत लूटने के पूरे पूरे आसार नजर आ रहे थे।

"अच्छा एक बात बताओ? तुम क्यो बदला लेना चाहती हो भल्ला से? मैंने शालिनी की खा जाने वाली नजरो के बावजूद उसकी आँखों मे आंखे डाल कर पूछा।

"भल्ला की वजह से मेरी बहन ने आत्महत्या की थी! मेरे माँ बाप जमाने के ताने सुन सुन कर मरे थे? और परिवार का साया सर से उठने के बाद आज मैं क्या बन चुकी हूँ ये तो तुम अभी तक समझ ही चुके होंगे? शालिनी ने संक्षेप में अपनी आपबीती बताई? अब जाकर मुझे शालिनी से कुछ कुछ हमदर्दी होने लगी थी?

"सब्र नही जानू तुममें? क्यो इतनी बेकाबू हो रही हो? मैंने बोला ना आज पूरी रात हूँ मै यहां? तुम्हारी सारी प्यास बुझा कर जाऊँगा?" मैंने उसके चुंगल से खुद को आज़ाद कराते हुए बोला।

"आज भल्ला इतने बड़े एम्पायर का मालिक है? उससे डर नही लगता तुम्हे? कैसे बदला ले पाओगी उससे? और बदला भी किस बात का की जवानी के दिनों में उसने तुम्हारी जवानी लूट ली? ये तो कोई बात नही हुई बदला लेने की? मैंने शालिनी को और कुरेदने की कोशिश की।

"नही सिर्फ एक ये वजह ही नही है उस कमीने से बदला लेमे की? उसने सिर्फ लड़की ही नही उनके परिवारों तक को बर्बाद किया है? किसी ने शर्म से आत्महत्या कर ली तो किसी ने अपना शहर ही छोड़ दिया? कोई आज भी किसी कोठे पर बैठी है कोई किसी अरब शेख के घर मे उसका बिस्तर गर्म कर रही है? शालिनी का बोला हुआ हर शब्द मुझे भल्ला की कमीनगी के बारे में सोचने पर मजबूर कर रहा था।

"लेकिन एक इतना पापी इंसान बुलन्दी के इतने बड़े शिखर तक कैसे पहुंच गया? इतने सालों तक सब क्यो चुप रहे?" मैंने शालिनी की और शक्की निगाहो से देखा।

"अधिकतर तो इस दुनिया मे ही नही रहे? जो बच गए वो उस नरक में जी रहे है जहाँ पर कोई औरत जा तो सकती है लेकिन कभी अपनीं मर्जी से वापस नही आ सकती? शालिनी ने बोला।

"फिर अब ये कौन लोग है जिन्होंने पहले मानव को मार डाला फिर उस नौकरानी को ? उनका भल्ला के

" अच्छा एक बात बताओ ? भल्ला को आधी रात को फ़ोन करके तुम्ही धमकाती हो आजकल ? मैं कब से उससे यही सवाल पूछना चाहता था।

" नही मैं उसे कोई फ़ोन नही करती ?" मेरे इस सवाल के जवाब में वो थोड़ा सा हड़बड़ा गई थी।

" अच्छा अब इस बन्दे को इजाजत दीजिए ? रात को शरीफ लड़के ज्यादा देर तक घर से बाहर नही रहते ? मैने मुस्कराते हुए खड़े होकर कहा।

इसके साथ ही मैंने अपने मोबाइल से उसी नंबर को डायल कर दिया जो आज सुबह सुदर्शन भल्ला ने मुझे दिया था। कमरे में फ़ोन की बेल बजने लगी ? शालिनी ने हैरानी से मेरी और देखा ? मैं मुस्कराता हुआ हल्की हल्की सीटी बजाता हुआ कमरे से बाहर की चल दिया।

" रुको ? मुझे अपनी पीठ पीछे एक कर्कश आवाज सुनाई दी।
मैंने पलटकर शालिनी की और देखा ! शालिनी के हाथ में पिस्टल देखकर मेरी रुह कांप गई। तभी एक शोला उस पिस्टल से मेरी और लपका और मेरे जिस्म में समाता चलाता गया। मैं भरभरा कर वही ढेर हो गया।

****

गोली का निशाना लगाने में उस मक्कार औरत से थोड़ी सी चूक हो गयी थी। गोली मेरे बायी बाजू में धंसी थी। खून की धारा मेरे बाजू से निकल कर फर्श को लाल कर रही थी। मैं अभी अपने होशो हवास में था।लेकिन मैंने अपनी आंखों को बंद कर रखा था। तभी मुझे अपनी तरफ आते हुए शालिनी के कदमो की आवाज सुनाई दी। मैं निस्तेज और

निःसहाय अवस्था में फर्श पर पड़ा था। हो सकता है वो मुझे चेक करती और मुझे जिंदा पाकर मुझे मारने के लिए दूसरी गोली भी चला सकती थी? वैसे भी मुझ पर एक बार जानलेवा हमला करने के बाद अब मुझे जीवित छोड़ने का कोई औचित्य नही था। मैं अपनी आंख की झिरी से उसके अगले कदम का इंतजार कर रहा था। आज तक मैं हसीनाओं को कातिल उनकी अदा के कारण कहता था! लेकिन ये कम्बखत तो सच मे कातिल निकली। मुझे दूसरी बात ये समझ नही आ रही थी कि मुझे मारकर इसे क्या हासिल होने वाला था।

"साले हरामखोर? खुद को बड़ा तीसमारखाँ समझता है? शालिनी को ठुकरा कर तू जिंदा बच जाएगा? ये तूने सोच भी कैसे लिया? ये बोलकर उस जख्मी औरत ने एक बार फिर से मुझे अपनी पिस्टल के निशाने पर ले लिया।
अब इस बन्दे के लिए करो या मरो की स्थिति थी। मरना तो हर हाल में लिखा था तो क्यो न एक बार जीने के लिए कोशिश कर ली जाए? यही सोचकर मैंने अपनी एक टांग को हवा में उछाला और मेरी लात सीधे उसके पिस्टल वाले हाथ से टकराई। कमरे में एक और धमाका गुंजा।

लेकिन ये हवाई फायर साबित हुआ। मेरे अचानक हमले से शालिनी अचानक से बौखला गई और उसने अपनी पिस्टल पर अपनी पकड़ को मजबूत किया और फिर से मुझे अपनी पिस्टल के निशाने पर रख लिया। लेकिन एक गोली लगने के बावजूद अभी तक मेरे होश कायम थे। मैं फुती के साथ 90 डिग्री के कोणः से घुमा और यही पर वो शालिनी नाम की नामाकूल हसींना गच्चा खा गई।

मेरी टांगे उसकी टाँगों में उलझी और वो धड़ाम से फर्श को सूंघने पर मजबूर हो गयी। उसकी पिस्टल उसके हाथ से छूटकर उससे दूर जा चुका थी। मैंने जिस बाजू में गोली लगी थी वो हाथ शालिनी के ऊपर रख दिया। उसके कपड़े भी अब खून से तरबतर हो चुके थे। वो मोहतरमा अभी तक फर्श को आलिंगनबद्ध किये हुए पड़ी थी। मैं पड़े पड़े ही खुद को घसीटता हुआ पिस्टल के पास पहुंचा। पिस्टल अब मेरे कब्जे में थी। शालिनी अभी तक फर्श पर ही पड़ी थी।वो शायद बेहोश हो गयी थी। मैं खड़ा हुआ और शालिनीं कि और बढ़ा। हमारे बीच मे अभी भी सांप और नेवले का खेल चल रहा था। कमाल की बात ये थी कि दो दो गोली चलने के बावजूद अभी तक कोई होटल का स्टाफ या अड़ोसी पड़ोसी कमरे में नही आया था।

मैं शालिनीं के पास पहुंचा और पिस्टल का बट उसकी कनपटी पर एक खास जगह पर मारा ? अब मुझे यकीन था कि ये जालिम अब बेहोशी के सागर में गोते लगा रही होगी ? मैंने उसकी नाक के आगे अपनी उंगली लगा कर देखी उसके शरीर की तरह उसकी सांसे भी आग उगल रही थी। मैं उसके पास से उठा और दरवाजे को ओपन किया और एक शरीफ शहरी की तरह मैने सौ नंबर डायल किया। लेकिन मेरा खून इतना बह चुका था कि मुझे अब अपने होश कायम रखने मुश्किल हो रहे थे। कुछ ही पलों में मेरे होशोहवास गुम हो चुके थे।
****

जब मुझे होश आया तो खुद को किसी हॉस्पिटल के बिस्तर पर पाया।मेरे होश में आते ही नर्स रूम से बाहर की तरफ तेज कदमो से भागती हुई बाहर

निकली। कुछ ही देर में उस नर्स के साथ दो पुलिसवाले और एक डॉक्टर ने रूम में प्रवेश किया।

डॉक्टर ने मेरा एग्जामिन किया और कुछ देर मेरा चेकअप करने के बाद उन्होंने उन पुलिस वालों को मुझ से बात करने की इजाजत दी। एक एस आई लेबल का पुलिस अधिकारी था और एक हवलदार उनके साथ था।

"हा तो जनाब अब कैसा फील कर रहे है आप? उस पुलिसिये ने जिसकी नेम प्लेट पर दामोदर दास लिखा हुआ था मुझ से नरमी के साथ पूछा।

"अभी तो ठीक ही महसूस कर रहा हूँ सर? मैने अदब से जवाब दिया।

"गोली किसने मारी थी आपको? दामोदर दास के सवाल से मैं एकदम चौंक गया था।

"क्या मतलब? मुझे गोली मारने वाली तो मेरे साथ ही बेहोश पड़ी थी? वो आपको नही मिली क्या रूम में? मैने सवाल के बदले में सवाल किया।

"हमें उस रूम में आपके सिवा कोई नही मिला? आप बेहोशी की हालत में वहां पड़े थे? आपकी बाजू में गोली लगी थी? बहुत खून बह चुका था आपका? हम तत्काल आपको इस हॉस्पिटल में लाये? और होटल से तो हमे कुछ और ही जानकारी मिली है आपके बारे में? दामोदर दास की आवाज बात करते करते अब अपने पुलिसिया अंदाज में आ चुकी थी।

"क्या जानकारी मिली है आपको सर जी" पहले वो ही बता दो?"...... न जाने क्यों मेरी आवाज में भी व्यंग का पुट आ गया था।

"आप कहां हो सर ? मैं कब से आपको फ़ोन लगा रही हूँ? आपका फ़ोन लग ही नही रहा है? सुबह से ट्राई कर रही हूँ? रागिनी एक सांस में बोले चली जा रही थी।

"ओये शताब्दी एक्सप्रेस ? जरा मेरी बात भी सुन ले या अपनी ही बोले जाएगी? मैने एक हल्की सी झिड़की रागिनी को लगाई।

"सॉरी सर ! आप बोलिये? ये बोलकर रागिनी ने चुप्पी साध ली।

"सुन मेरा एक छोटा सा एक्सीडेंट हो गया है? मैं इस वक़्त एक हॉस्पिटल में एडमिट हूँ! तुम जल्दी से यहां आ जाओ? मैंने रागिनी को फ़ोन पर गोली लगने की बात बताना उचित नही समझा।

"सर ये किस हॉस्पिटल में हूँ मै इस समय? मैंने दामोदर दास से पूछा।

"उन्हें बोल दो! रामलीला मैदान के पास जो एल एन जे पी हॉस्पिटल है उसके वार्ड नम्बर 25 में आ जाये"...... दामोदर दास ने इतनी तेज आवाज में बोला कि रागिनी ने मेरे बिना बताए ही सुन लिया होगा?

"सुना तुमने ? इसी हॉस्पिटल में आ जाओ जो अभी तुमने सुना है? मैंने रागिनी को बोला।

"अभी आती हूँ सर ! कोई घबराने वाली बात तो नही है"... रागिनी की आवाज ऐसे आ रही थी जैसे किसी कुएं से आ रही हो।

"नही कोई घबराने वाली बात नही है? तुम आ जाओ बस? मैंने रागिनी की बोला।

"मेरा नाम अनुज है ! मैं एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ? और इस समय मैं मशहूर उधोगपति सुदर्शन भल्ला के परिवार में हो रही मौतों के मामले में इन्वेस्टीगेशन कर रहा हूँ। मैने अपने शब्दों को विराम देकर उन दोनों पुलिसियों की तरफ देखा। मुझे उनके चेहरों पर किसी किस्म का कोई भाव नही दिखा।

"तो जासूस साहब फिर तो वो पिस्टल भी आपकी ही होगी जिससे आपका ही शिकार करके वो मैडम गायब हो गयी? इस बार फिर उसी हवलदार ने अपना ज्ञान बघारा।

"बाकी बाते आपको बाद में बताऊंगा ? पहले मुझे एक अर्जेंट कॉल करना है? मैने दामोदर दास की तरफ देखकर बोला।

"काल तो आप जिसे कहोगे हम करवा देंगे? लेकिन हमारे सवालो का जवाब दो पहले? दामोदर दास की आवाज पहले की अपेक्षा इस बार कुछ नरम थी।

"आप मेरी असिस्टेंट को फ़ोन करके यहां बुला दीजिये? मुझे तो खुद आपको पुरी घटना बतानी है? मैने दामोदर दास को फिर से बोला।

"ठीक है आप नंबर बोलिये? दामोदर दास ने अपनी जेब से अपना मोबाइल निकाल कर बोला।

मैंने रागिनी का नंबर उसे बोला। मुझे रागिनी का नंबर मुहजुबानी याद था। दामोदर दास ने रागिनी को फ़ोन मिलाया। 2-4 बेल के बाद ही रागिनी ने फ़ोन उठा लिया।

"हेलो रागिनी? मैं अनुज बोल रहा हूँ! मैंने रागिनी को बोला।

"ठीक है सर मैं आती हूं अभी ? ",...., ये बोलकर रागिनी ने फ़ोन काट दिया।

अभी फ़ोन रखा ही था कि डॉक्टर साहब ने रूम में कदम रख दिया।

"सर इससे ज्यादा मैं अभी मरीज से आपको पूछताछ की इजाजत नही दे सकता ? अब आप इन्हें रेस्ट करने दो ? डॉक्टर साहब ने आते ही अपना फरमान सुनाया।

"डॉक्टर साहब अभी तक तो कोई पूछताछ हुई ही नही" दामोदर दास ने डॉक्टर की बात का प्रतिवाद किया।

"मैं कुछ नही जानता सर जी ? आप अब शाम को 4 बजे के बाद आकर इनसे जो पूछना है वो पूछ लेना ? लेकिन अभी हमे इन्हें कुछ मेडिसिन देनी है ? इनका ब्लड बहुत बह चुका है ? इन्हें रेस्ट की जरूरत है अभी ? डॉक्टर साहब अपनी बात से टस से मस नही हो रहे थे।

"ठीक है डॉक्टर साहब ? हम शाम को आ जायेंगे ? ये बोलकर दामोदर साहब मेरी और देखकर बाहर की और निकल लिए।

"सतीश तुम यही कमरे के बाहर ही तैनात रहना ? किसी भी अजनबी को रूम में मत जाने देना ? जाते जाते मुझे दामोदर दास की आवाज सुनाई पड़ी। उसके बाद मुझे ग्लूकोज़ में मेडिसिन मिलाकर दी जाने लगी। डॉक्टर साहब के जाने के बाद सिर्फ वो नर्स रूम में रह गयी थी। कोई और समय होता तो मैं उस नर्स को भी शीशे में उतारने की कोशिश करता ? लेकिन अभी जिस दुर्घटना का मैं शिकार हुआ हूँ ? उसकी मूल में मेरी यही आदत थी। मैने मुस्करा कर

एक नजर उस नर्स पर डाली और फिर अपने ख़याला में डूबकर रागिनी का इंतजार करने लगा।

भल्ला परिवार के इस केस में जो अभी तक अंधकार छाया हुआ था? वो अब कुछ कुछ छंटता नजर आ रहा था? शालिनी के रूप में मुझे आगे बढ़ने की एक कड़ी मिल गई थी? शालिनी एक शातिर खिलाड़ी थी? उससे अब उसी के तरीके से निबटना होगा?

लेकिन मेरी समझ मे एक बात नही आ रही थी? कि जब वो मेरे साथ ही बेहोश हुई थी? तो वो पुलिस को क्यो नही मिली? मेरा पर्स और मोबाइल फिर से गायब हो चुके थे? अब शालिनी का नंबर मुझे फिर से सुदर्शन भल्ला से लेना पड़ेगा।
अभी तो अपने साथ हुए इस घटना के बारे में भी भल्ला साहब को अवगत करवाना था। शालिनी के बारे में भल्ला परिवार से जानना था। उसके लिए पुलिस की मदद से मुझे शालिनी का स्केच बनाना था। अब कम से कम एक चेहरा तो था ? जिसे अब ढूंढना था। इन्ही सब ख्यालो में डूबे डूबे मैं नींद के आगोश में समा गया।
****

रागिनी के आने के बाद मेरी आँख खुली। वो बस अवाक सी मुझे देखे जा रही थी! मैं उसकी ओर देखकर हल्का सा मुस्कराया।

"आप तो बोल रहे थे कि छोटा सा एक्सीडेंट हुआ है, यहां तो महाराज दूसरी दुनिया मे कूच करने का इरादा किये बैठे थे? रागिनी ने अजीब से स्वर में मुझे कहा।

"मैं तो अभी इसी दुनिया मे हूँ" मैने उसके तंज को अपनी खिसयानी हँसी से काटना चाहा।

"गोली अगर और 6 इंच इधर घूम जाती तो दूसरी दुनिया का ही टिकट कट जाता आपका? इतना खतरा क्यो मोल लेते हो? रागिनी के स्वर में गुस्सा था।

"अपना धंधा ही ऐसा है कि कभी कभी धोखा हो जाता है यार?".... मैंने रागिनी को वस्तुस्थिति समझानी चाही।

"धन्धे में आंख नाक कान सब खुले भी रखने चाहिए? या अंधे होकर कही भी घुस जाओ? वो बाहर बैठे पुलिस वाले भैया बता रहे थे कि किसी औरत ने अपना शिकार बना लिया तुमको? ये औरतो के सामने हीरोपंती बन्द कर दो नही तो किसी दिन कोई औरत ही ले डूबेगी तुमको? रागिनी को पता नही हुआ क्या था।

"अब बिना किसी के नजदीक जाए तो किसी की असलियत पता नही चलती है? अब इस केस में मेरे पास एक क्लू तो है जिसके सहारे मैं अब इस केस को सुलझा सकता हूँ? मैने अपने किये धरे को सही ठहराना चाहा।

"लेकिन ऐसे गोली खाकर किसी के बारे में पता लगाओगे? पहले तो ये बताओ वो कमीनी थी कौन और उसके पास पहुंचे कैसे आप?

रागिनी के इस सवाल के जवाब में मैने सुबह से लेकर रात तक के घटनाक्रम को विस्तार से रागिनी को सुना दिया।

"आपने ये सब मुझे सुबह क्यो नही बताया? रागिनी ने जलती आंखों से मुझे घूरा।

"बस बस अब ज्यादा बनो मत! और आराम करो ये माफी वाफी की नौटंकी बन्द करो? और ये बताओ वो कमीनी को कैसे ढूंढे? उसको तो छोड़ेंगे नही अब? रागिनी का गुस्सा सातवे आसमान पर था।

"सोचा है उसके बारे में भी कुछ? मैने उसे देखा है तो मैं पुलिस की मदद से उसका एक स्केच तैयार करवा कर पहले तो भल्ला फैमिली को ही चेक करुगां की उनमे से कोई उसे जानता है कि नही? और अपने मुखबिर को भी इस काम पर लगाता हूँ? ढूंढ तो मैं उसे पाताल से भी लूंगा अब? मैने अपने इरादों की दृढता रागिनी को दिखाई।

"आप उसका स्केच बनवा कर मुझे दिजीये? उसे मैं खुद ढूंढ लूंगी? आप को अभी 15 दिन कुछ नही करना है? जनाब का चेहरा देखो कैसा पीला पड़ गया है? कितना खून बह गया है? और अभी भी चैन नही है? रागिनी की डांट अभी तक खत्म नही हुई थी।

"अरे खून का क्या है यार 10-15 गिलास अनार का जूस पीऊँगा तो फिर से एक दो बाल्टी खून बन जायेगा? मैंने ये बात कुछ इस अंदाज में कही की रागिनी की बेसाख्ता हँसी छूट पड़ी। अभी रागिनी की हँसी रुकी भी नही थी कि कमरे में एस आई दामोदर दास और सतीश नाम के उस हवलदार ने फिर से प्रवेश किया जो सुबह से मेरी रखवाली में तैनात था।

"और जासूस साहब अब कैसे हाल है आपके? एस आई दामोदर दास ने रुम में प्रवेश करते ही पूछा।

"अभी तो जो भी हाल है आपके सामने ही है सर? मैने भी दामोदर जी की टोन में ही उन्हें जवाब दिया।

"चलिए अब बातो में वक़्त जाया नही करते है? आप अपने बयान दर्ज करवाइये अनुज साहब? दामोदर दास सीधे मतलब की बात पर आते हुए बोले।

"मैंने भल्ला साहब के केस के बारे में सुबह आपको बताया था! कल सुबह किसी ने भल्ला साहब की धर्मपत्नी को भी जहर देकर मार दिया था! मैं उसी के सिलसिले में जब हॉस्पिटल पहुंचा तो वहां मेरे पास एक शालिनी नाम की महिला मेरे पास आई और उसने कहा की वो भल्ला परिवार में हो रही इन घटनाओं के बारे में काफी कुछ जानती है? और उसने मुझे पहाड़गंज के लीला होटल में रात को 9 बजे मिलने के लिए बुलाया!"......... ये बोलकर मैने रागिनी को थोड़ा सा पानी देने का इशारा किया। रागिनी ने तुरंत मुझे पानी दिया।

"आप अपनी इन असिस्टेंट को वहां साथ लेकर नही गए?".... दामोदर दास ने रागिनी की और देखते हुए पूछा।

"नही मुझे शालिनी ने वहां अकेले ही बुलाया था? इसलिए मैं इन्हें साथ लेकर नही गया था".... मैंने रागिनी से नजरें चुराते हुए कहा।

"अच्छा फिर वहां गोली चलने की नौबत कैसे आ गई? दामोदर दास अपनी पूछताछ में कोई कसर नही छोड़ना चाहते थे।

"मेरे वहां पहुंचते ही उसने मुझे अपने हुश्न के जाल में फसाना चाहा? उसने मेरे साथ सेक्स करने की काफी बार कोशिश की ? लेकिन मैं हर बार बातो में लगाकर उससे अपने मतलब की बाते उगलवाने में लगा था? लेकिन एक पॉइंट पर वो बहुत बुरी तरह फंस गई थी? और मुझे लगता है कि मुझे गोली

मारने की वजह भी वही पॉइंट बना "...... मैंने दामोदर दास को बताया।

" कौन सा पॉइंट ? ऐसा क्या जान गये थे आप उसके बारे में की उसने आपकी जान लेने की कोशिश की ? दामोदर दास की नजरें बराबर मेरे चेहरे का एक्सरे खींच रही थी।

" मुझे कल सुबह सुदर्शन भल्ला ने बताया था की कोई औरत उन्हें फ़ोन पर उनके पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दे रही है ? उन्होंने मुझे वो फ़ोन नंबर भी दिया था ! मैंने इस बारे में शालिनी से भी पूछा था की वो फ़ोन तुम करती हो क्या ? लेकिन उसने इनकार कर दिया ? फिर मैंने अपने मोबाइल से उस नंबर को डायल किया तो शालिनी के फ़ोन की घण्टी बजी ! बस फिर उसने मेरा घण्टा बजा दिया " ये बोलकर मैं एक फीकी सी हँसी हस दिया।

" मिस्टर अनुज मुझे उम्मीद है कि आप सब सच बोल रहे होंगे ? हम उस महिला को ढूढ़ने की पूरी कोशिश करेंगे ? आप उसका कुछ हुलिया बयान कीजिये ? दामोदर दास सुबह की अपेक्षा अब ज्यादा मेहरबान नजर आ रहा था।

" हुलिया क्या सर मैं उसका पूरा स्केच बनवा दूँगा ? आप अपने स्केच आर्टिस्ट को बुलाइये ? मैंने दामोदर दास को कहा।

" हा सर ! वैसे भी ये जनाब लड़कियो का हुलिया बड़ी बारीकी से बयान कर सकते है ? इस काम में तो इन्होंने बाकयदा भारत सरकार से डिग्री भी ली हुई है ? इस पूरी बातचीत के दौरान रागिनी ने पहली बार अपना मुंह खोला भी तो मेरी बखिया उधेड़ने के लिये। मैंने रागिनी को घूर कर देखा। रागिनी को छोड़ो

वो दोनों पुलिसिये भी इस बात पर मंद मंद मुस्करा रहे थे।

"ठीक है अनुज साहब ? कल हम स्केच आर्टिस्ट को लेकर आते है ? तब तक अपना ख्याल रखना ? अभी हम उस लीला होटल की भी जांच करते है ? फिर मिलते है !"...... ये बोलकर दामोदर दास ने मेरी और अपना हाथ बढ़ाया।मैंने भी अपना हाथ बढ़ाकर उनका हाथ थामा। उसके बाद वो दोनों रुम से रुखसत हो गए।

अब रुम में मैं और ये काली बिल्ली उर्फ रागिनी रह गए थे। काली बिल्ली मीन्स ब्लैककेट से था।

रागिनी अभी किसी गहरी सोच में डूबी हुई थी।

"आज रात को मैं होटल लीला में जाऊगी ? रागिनी ने अचानक से धमाका सा करते हुए कहा।

"ये क्या बोल रही हो तुम ? तुम अकेली क्या कर लोगी वहां ? मैं नही चाहता था कि रागिनी इस झमेले में अकेले फंसे।

"जो अकेले जाकर आप नही कर पाए वो अकेले जाकर शायद मैं कर पाऊ ? रागिनी की आवाज में गजब का आत्मिविश्वास झलक रहा था।

"करोगी क्या वहां जाकर" मैंने लगभग सहमति सी दे दी थी वहां जाने की।

"आपने बताया था कि उसे पिस्टल के बट से उसे बेहाश कर दिया था ! लेकिन पुलिस के पहुचने से पहले वो आपका पर्स मोबाइल और पिस्टल भी लेकर गायब हो गयी ? जो औरत तुम्हे जान से मार डालना चाहती हो वो होश में आने पर तुम्हे जिंदा छोड़कर कैसे जा सकती है ? उसे बेहोशी की

हालत में ही किसी ने गायब किया है? और ये सब बिना होटल वालो की मिलीभगत के नही हो सकता ?"..... रागिनी ने गजब का सोचा था।
"कह तो तुम सही रही हो? लेकिन प्लान क्या है तुम्हारा? मैने रागिनी के मुखड़े की और देखा।
उसके बाद रागिनी मुझे अपना प्लान समझाने लगी? जैसे जैसे वो अपना प्लान मुझे बताती गई वैसे वैसे मेरे चेहरे की चमक बढ़ती गई लेकिन साथ ही साथ कुछ आशंकाओ के बादल भी मन मे घुमड़ने लगे थे?

****

मैने रागिनी को लीला होटल में जाने की इजाजत दे तो दी थी लेकिन मैं उसके लिए चिंतित भी था? क्योकि रागिनी के लिए ये पहला मौका था ! जब वो ऐसी किसी जगह पर अकेली जा रही हो! जहाँ ये भी न पता हो कि उसका पाला किन लोगों से पड़ सकता है? डॉक्टर मुझे बिस्तर से उठने की अनुमति नही दे रहे थे। अभी मै इस उधेड़बुन में उलझा ही हुआ था कि अचानक से मेरे दिमाग की बत्ती जल उठी। मुझे अपने खबरी का ध्यान आया। मैं अपने खबरी को रागिनी का ख्याल रखने को बोल सकता था। मैंने तत्काल अपने खबरी को फ़ोन लगाया। दो तीन बेल बजने के बाद ही मेरे खबरी ने फोन उठा लिया।

" गुरुदेव प्रणाम! उधर से मेरे खबरी ने फ़ोन उठाते ही बोला।

" बेटा तेरे गुरु की तो इस समय ऐसी तैसी हुई पड़ी हैं? मैंने बातो की भूमिका बनाने के लिए बोला।

"क्यो गुरु ऐसा क्या हो गया? उधर से खबरी की आवाज में जिज्ञासा झलक रही थी।

"तेरे गुरु को किसी ने बाजू में गोली मार दी है! इस समय हॉस्पिटल में हूँ" मैंने अपने खबरी को अपना हाल सुनाया।

"गुरु दिल्ली शहर में ऐसा कौन माई का लाल पैदा हो गया जो आपको गोली मार दे? नाम बताओ साले का ? उसकी पूरी जन्मकुंडली खोद कर निकाल लाऊँगा" खबरी लाल मुझे गोली लगने की बात पर आवेश में आ गया था।

"वो साला नही साली है? तू हॉस्पिटल आजा! बाकी की रामकथा तुझे यही सुना दूंगा" ये बोलकर मैंने खबरी को हॉस्पिटल का नाम बताया।मेरे ख़बरी ने जल्द से जल्द हॉस्पिटल पहुचने का बोलकर फोन रख दिया।

"खबरी को किसलिये बुलाया हैं? रागिनी ने मुझ से पूछा! जो कि अब तक चुपचाप हमारी बात सुन रही थी।

"उसे भी किसी काम पर लगाना हैं? ये बोलकर मैने चुप्पी साध ली, और आँख बंद करके सोने का नाटक करने लगा।

"नौटंकी बंद करो सोने की और ये बताओ कि खबरी को क्यो बुलाया है?" पता नही ये लड़की कैसे मेरी रग रग से वाकिफ थी।

"आज रात को जब तुम होटल लीला में जाओगी तो ये तुम्हे कवर करेगा? किसी भी मुश्किल परिस्थिति में तुम्हारी हेल्प करेगा? मैंने अब रागिनी को सच्चाई बताना ही उचित समझा।

"क्यो मुझ अकेली पर भरोसा नही है क्या आपको? रागिनी ने नाराज स्वर में बोला।

"कमीने अगर हसीनाओ का साया मुझ से दूर हो गया तो मैं तो बिना गोली खाये वैसे ही मर जाऊँगा ? मेरे ये बोलते ही सभी के मुंह से बेसाख्ता हँसी छूट पड़ी।

"चलो अब बहुत हो गया ! अब काम की बात सुन लो " इसके बाद मैंने अपने खबरी को अब तक कि पूरी कहानी बता दी।

"ठीक हैं गुरु ? मेरे रहते हुए रागिनी बहन का कोई बाल भी बांका नही कर सकता ? खबरी पूरी बात सुनकर जोश में बोला।

"आप चिंता मत करो भैया ? आपकी बहन भी जुडो कराटे में ब्लैक बेल्ट है ? इतनी आसानी से किसी के चुंगल में नही फसने वाली ? रागिनी का आत्मविश्वास भी कम नही था।

"ठीक है फिर ? जाओ ! आज की रात कत्ल की रात होनी चाहिए ? मैंने रागिनी और खबरी दोनो को कहा।

"लेकिन हम उस औरत को पहचानेगे कैसे ? इस बार मेरे खबरी ने ये सवाल उठाया।

"तुम क्या सोच रहे हो कि इस गोलीकांड के बाद भी वो उस होटल में बैठी होगी ? उसे वहां पहचानने की जरूरत नही पड़ेगी ? हमे वहां से उसके बारे में कोई क्लू हासिल करना है प्यारेलाल " मैंने खबरी को समझाया।

"ठीक है गुरु ! आज रात को उसकी पूरी जन्मकुंडली खोज निकालेंगे ?" मेरे खबरी की बात पर मुझे पूरा भरोसा था।

इन बातों के बाद हम रात के और ढलने का इंतजार करने लगे।रात को दस बजे के करीब रागिनी और

खबरीलाल दोनो होटल लीला के लिए हॉस्पिटल से रवाना हो गए।

****

अब आगे की कहानी रागिनी से सुनो :-

जासूसी की दुनिया मे कदम रखने के बाद आज पहली बार अनुज सर मेरे साथ नही थे। किसी बात का डर तो मुझे नही था। लेकिन एक रोमांच जरूर मेरे मन में था। लीला होटल में मुझे एक ऐसी महिला को ढूढ़ना था जिसका मुझे सिर्फ नाम पता था। जिसके हुलिए के बारे में मैं अंजान थी।

अनुज सर ने सही समय पर सही बात सोची और खबरी को मेरे साथ भेज दिया था। हॉस्पिटल से कोई 20-25 मिनट के बाद हम होटल लीला के सामने खड़े थे।

मैने पहले होटल में प्रवेश किया ! मैं सीधा रिसेप्शन पर पहुंची।

"एक्सक्यूज़ मी ! मुझे एक रूम चाहिए ! मिल सकता है क्या ? मैंने रिसेप्शन पर बैठे उस अधेड़ उम्र के व्यक्ति से पूछा जिसके कनपटी के बाल आधे काले और आधे सफेद थे।

"आप अकेली है या आपके साथ कोई हैं ?"

"जी फिलहाल तो मैं अकेली हूँ ? लेकिन कल शाम तक मेरे हस्बैंड भी यहां पहुंच जाएंगे ? दरअसल मैं जयपुर से सीधा दिल्ली आ गयी और मेरे हस्बैंड को अहमदाबाद से आना है तो एक दिन लेट हो गए आने में ? मैंने पहले से सोची समझी कहानी उस अधेड़ आदमी को सुनाई।

"जी आपकी कोई आई डी मिलेगी क्या? वो क्या है कि सरकारी ऑर्डर है कि किसी भी बिना पहचान के किसी को भी रुम नही देना"

"जी जरूर? मैंने अपनी एक आईडी जिस पर जयपूर का एड्रेस अंकित था उसे दिखाई। उस व्यक्ति ने उस आई डी की फ़ोटो कॉपी करवा कर अपने पास रख ली। इन सभी बारीकीयो पर हम पहले ही सोच चुके थे। इसलिए मेरा पहले से ही बना जयपुर का आई डी यहां काम आ गया। क्योंकि मैं दिल्ली में अभी 3-4 वर्षो से ही रहने लगी थी । हम रहने वाले जयपुर के ही है।

"करीम मैडम को रुम नंबर 21 में ले जा? और मैडम को कोई भी तकलीफ़ नही होनी चाहिए" उन अधेड़ इंसान ने करीम नाम के उस अटेंडेंट को अच्छे से समझाया।

मैं होटल का रेंट एडवांस देकर करीम के साथ जाने के लिए मुड़ी ही थी, की मुझे खबरी को भी होटल में आते हुए देखा। जब खबरी मेरे पास से गुजरा तो मैंने जानबूझकर करीम से पूछा।

"भैया रुम नंबर 21 की साफ सफाई तो अच्छी है ना?"

"जी मैडम एकदम चकाचक है कमरा" करीम ने तुरंत मेरी बात का जवाब दिया।

इस तरह मैंने खबरी को बता दिया कि मैं रुम नंबर 21 में ठहरी हूँ।

खबरी भी एक नज़र मुझ पर डाल कर रिसेप्शन पर पहुंच चुका था और उसने भी अपने लिए एक रुम की मांग कर दी थी। मैं करीम के पीछे पीछे चल रही

थी करीम होटल की पहली मंजिल की और बढ़ चला था।

पहली मंजिल पर पहुचने के बाद मैने एक रुम पर पुलिस की सील लगी हुई देखी। अब करीम से बात करने का मुझे रास्ता मिल गया था।

"करीम इस रुम पर ये सील कैसी लगी हुई है? यहां कोई गलत काम तो नही होते?" मैंने अपनी बातो से चिंता प्रकट की।

"नही मैडम? ऐसी तो कोई बात नही है? वो कल यहां दो कस्टमर में आपस मे झगड़ा हो गया था! इसी वजह से पुलिस आई थी मैडम? करीम वही पट्टी हमें पढ़ा रहा था जो होटल वालो ने उसे पढाई होगी।

"किसका झगड़ा हुआ था? कौन लोग थे? मै सहज भाव से करीम से पूछी।

"अब पता नही मैडम कौन लोग थे? एक औरत थी और एक आदमी था! शायद यहां मौज मस्ती करने आये होंगे? फिर पैसो वैसो के पीछे कुछ खट पट हुई होगी और उस औरत ने उन साहब को गोली मार दी? करीम के पास अनुज सर से बिल्कुल उलट कहानी थी।

"ये सब तुम्हे किसने बताया?" हमारी बातचीत के दौरान ही करीम रुम का ताला खोल चुका था, और हम रुम में प्रवेश कर चुके थे।

"होटल में तो सब यही बोल रहे है? क्योकि यहां ज्यादातर इसी तरीके के केस होते है? लोग अय्यासी के लिए लड़की को लाते है फिर पैसो के पीछे झगड़ा करते है? करीम अब धीरे धीरे मुझ से खुल रहा था।

"करीम रूम तो शानदार है तुम्हारा? यहां रूम के अलावा और कौन कौन सी सर्विस देते हो? मैंने करीम से कुछ अंदुरुनी जानकारी चाही।

"जी आप बोलिये जो आपको चाहिए वही मिल जाएगा? करीम ने अजीब से तरीके से मुझे देखकर बोला।

"ठीक है करीम? अभी मैं फ्रेश होकर तुम्हे बुलाती हूँ! तब तक के लिए ये रखो!" मैंने 500 का नोट करीम की और बढाते हुए बोला।उस नोट को देखकर करीम की आँखों में एक चमक उभर आई।

"जी थैंक्यू मैडम! जब आप बुलाओगी तब हाजिर हो जाऊँगा? ये बोलकर लगभग झपट्टा मारने के अंदाज में करीम ने उस नोट को अपने कब्जे में किया।

करीम के जाने के बाद मैंने एक बार गैलरी में झांककर देखा तो मुझे खबरी की मेरे रूम से एक कमरा छोड़कर दूसरा कमरा खोलते हुए देखा। मैंने अब अपने रूम का दरवाजा बंद किया और फ्रेश होने के लिए वाशरूम में घुस गई।

किसी होटल में इस तरह रात में रुकने का ये मेरा पहला अवसर था। अभी तक तो कोई संदिग्ध गतिविधि मुझे इस होटल में नही दिखी थी। लेकिन अभी रात बाकी थी बात बाकी थी।मैं फ्रेश होकर बाहर आई।

अनुज सर से अभी संपर्क साधने का कोई भी साधन नही था? उनका मोबाइल फोन एक बार फिर से गायब हो चुका था, और आज दिन भर इस बारे में ख्याल ही नही आया कि सर के पास मोबाइल नही है।

मैंने इण्टरकॉम पर करीम को भेजने के लिए बोला। कुछ ही पलों में बन्दा मेरे सामने हाजिर था।

" रेड वाइन मिल सकती है यहां पर ? मैंने करीम से पूछा।

"जी मैडम मिल जाएगी ! उसके साथ कुछ और भी ऑर्डर हो तो दे दो ? करीम के ऐसा बोलने पर मैंने कुछ खाने के सामान का भी आर्डर साथ में दिया।

करीम लगभग बीस मिनट के बाद सभी सामान मेरे सामने लेकर हाजिर था।

"करीम जबसे तुमने वो गोली मारने वाली बात बताई है तब से यहां मुझे कुछ डर सा लग रहा है ? तुम कोई दूसरा होटल बता सकते हो जहां मैं खुद को सेफ समझू ? मैंने करीम के सामने डर का झूठा नाटक करते हुए कहा।

"मैडम आपको यहां डरने की बिल्कुल जरूरत नही है ? आप यहां पूरी तरह सेफ है ? करीम सोने की अंडे देने वाली मुर्गी को अपने हाथ से नही जाने देना चाहता था।

"लेकिन कोई इतनी मामूली सी बात पर किसी को गोली से नही मार सकता ? तुम मुझे सच सच बताओ ? कि असल मे हुआ क्या था ? नही तो मुझे होटल बदलना पड़ेगा ? पहाड़गंज में गली गली में होटल है ? मैंने एक बार फिर होटल बदलने की धमकी दी।

इस बार मेरी धमकी का असर करीम के चेहरे पर साफ साफ देखा जा सकता था।

"लेकिन मैडम जो कुछ हुआ था? वो तो मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ? अब और क्या बताऊँ?" करीम ने असहाय से अंदाज में बोला।

"जो सच है वो बताओ? इस बार मेरा बोलने का अंदाज बदल चुका था।

"मैडम वो औरत हमारे होटल में पिछले एक हफ्ते से रुकी हुई थी! हर रात को अलग अलग लोग उससे मिलने आते थे? हमे लगा कोई धंधे वाली होगी? लेकिन कल जब उस आदमी को गोली मार दी तब पता चला की वो तो कोई बहुत ही खतरनाक औरत थी? करीम की आवाज खुद ब खुद नीची होती जा रही थी।

"तुम्हारे होटल में कोई भी लड़की इस तरह आकर अपना धंधा चला सकती है क्या? तुम अभी भी झूठ बोल रहे हो करीम? कम से कम मुझे तुमसे तो ये उम्मीद नही थी? अब मैंने दूसरे हथकंडे आजमाने की सोची।

" अब क्या करे मैडम ? कई बार हमें भी आंख बंद करके रहना पड़ता है? यहां कॉम्पटीशन इतना है कि हम नही करने देगे तो कोई दूसरा फ़ौरन उसी काम को करने के लिए तैयार बैठा है? करीम ने अपने धंधे की मजबूरी गिनाई।

"करीम मुझ में एक गंदी आदत है कि जब किसी बात का कीड़ा मेरे दिमाग मे घुस जाता है तो वो जब तक नही निकलता? तब तक मुझे चैन नही पड़ता? मैंने इस बार हल्की सी धमकी भरे अंदाज में उसे बोली। मेरे इस रुख से करीम के चेहरे के हाव भाव भी बदल चुके थे। अब वो शायद मुझे कोई सायको समझ रहा था? जो किसी बात का आसानी से पीछा नही छोड़ती।

"क्या मतलब मैडम?" इस बार बड़ी देर के बाद करीम के मुंह से बोल फूटे।

"मतलब साफ है! मुझे सच सच बताओ कि कल रात को असल मे यहां हुआ क्या था? अब मैं असल मुद्दे पर आना चाहती थी। आज पहली बार मुझे अपने काम मे इतना मजा आ रहा था।

"जब उस औरत ने उन साहब को गोली मारी तब तुम कहा थे? मैंने अब किसी पुलिसवाली की तरह सवाल पूछा। और यकीन मानिए करीम के मुंह से भी यही सवाल निकला।

"मैडम आप पुलिस में हो क्या? करीम ने उलझन भरी आंखों से मुझे देखा।

"ऐसा ही समझो? और जो भी मैं पूछू उसका सच सच जवाब दो? नही तो अभी सिर्फ एक कमरे पर सील लगी है सुबह तक पूरे होटल पर सील लगवा दूंगी? तुमने खुद कबूल किया हैं की बाहर से लड़कियां आकर यहां धन्धा करती है? तेरी पूरी रिकॉर्डिंग है मेरे पास? सोच ले तेरा मालिक तो तुझे जिंदा नही छोड़ेगा? अगर इस होटल पर सील लग गई तो? मैं करीम को डराने का अपना आखिरी दांव चल चुकी थी।

"मैडम मैं तो गरीब आदमी हूँ? मैंने आपका क्या बिगाड़ा है? आप मुझे तो बख्श दो? चाहो तो अपने पैसे वापस ले लो?" करीम मेरे आगे गिड़गिड़ाया।

"अगर मेरी बात मानोगे तो ऐसे नोट तो तुम्हे और भी दे दूंगी? लेकिन मुझे तुमसे सिर्फ एक बात जाननी है कि उस औरत को तुम लोगो ने इस होटल में कहां छुपा रखा है? या तो आराम से बता दो नही तो कल सुबह इस होटल पर बुलडोजर चलवा कर उसे

पाताल से भी खोद कर ढूंढ निकालूंगी? मैंने अपनी धमकी को बिल्कुल पुलिसिया अंदाज में एक बार फिर दोहराया। धमकी देने के साथ साथ इस बार मैंने 2000 का एक गुलाबी नोट उसकी आंखों के आगे लहराया।

किसी ने सच ही कहा है कि पैसा खुदा तो नही लेकिन खुदा से कम भी नही और इसी खुदा को पाने के लिए इस खुदा के बन्दे की आँखों मे लालच की परछाई साफ़ साफ़ देखी जा सकती थी।

"मेरा नाम तो कहीं नही आएगा ना मैडम?" लालच का तीर अपना काम कर चुका था।

"नही तुम्हारा नाम कहीं नही आयेगा ये मेरा वादा है तुमसे" मैंने इस आखिरी पल में उसकी हौसला अफजाई की।

"वो औरत इसी होटल की सबसे आखरी मंजिल के रुम में है? उसको भी कल उस हाथापाई में कुछ चोट आई थी? इस वक़्त वो उनका इलाज़ करवा रही है?" करीम ने फुसफुसा कर मुझे बोला।

करीम के बताने से मेरी आंखों में खुशी की चमक उभर आई। सबसे ज्यादा खुशी मुझे इस बात की थी कि मैं अनुज सर की उम्मीदों पर खरी उतरी थी।

मैंने वो 2000 का नोट करीम की जेब मे ठूसा।

"करीम कमरा नंबर बोल जिसमे वो मोहतरमा आराम फरमा रहीं है" मैने करीम से तत्काल उस कमरे के बारे में जानना चाहा।

"जी कमरा नंबर 37 हैं" करीम मेरे काम की आखिरी खबर मुझे दे चुका था।

अब शायद हम निर्विघ्न चौथी मंजिल तक जा सकते थे। अब हमने देर न करते हुए चौथी मंजिल की और सीढियो के रास्ते से आगे बढ़े। क्योकि हमें सीढियो का रास्ता ही खाली मिलने की उम्मीद थी। क्योंकि आजकल की आरामपसंद जिंदगी में लोग लिफ्ट का प्रयोग ज्यादा करते थे।

हम बिना किसी रुकावट के चौथी मंजिल पर पहुंचे। कमरा नम्बर 37 को ढूढने में हमे कोई कठिनाई नही हुई। कमरे का दरवाजा सिर्फ ढला हुआ था ? शायद इस समय किसी और के इस मंजिल पर आने की किसी को उम्मीद नही होगी। मैने दरवाजे को बिना आवाज किये खोला।

सामने का नजारा देख कर मेरे माथे पर पसीने की बूंदे उभर आई। कमरे में सेक्स का नजारा अपने पूरे उफान पर था।जो शख्स उस औरत के साथ रंगरलिया मनाने में मग्न था! उस शख्स को मैंने भल्ला निवास पर कई बार देखा था। मैंने अपने मोबाइल का कैमरा ऑन किया और उसे वीडियो मोड़ पर करके उनकी रंगरलीओ को अपने मोबाइल में कैद करने लगी।

भल्ला परिवार का केस शायद अब हल होने की कगार पर था। ये वीडियो शूट करने के बाद अब यहां से निकलने का हमारा इरादा था। अब आगे की रणनिति अनुज सर को बनानी थी।

मैंने लगभग दस मिनट की फ़िल्म को अपने मोबाइल में कैद किया। फ़िर अपने मुखबिर को इशारा करके मै लिफ्ट की और बढ़ गई। कुछ ही देर में हम लिफ्ट से नीचे आ गए। रिसेप्शन और लाबी में हमे होटल का कोई बन्दा इस वक़्त नही दिखा। हम बिना किसी रोकटोक के होटल से बाहर आ
गए।

****

हम सिर्फ 2 घण्टे के छोटे से समय मे अपने काम को खत्म करके हॉस्पिटल में अनुज सर के सामने पहुंच चुके थे। अनुज सर सो चुके थे। लेकिन हम इतने उत्साहित थे कि हमने अनुज सर को सोते से जगा दिया।

अनुज सर हड़बड़ा कर उठे। पहले तो उन्हें समझ ही नही आया कि उनके सामने कौन खड़ा है? फिर हमें वहां देखकर वो सकते में आ गए।

"क्या हुआ? वापस क्यो आ गए? कोई खतरा महसूस किया क्या वहां?" अनुज सर ने सहज स्वर में पूछा।

"नही सर हमारा काम खत्म हो गया तो हम वापस आ गए?" मैंने ये बोलकर सर को चौंका दिया था।

"क्या? इतनी जल्दी काम खत्म भी हो गया? तुम सच बोल रही हो ना?" अनुज सर को हमारी बात पर विश्वास ही नही हो रहा था।

"हा गुरु! काम खत्म करके ही वापस आये है? इस बार खबरी लाल ने मेरी बात का समर्थन करते हुए कहा।

"क्या हुआ वहां? विस्तार से बताओ?" इतना सुनने के बाद मैं किसी टेप रिकॉर्डर की तरह शुरू हो गयी। अनुज सर मंत्रमुग्ध से मेरी कहानी को सुनते रहे! जब मैंने बोलना बन्द किया तो हैरत से उनकी आंखें फटी की फटी रह गयी।

"तुमने दो लोगों को एक ही हाथ मे बेहोश कर दिया? अनुज सर के चेहरे पर अभी भी हैरानगी के भाव थे।

"आपको बताया तो था सर की जुडो कराटे में ब्लैक बेल्ट हूँ? भूल गए क्या आप सर?" मैं अभी भी उत्साह में थी।

"अच्छा तो वो मोहतरमा अभी भी उसी होटल में रंगरलिया मना रही है? लेकिन उन दोनो के होश में आने के बाद तो उसका होटल में रुकना नामुमकिन हो जाएगा?" अनुज सर को अभी मैंने वीडियो बनाने वाली बात अभी तक बताई नही थी।

"होने दो उसे वहां से गायब ? हमारे पास अब उसे पकड़ने का और भी जरिया है? अब वो और नही छुप पाएगी सर? मैंने सस्पेंस भरे स्वर में अनुज सर को बोला।

"क्या जरिया है? अनुज सर ने मेरी और जिज्ञासा से देखा।

"ये जरिया है? इस वीडियो को गौर से देखो! आपको सभी सवालों का जवाब मिल जाएगा?" ये बोलकर मैंने अनुज सर के आगे शालिनी की वो वीडियो ओपन कर दी?
(अब इससे आगे की रबदास्ताँ अनुज सर से सुनो)

मैं हैरत के साथ उस वीडियो को देख रहा था! सबसे ज्यादा मुझे जिस बात ने चौंकाया वो थी शालिनी के साथ भल्ला परिवार के सदस्य की मौजूदगी ने? अब ये स्पष्ट हो गया था कि सारा खेल भल्ला परिवार के अंदर से ही खेला जा रहा था। इस खेल को खेलने के पीछे मक़सद भी सिर्फ एक ही हो सकता है वो है दौलत का लालच?

इतनी अथाह दौलत के बावजूद वो कौन सा लालच होता है कि इंसान अपने रिस्तो तक का खून कर डालता है। उस वीडियो में शालिनी के साथ जो

इंसान रंगरलियों में लीन था उस शख्स का नाम गुलशन भल्ला।

गुलशन भल्ला से अभी तक हमारी आमने सामने की मुलाकात कभी नही हुई थी ? न ही उसकी धर्मपत्नी से हमारी मुलाकात हुई थी ? हा दूर से देखा जरूर था।

अब कल सुबह गुलशन भल्ला की पूरी बायोग्राफी को खोद कर निकालना था।

"जीती रह ?! तुम्हे तुम्हारा मनपसंद दूल्हा मिले और जल्दी से तुम्हारे आंगन में दस बारह बच्चो की किलकारिया गूंजे !" मैने खुशी में कुछ ज्यादा बड़ा आशीर्वाद ही दे दिया था रागिनी को।

"आर्शीवाद दे रहे हो या बददुआ दे रहे हो " मेरी बात सुनकर अंगारे बरसाती आँखों से मुझे देखकर रागिनी ने बोला।

"क्यो दस बारह बच्चो का आशीर्वाद बददुआ कैसे हुआ ? मैंने अब रागिनी से मज़े लेने की सोची।

"आज के युग मे दस बारह बच्चे कौन पैदा करता है ? आजकल इसे बद्दुआ ही माना जाता है" रागिनी अब अपनी बात पर अड़ गई थी

"तो तुम्ही बताओ तुम्हे कितने बच्चो का आशीर्वाद दूं ? मैने अब फैसला रागिनी पर छोड़ दिया।

अभी इस बात पर हमारी बहस को और लम्बा चलना था लेकिन तभी नर्स ने कमरे में प्रवेश किया।

"आप लोग आधी रात को इतना शोर क्यो कर रहे हो ? पेशेंट को आराम करने दो !" नर्स ने उन दोनों को झाड़ लगाते हुए कहा।

"सिस्टर ये मरीज ही सबसे ज्यादा शोर मचा रहे है? इनको ही चुप कराओ? हम तो चुप ही हैं सिस्टर" रागिनी ने सिस्टर को बोला।

"मैं आप सभी को बोल रही हूँ कि अब सभी शोर मचाना बन्द करे और मरीज को भी रेस्ट करने दे और खुद भी रेस्ट करे" सिस्टर ने नम्रतापूर्वक कहा।

ये बोलकर सिस्टर रूम से बाहर चली गई। उसके पीछे पीछे खबरी भी रूम से बाहर चला गया।

" रागिनी तुमने सच मे कमाल कर दिया? अब मुझे उम्मीद है कि हम कातिल तक बहुत जल्द पहुंच जाएंगे" मैंने रागिनी का आभार प्रकट किया।

"सर कोई आपको गोली मार कर आपकी जान लेने की कोशिश करे उसे ऐसे ही कैसे जाने दे सकती हूँ? अगर वहां मुझे गुलशन भल्ला न नजर आता तो उस महारानी का तो वही काम तमाम कर आती" रागिनी ने उसे वहां देखकर भी अपने गुस्से पर काबू रख कर समझदारी का परिचय दिया था।

"ठीक है रागिनी अब रात बहुत हो गई हैं? तुम भी थोड़ा सा सो जाओ? अब सुबह देखते है क्या होता है? ये बोलकर मैं अपने बेड पर लम्बा हो गया। रागिनी भी रूम में बिछी एक शेट्टी पर धरासाई हो गई। मुखबिर कही बाहर अपने सोने का जुगाड़ करने के लिए शायद निकल चुका था।
****

अगले दिन

पहाड़गंज का होटल लीला हर न्यूज़ चैनल की सुर्ख़ियो में था।
मेरा मोबाइल गुम हो जाने के बाद हाल फिलहाल रागिनी का मोबाइल ही मेरा सहारा था? और इस

वक़्त मोबाइल एक न्यूज चैनल का लाइव शो चल रहा था।

गुलशन भल्ला को होटल लीला में किसी ने गोली मार दी थी। हम एक बार फिर वही पहुंच गए थे, जहां से चले थे। रात को उस कातिल हसीना को होटल लीला में ऐसे ही छोड़ आना हमें भारी पड़ चुका था। कातिल हमारे सामने था लेकिन हमारी पहुंच से अब दूर हो चुका था।

मैं इन हालात में किसी भी तरह हॉस्पिटल से छुटकारा चाहता था ? मैं ऐसे बिस्तर पर पड़े पड़े तमाशा नही देख सकता था। मैंने रागिनी को जगाया। तभी बाहर से मेरा मुखबिर भी चाय लेकर आता हुआ नजर आया। उसके चेहरे का उड़ा हुआ फ्यूज बता रहा था कि गुलशन भल्ला की मौत की खबर उसे लग चुकी थी।

"गुरु पूरी गेम ही पलट गई है रात रात में ? वो औरत जो कोई भी है ? बहुत शातिर और बेरहम है गुरु ?" खबरी ने कमरे में घुसते ही बोला।

"क्या हुआ ? रागिनी शायद अभी भी नींद में थी ?

"रात को होटल लीला में गुलशन भल्ला का मर्डर कर दिया गया ? मैंने सुबह उठते ही रागिनी को वो मनहूस खबर सुनाई जिसने उसकी रात की मेहनत पर पानी फेर दिया था।

"जिस तरीके से वो कत्ल पर कत्ल करे जा रही है और एक ही परिवार से जुड़े लोगो के कत्ल कर रही है ? उससे तो एक ही बात पता चलती है कि वो जो कोई भी है ? बहुत जबरदस्त खता खाई हुई है भल्ला फैमिली से ? मैं किसी गहरी सोच में डूब कर बोला।

"इससे अच्छा तो उसे रात को ही दबोच लेना चाहिए था ? क्या पता गुलशन भल्ला तो बच जाता ?"

रागिनी को इस समय रात को वहां से चले आने का अफसोस हो रहा था।

"अब जो हुआ सो हुआ ? उस पर मिट्टी डालो ? अब कम से कम हमारे पास उस औरत की वीडियो तो है ? ये वीडियो उसे ढूढने में बहुत कारगर सिद्ध होगी" मैंने उन दोनों के मन से निराशा के भाव को दूर किया।

"अब आगे क्या करे ? रागिनी को कुछ सूझ नही रहा था।

"गुलशन के मारे जाने से एक बात तो सिद्ध हो गयी कि वो भी इस गेम का सिर्फ एक प्यादा था ? अगर वही इन सबका सूत्रधार होता तो उसकी जगह शालिनी की लाश वहां मिलनी चाहिए थी ? मैंने काफी सोच विचार कर बोला।

तभी न्यूज़ में ऐसी बात सामने आई जिसने हमारे होश उड़ा दिए। जिस वेटर को रागनी ने बेहोश किया था। वो जो कहानी बता रहा था, उसके मुताबिक गुलशन भल्ला की हत्या उस लड़की ने की हो सकती है जिसने उसे बेहोश किया था और उस होटल का केअर टेकर वो अधेड़ उम्र का आदमी भी उसके बयान की पुष्टि कर रहा था।

रागिनी ने घबरा कर मेरी और देखा ? मैंने उसे आँखों ही आँखों में आश्वाशन दिया कि कुछ नही होगा।

हमारे पास वो वीडियो था जिसमे गुलशन भल्ला उस शालिनी नाम की औरत के साथ मस्ती कर रहा था। मैं उस वीडियो से पूरी शक की सुई को शालिनी की तरफ आसानी से घुमा सकता था। लेकिन इस बार पता नही ये कैसा केस पल्ले पड़ा था कि बार बार

हमें ही कानूनी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था।

मुझे अब यहां की पुलिस को कॉन्फिडेंस में लेना आवश्यक हो गया था।

मुझे अब दामोदर दास के आने का इंतजार था। ये एक ऐसा केस था जिसकी जड़े गुजरात से लेकर दिल्ली के कृष्णा नगर और पहाड़गंज थाने तक फैली हुई थी? और वारदात इतनी तेजी से घट रही थी की हमे कुछ करने का मौका ही नही मिल रहा था। एक के बाद हो रहे क़त्ल और खुद पर हुए जानलेवा हमले ने इस बन्दे को खुद हिलाकर रख दिया था। इन सबके पीछे सिर्फ शालिनी को होने को मैं मान नही सकता था?

मेरी एक बात और समझ मे नही आ रही थी कि इतने बड़े एम्पायर का मालिक पहाड़ गंज के एक सस्ते से होटल में क्यो आया? ये लड़की का चक्कर इंसान को कहीं भी ले जा सकता है? या यूं कह लीजिए कि जिस इंसान की जहां मौत लिखी होती है उसे उसकी मौत ही किसी न किसी बहाने से वहां ले ही जाती है? फिर वो चाहे राजा हो या रंक हो? लेकिन मैं ये सब सोच क्यो रहा था? मैं तो खुद ही कितनी बार इन लड़कियो के चक्कर मे ही मौत के मुंह में जाकर वापस लौटा हूँ! मैं अपनी सोच पर खुद ही मंद मंद मुस्कराया।

"गुरु किस सोच में डूबे हो? यहां तो खुद ही फसने की नौबत आ गई? काफी देर तक जब मैं कुछ नही बोला तो मेरे खबरी के सब्र का बांध टूट पड़ा।

"हा सर कुछ तो बोलो? अब आगे क्या करना है? रागिनी भी थोड़ी गम्भीर दिखाई दी।

"और सुनाइये जासूस साहब अब कैसी तबियत है आपकी? दामोदर दास ने अजीब अंदाज में पूछा।

"जी हाल फिलहाल तो कल से ठीक महसूस कर रहा हूँ? आप बताये आप कैसे है? मैंने दामोदर जी को उन्ही की स्टाइल में जवाब दिया।

"आपकी दुआ से सब ठीक ठाक है! मगर एक खबर आपको बतानी थी की जिस होटल में आपको गोली मारी गई थी वहां कल रात को उन्ही भल्ला परिवार के एक सदस्य की गोली मार कर हत्या कर दी गई है, जिनके केस को आप हैंडल जार रहे हो" दामोदर जी ने सुबह की बासी खबर मेरे सामने फ़िर से परोसी।

"इस खबर के बारे में सुबह ही पता चल गया था सर? बहुत बुरा हो रहा है भल्ला फैमिली के साथ? मैंने अफसोस जाहिर किया।

"हा बुरा तो हो रहा है ? जिस परिवार के 3 सदस्य सिर्फ 15 दिनों में मार डाले जाये? उस परिवार का क्या हाल होगा? ये तो वही बता सकते है जिनके ऊपर गुजर रही है?" दामोदर दास जी एक संवेदनशील इंसान थे।हालांकि लाश मर्डर इन सबसे इनका रोज का वास्ता पड़ता था।

" एक बात पूछनी थी आपसे? कल रात को आपकी ये असिस्टेंट कहां थी? अचानक से दामोदर दास ने अपना पुलसिया रूप धारण कर लिया।

"वही थी जहाँ आप सोच रहे हो?" मैंने तो पहले ही सोच रखा था कि पुलिस से कुछ भी नही छुपाना है।

"वाह! आपसे मुझे इसी ईमानदार जवाब की आशा थी" दामोदर दास ने मेरी और देखकर बोला।

"इसको मैंने ही वहां भेजा था? क्योंकि मुझे आशा थी कि जिस महिला ने मुझे गोली मारी थी? उसका सुराग वही से कुछ न कुछ मिल सकता है? मैने रागिनी को वहां भेजने का औचित्य समझाया।

"फिर मिला कुछ आपको वहां? दामोदर दास ने फिर से पूछा।

"हा बहुत कुछ मिला? मैं सुबह से आपका इंतजार कर रहा था, आपको सब कुछ बताने के लिए" मैंने साफगोई से बोला।

"ठीक है पहले अपनी सुनाओ? फिर हम अपनी सुनाएंगे? दामोदर दास के मन मे शायद कुछ और ही चल रहा था।

"सुनने की जगह आप देख ही लो' ये बोलकर मैंने कल रात वाली वीडियो दामोदर दास के सामने चला दी। दामोदर दास के चेहरे के रंग पल प्रतिपल उस वीडियो को देखने के बाद बदल रहे थे?

"गुलशन भल्ला के साथ ये औरत कौन है? दामोदार दास ने मुझ से पूछा।

" ये वही औरत है जिसने मुझे गोली मारी थी? ये कल रात को उस होटल की चौथी मंजिल पर गुलशन के साथ अय्यासी कर रही थी? उसी समय रागिनी ने ये वीडियो बनाया था" मेरी बात सुनकर दामोदार दास ने प्रशंसा भरी नजरों से रागिनी की और देखा।

"जिस पिस्टल से मुझे गोली मारी गई थी? हो सकता है उसी पिस्टल से गुलशन को भी मारा गया हो? मैने अपने मन मे उठ रहे विचारो से दामोदार दास को अवगत करा दिया।

" मुझे ये वीडियो सेंड करो ? मैं अपना खबरी नेटवर्क एक्टिव करता हूँ ? इस औरत को तो हम अब पाताल से भी खोज लेगें ?" दामोदार दास के स्वर में उसकी संकल्प शक्ति झलक रही थी।

"गुलशन भल्ला के केस को भी आप ही हैंडल कर रहे हो ?" मैने जिज्ञासा से पूछा।

"नही ए सी पी साहब के नेतृत्व में एक टीम इन्वेस्टीगेशन कर रही है ! जिसमे मैं भी हूँ ? आपकी ये वीडियो शायद मेरी तरक्की के रास्ते खोल दे ? दामोदार दास अब मेरा शुक्रगुजार हो रहा था।

"इसके लिए शुक्रिया रागिनी को बोलो ? उसी ने किया है जो भी किया है ! मैं तो यहां पलँग पर पड़ा था" मैंने मुस्करा कर दामोदार दास को बोला।

"शुक्रिया मैडम आपका भी ? सच पूछो तो होटल लीला में जब मुझे उस लड़की का हुलिया वहां के स्टाफ ने मुझे बताया था तो आपका चेहरा ही मेरे दिमाग मे आया था ! और मैं यहां आपको पूछताछ के लिए थाने ले जाने के लिए आया था ? लेकिन आप तो इस केस को हल करने में बहुत बडी मददगार साबित होने वाली हो" दामोदार दास ने कृतज्ञ स्वर में रागिनी से बोला।

" अरे नही सर ये सब तो अनुज सर से ही सीखा है तभी ये सब कर पाई ? और हमारा तो धंधा ही कानून की मदद करना है ? रागिनी को भी पॉलिसियों से बात करने का सलीका आ गया था।

रागिनी का आभार प्रकट करने के बाद दामोदार दास वहां से रुखसत हो गया। उसके जाने के बाद हम सभी ने राहत की सांस ली। अब हमारे सामने चुनौती थी कि हम पुलिस से भी पहले उस शालिनी नाम

की कातिल हसीना को ढूंढ निकाले। लेकिन गुलशन भल्ला के शालिनी के साथ पाए जाने के बाद अनेक सवाल अब मन को कचोट रहे थे? ये केस अब अजीब मोड़ पर खड़ा था?

****

वक़्त ऐसा था कि मेरा अब हॉस्पिटल में पड़े रहना एकदम औचित्यहीन था। मुझे इस वक़्त उस कातिल हसीना के पीछे होना चाहिए था।

एक के बाद एक भल्ला फैमिली के लोगो की मौत के घाट उतारा जा रहा था? और मैं उसे रोक नही आया रहा था। दो मौके थे मेरे पास जब मैं शालिनी नाम की उस जालिम को अपने कब्जे में कर सकता था लेकिन दोनों ही मौको पर हम गच्चा खा गए। पहला मौका था जब भल्ला साहब का दिया हुआ नंबर डायल करने के बाद उस नामुराद की फोन बेल बजी थी। मुझे उसी वक़्त उसको अपने काबू में करना चाहिए था। वह मेरी सबसे बडी चूक थी? जिसका अब मुझे मलाल हो रहा था।

दूसरा मौका कल रात को रागिनी ने खो दिया था। जब शालिनी को उसने गुलशन के साथ रंगे हाथों पकड़ लिया था तो उसी समय पुलिस बुला कर उसे मुझ पर कातिलाना हमले के जुर्म में उसे दबोच लेना था। फिर हो सकता था? की गुलशन भल्ला भी बच जाता? लेकीन अब पछताय क्या होत हैं? जब चिड़िया चुग गई खेत!

लेकीन रागिनी अपनी अनुभवहीनता की वजह से वो कदम नही उठा पाई।उस समय मेरे से संपर्क साधने का भी कोई जरिया नही था? जो मुझ से बात करके आगे क्या करना है उसके बारें में जान पाती? खैर

पाना और फिर भल्ला के आफिस से उसके बिज़नेस एंगल को खंगालना ?

मुझे अब इस केस में एक नए सिरे से इन्वेस्टीगेशन की जरूरत थी ? मुझे पता नही क्यो ऐसा लग रहा था कि कोई है जो इस केस में हमे अपने हिसाब से नचा रहा है। हम वही भाग रहे है जहां वो हमें भगा रहा है ?

सबसे पहले हम रोहतक गए ! रोहतक तक के बारे में भल्ला ने हमे जो कहानी सुनाई थी वो भले ही अक्षरशः सच हो ? लेकिन ये भी सच है कि उसके बाद वो पुष्पा नाम की उनकी साली कहाँ *लापता* हो गयी ? उसका कुछ पता ही नही चलता।

रोहतक से आने के बाद सुदर्शन भल्ला की धर्मपत्नी की हत्या और फिर गुलशन भल्ला की हत्या में ही हत्यारे ने हमे उलझा कर रख दिया था। क्या ये उस हत्यारे की स्ट्रेटेजी थी कि हम इन हर तीसरे दिन होने वाली हत्याओ में ही उलझ कर रह जाये और जांच की दिशा में आगे ही न बढ़ पाये ? जो भी था वो शातिर हत्यारा अब तक तो अपनी इस स्ट्रेटेजी में कामयाब रहा था ?
****

" मुझ से अब यहां रुका नही जा रहा है रागिनी " मैंने रागिनी को बोला ! जो अभी तक मुझे ख्यालो में डूबा हुआ देखकर चुपचाप बैठी थी।

" क्यो क्या हुआ सर ? रागिनी ने सवालिया निगाहों से मुझे देखा।

" वहां कातिल एक के बाद एक कत्ल किये जा रहा है और मैं यहां हॉस्पिटल में पड़ा हूँ ? ये मेरी बर्दास्त

से बाहर है रागिनी ? इसलिए मुझे यहाँ से जाना होगा ? मैंने अपने मन की व्यथा रागिनी को बताई।

" मैं आपकी बेचैनी को समझ सकती हूँ सर ? लेकिन ये भी तो सोचिये की अभी गोली का जख्म ताज़ा है ? आपको इस वक़्त आराम की सख्त जरूरत है ? रागिनी को मेरे जख्म की फिक्र थी।

" तुम अपनी जगह सही हो रागिनी ? लेकिन ये भी तो देखो जिस रफ्तार से वो कत्ल करती चली जा रही है ? उस हिसाब से तो वो जब तक मुझे हॉस्पिटल से छुट्टी मिलेगी पूरे भल्ला परिवार को खत्म कर चुकी होगी ?" मुझे अपने घाव से ज्यादा भल्ला फैमिली की चिंता थी।

" सर आप मुझे बताइये ना क्या करना है ? मै हर काम को करने को तैयार हूँ ? जो मैं कर सकती हूँ ?" रागिनी नही चाहती थी कि मैं इस हालत में हॉस्पिटल छोड़कर जाऊं।

" अभी सभी काम तुम भी नही कर सकती हो रागिनी ? ये केस जैसा हम समझ रहे है ! वैसा नही है ? मुझे इस केस पर एक नए एंगल से काम करना होगा ? नही तो हम सिर्फ़ लाशें ही गिनते रह जाएंगे ? मेरी इस बात को सुनकर रागिनी निरुत्तर हो चुकी थी।

ठीक है सर अभी 7 बजे डॉक्टर साहब राउंड पर आएंगे ? उनसे छुट्टी देने की रिक्वेस्ट करते है ? रागिनी मेरी बातों से अब सहमत नजर आ रही थी।

अब मैं और रागिनी डॉक्टर के आने का वेट करने लगे। तभी मेरा खबरी बाहर से चाय और कुछ साथ मे खाने के लिए ले आया। हम सभी चाय पीते पीते इस केस में आगे क्या करना है ? उसकी प्लानिंग करने

लगे।
****

शाम को जब डॉक्टर साहब राउंड पर आये तो हमारी रिक्वेस्ट का उनपर कोई असर नही पड़ा। दरअसल शाम के टाइम जूनियर डॉक्टर राउंड लेते है और सुबह सिनियर डॉक्टर जो असल मे केस को हैंडल करते है वो राउंड लेते है? मुझे छुट्टी देने का मामला उन्होंने सुबह के डॉक्टर पर छोड़ दिया।

सुबह एक लंबी बहस के बाद जब हमसे उन्होंने ये लिखवा लिया कि हम अपने रिस्क पर अधूरा इलाज़ छोड़कर हॉस्पिटल से जा रहे है! तब कहीं जाकर डॉक्टर साहब ने हमें हॉस्पिटल से डिस्चार्ज किया।
****

मैं रागिनी और अपने मुखबिर के साथ हॉस्पिटल से बाहर आ गया। हॉस्पिटल से निकलते ही जो सबसे पहला काम किया वो था मोबाइल खरीदने का। रागिनी के मोबाइल में दो सिम थी! उसकी एक सिम मैने अपने उस नए मोबाइल में डाली। उस नंबर से मैंने सबसे पहले अपने खोये हुए मोबाइल का नंबर डायल किया, लेकिन वो मेरी अपेक्षा के अनुरुप बन्द मिला।

मैंने अपने खबरी को कुछ जरूरी हिदायते देकर वहां से रवाना किया। अब मेरा अगला काम था अपनी गाड़ी को लेना जो कि अभी तक पहाड़गंज की उसी गली में होनी चाहिए थी? जहाँ वो लीला होटल था? मैं और रागिनी पहाड़गंज के लिए रवाना हुए। मैंने रागिनी को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास खड़ा रहने के लिए बोला। अभी मेरा इरादा रागिनी को होटल लीला के आसपास ले जाकर किसी नई मुसीबत में फसने का नही था।

मैं होटेल लीला वाली गली में गया। मेरी गाड़ी अभी भी दो दिन से वही खड़ी थी। मै अपनी गाड़ी में सवार में हुआ और वापसी में रागिनी को पिक करते हुए गाड़ी को कृष्णा नगर के लिए दौड़ा दिया जहाँ मेरा इरादा अब अखिल भल्ला से मिलनें का था।
****

मैं भल्ला निवास पहुंचा!

पिछले 15 दिनों से ये निवास शोक में डूबा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो इस घर मे पंचक लगें हुए हो? भल्ला निवास में रिस्तेदारो का तांता लगा हुआ था। मैंने अंदर पहुंच कर अखिल भल्ला के बारे में पूछा। पता चला कि अखिल अभी अपने रूम में ही था। मैं और रागिनी दोनों अखिल के कमरे की और चल दिये। तभी कमरे से बाहर निकल कर अखिल हमारी और आता है ही नजर आया! अखिल की नजर हम पर पड़ चुकी थी! इसलिए उसके कदम हमारे पास आकर ही रुके।

"कहाँ गायब हो यार? और ये क्या हाल बना रखा है? मेरे हाथं में बंधी हुई पट्टी को देखकर अखिल ने पूछा।

"मैं भी उसी कातिल का शिकार हो गया था जिसने आपके परिवार को अपने निशाने पर लिया हुआ है? मैने अखिल को बोला।

"व्हाट? तुम कातिल तक पहुंच चुके हो?" अखिल को मेरी बात पर विश्वास ही नही हुआ?

"हाँ! चलिये कहीं एकांत में बैठकर बात करते है" मैने अखिल की और देखकर बोला।

"ह्म्म्म ! चलो " ये बोलकर अखिल उस कोठी की पहली मंजिल की और चल दिया। हम दोनो भी अखिल के पीछे पीछे चल दिये।

पहली मंजिल पर एक अत्यंत ही सुसज्जित कमरे में हमने कदम रखा। अखिल ने हमे सोफे पर बैठने का इशारा किया।

"आप किसी शालिनी नाम की महिला को जानते हो ? मैंने सोफे पर बैठते हुए अखिल से पूछा।

" नही ? ऐसे तो याद नही आएगा ? अगर उसकी कोई फ़ोटो इत्यादि हो तो मैं बता सकता हूँ कि उसे जानता हूँ या नही ? अखिल ने मेरी और देखकर जवाब दिया।

मैंने रागिनी का मोबाइल लिया और अखिल के पास पहुंचकर उस वीडियो को ओपन कर दिया। वीडियो पर नजर पड़ते ही अखिल के होश गुम हो चुके थे।

"ये वीडियो तुम्हे कहाँ से मिला ? अखिल की आंखे अभी भी हैरत से फटी हुई थी।

"ये उसी रात का वीडियो है ! जिस रात को आपके भाई गुलशन भल्ला की हत्या हुई थी ! और इसी औरत ने आपके भाई की जान ली है और इसी औरत ने मुझ पर भी जानलेवा हमला किया था " मैंने एक बार मे ही अखिल के सभी सवालों का जवाब दे दिया।

"लेकिन इसका नाम शालिनी नही है ? ये तो अंजलि है और इसका चैप्टर तो आज से 4 साल पहले ही खत्म हो चुका था ? ये अब कहाँ से आ गई ? अखिल की हैरानगी अभी भी खत्म नही हो रही थी।

"इस शालिनी उर्फ अंजलि के बारे में विस्तार से बताओ ?" मैंने अखिल को बोला।

"ये चार साल पहले हमारे आफिस में काम करने आई थी और मानव की पर्सनल सेक्रेटरी के तौर पर इसने आफिस जॉइन किया था! लेकिन इसने मानव को अपने जाल में फंसाया और उसके साथ अपने कुछ सेक्स वीडियो और फ़ोटो निकाल लिए ?

"ओह्ह ये तो हनीट्रैप का मामला लगता है?" मैं बीच मे ही बोल पड़ा।

"हा ये हनी ट्रैप ही था? उसके बाद इस लड़की की डिमांड शुरू हो गयी? शुरू शुरू में तो मानव इसकी डिमांड को पूरी करता रहा ? लेकिन एक दिन उसने 5 करोड़ रुपये की मांग कर दी? नही देने पर उसने पुलिस कंप्लेंट, कोर्ट कचहरी और ना जाने किस किस चीज़ की धमकी दी? उस समय मानव ने डरते डरते गुलशन भैया को सारी बात बताई थी" ये बोलकर अखिल सांस लेने के लिए थोड़ी देर रुका।

"फिर गुलशन ने क्या किया इस मामले में? मैं जल्द से जल्द पूरी कहानी सुन लेना चाहता था। रागिनी भी पूरी तन्मयता के साथ अखिल को सुन रही थी।

"गुलशन भैया ने इस बारे में पापाजी से बात की थी! फिर पता नही क्या हुआ था? ये अंजलि नाम की लड़की अचानक से गायब हो गयी थी? आज चार सालों के बाद इसे आपके मोबाइल में देख रहा हूँ? अखिल ने एक नए रहस्य से पर्दा उठाया।

"कैसे गायब किया था अंजलि को? उसकी सुपारी दी थी किसी को या किसी और प्रेशर से उसे गायब किया गया था? मैंने अखिल के चेहरे पर अब अपनी नज़रे जमा दी थी।

"इस बारे में मुझे कुछ नही पता? इस बारे में आपको गुलशन भैया बता सकते थे? जो कि अब इस दुनिया मे नही रहे! या फिर अब खुद पापाजी ही बता सकते है? अखिल ने गेंद अब सुदर्शन भल्ला के पाले में डाल दी थी।

"हो सकता है उसके साथ कोई जोर जबरदस्ती की गई हो और उससे घबरा कर वो गायब हो गयी हो और आज इतने सालों के बाद वो बदला लेने के लिए आई हो? मैंने अपना अंदाजा लगाया।

"गुलशन भैया के साथ उसका इस हालत में दिखना और उसके बाद उसी होटल में उनका कत्ल हो जाना तो आपकी बात को ही सही साबित कर रहा है? अखिल ने मेरी बात का समर्थन किया।

"लेकिन एक ब्लैकमेलर इतनी आसानी से हार मानकर गायब कैसे हो सकती है? जो इतनी बड़ी प्लानिंग बना कर आई हो वो इतनी आसानी से हार कैसे मान सकती है? मुझे अभी भी कहानी में झोल नजर आ रहा था।

"मैंने जितना मुझे पता है वो सब सच सच आपको बता दिया है? बाकी आप पापाजी से पूछ लो? अखिल ने मुझे बोला।

"चलो मान भी लेता हूँ कि आपकी बात सच है लेकिन वो आपकी मम्मी को क्यो मारेगी? अगर आपके पापा ने अपने रसूख के दम पर उसे उस समय गायब होने पर मजबूर कर दिया था तो अब सुदर्शन भल्ला पर कोई हमला क्यो नही हुआ?" मैने अखिल से पूछा।

"ये पापा जी पर हमला नही तो फिर किस पर है? जिनकी वाइफ और 2 जवान लड़के सिर्फ 15 दिन

में उनसे छीन लिए गए हों? उससे बड़ा हमला और क्या हो सकता है?" अखिल ने दार्शनिको वाले अंदाज में बोला।

एक ब्लैकमैलर लड़की जो कि खुद एक अपराधी थी? उसके साथ चार साल पहले ऐसा क्या हुआ था कि वो अपनी दुश्मनी में एक पूरे परिवार को ही खत्म करने पर आमादा हो गयी। ये अभी भी मेरे लिए एक रहस्य था।

मुझे अब सुदर्शन भल्ला से मिलना था। अब वही एक शख्स थे जो इस केस के आगे के रास्ते खोल सकते थे।

"आप अपने पापा जी को यहां भेज दो! लगे हाथो उनसे भी बात कर ही लेते है? क्योंकि अब हमारे लिए एक एक पल कीमती है? पता नही कातिल कब किसको अपना शिकार बना ले? मैने अखिल को अपने पापा को ऊपर भेजने के लिए बोला। मेरी बात सुनकर अखिल चुपचाप रुम से बाहर निकल गया।
****

कोई 15-20 मिनट के इंतजार के बाद सुदर्शन भल्ला ने कमरे में कदम रखा। इन मौतों ने भल्ला साहब को हिलाकर रख दिया था।ये उनका चेहरा बता रहा था।

"ये आपको क्या हुआ अनुज? पट्टी कैसे बंधी है हाथ पर? भल्ला साहब ने मेरा हाल पूछा।

"बस उसी कातिल से मुलाकत हो गयी थी जो आपकी फैमिली के पीछे पड़ा हुआ है? बस जरा सा चूक गई वो वरना मैं भी आज ऊपर ही पहुंच चुका होता? मैंने भल्ला साहब को बोला।

जगह ठीक थे, लेकिन किसी भी हालात में आप किसी इंसान को मरवाने का सौदा नही कर सकते है।

"कुछ भी हो भल्ला साहब? लेकिन आप किसी की जान लेने का सौदा तो नही कर सकते? प्रत्यक्ष में मैं भल्ला साहब से बोला।

"कभी कभी हालात ऐसे बन जाते है अनुज? जब चीज़े इंसान के हाथ मे नही रहती? भल्ला साहब की आवाज से उनकी शर्मिंदगी झलक रही थी।

"मैंने आपको उस दिन भी बोला था भल्ला साहब की आपके किसी पुराने कमी का हिसाब ही आप इस समय चुका रहे हो? देख लो आप! मेरी बात सोलह आने सच निकल रही है" मैंने थोड़ी हिकारत से भल्ला साहब की और देखा।

"जब आपने इसका सफाया करने का सौदा कर लिया था तो फिर ये जिंदा कैसे बच गई? मैंने फिर से भल्ला साहब से पूछा।

"इस सबके बारे में आहूजा आपको बता पायेगा? मेरे सारे काम वही देखता है? भल्ला साहब ने अब किसी आहूजा के बारे में बताया।

"ये आहूजा कौन है?" मैंने सवालिया निगाहों से भल्ला साहब को देखा।

"समझ लो कि जो काम हम लीगली नही कर सकते उन सभी कामो को साम दाम दंड भेद से करवाने का सामर्थ्य रखता है? और हर बिज़नेस एम्पायर को ऐसे लोगो को अपनी सेवा में रखना पड़ता है? सुदर्शन भल्ला ने एक नया राज उजागर किया।

"कहाँ मिलेगा ये आहूजा नाम का सम्पूरण कला प्राणी ? मैंने अजीब से अन्दाज में भल्ला साहब से पूछा।

" मैं बुलवा देता हूँ उसे ? जब भी आप मिलना चाहो ? सुदर्शन भल्ला ने मुझे कहा।

"भल्ला साहब मैं हॉस्पिटल से जबरदस्ती छुट्टी लेकर आया हूँ ? सिर्फ इसलिए कि आपके परिवार में अब और कोई मौत न हो ? इसलिए किसी भी काम को मैं कल पर टालना नही चाहता ? मैंने भल्ला साहब की और देखकर थोड़ा कठोर स्वर में बोला।

"ठीक है मैं अभी उसे बुला देता हूँ ? आधा घन्टे में पहुंच जाएगा वो ?" भल्ला साहब ने मेरी आवाज की तपिश को शायद महसूस कर लिया था।

"आप मुझे एक बात और बताइये की जब गुलशन भल्ला को शालिनी की सारी हकीकत पता थी तो वो उस रात पहाड़गंज के उस होटल लीला जैसी घटिया जगह पर क्या कर रहा था ? मेरा सुदर्शन भल्ला के लिए ये आखिरी सवाल था। क्योकि बाकी सवाल मैं अब आहूजा के लिए बचा कर रखना चाहता था।

"मुझे तो अभी पता चला कि गुलशन उस रात उस कमीनी के साथ था ?" मुझे भल्ला साहब के इस बयान पर हैरत हुई क्योकी पहाड़गंज की पुलिस ने तहकीकात के दौरान उस वीडियो को जरूर इन लोगो के साथ शेयर किया होगा ? क्योंकि अगले दिन ही लोकल पुलिस के उस एस आई को वीडियो शेयर कर थी।

"आपसे इस वीडियो को पुलिस ने शेयर नही किया ? मैंने आश्चर्य से भल्ला साहब की और देखा।

"बन्दे को अनुज कहते है? धंधे से प्राइवेट जासूस हूँ? मैंने अपना हाथ आहूजा की तरफ बढ़ाया। आहूजा ने असमंजस से मेरा हाथ थाम तो लिया था? लेकिन उसकी शक्ल बता रही थी कि उसे ये बिक्कुल नही पता था कि मैं उससे चाहता क्या हूँ?

"जी बोलिये? आप मुझ से क्यो मिलना चाहते थे? आहूजा ने सवालिया निगाहों से मुझे देखा।

"आप भल्ला साहब के राइट हैंड है? मैने शुरूआत ही इस अजीब से सवाल से की।

"ये आपसे किसने कहा? ये बोलते हुए उसके काइयां चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान बिखर गई।

"खुद भल्ला साहब ने कहा है? मैंने उसकी मुस्कान जवाब मुस्कान से देते हुए कहा।

"जब भल्ला साहब खुद कह रहे है तो मैं कौन होता हूँ जी मना करने वाला" उसके चेहरे पर वही कमीनी मुस्कान अभी भी तैर रही थी।

"किसी अंजलि को जानते है आप?" मैं मुद्दे की बात पर आते हुए बोला।

"लड़कियो के नाम याद नही रहते मुझे जासूस साहब तो अब कैसे बताऊ आपको की अंजलि को जानता हूँ कि नही? आहूजा मेरे सवालो का जवाब सीरियसली देने के मूड में नही लग रहा था।

"इस लड़की को आज से चार साल पहले किसी से मरवाने के लिए भल्ला साहब ने तुम्हे सुपारी दी थी? कुछ याद आया?" मेरी इस बात का असर उस काइयां इंसान पर इतना तो हुआ कि उसकी वो कमीनी मुस्कान उसके चेहरे से ऐसे गायब हो गयी जैसे गधे के सर से सींग।

"किसकी हत्या? कैसी सुपारी? ये क्या बोल रहे आप?" आहूजा मेरी बात को अपनी हकलाई हुई आवाज में नकारने की नाकाम कोशिस कर रहा था।

"इसे देखो? नाम याद नही रहता तो शक्ल तो याद रहती होगी? वैसे भी लड़की इतनी ज्यादा खूबसूरत है कि जिसने भी इसे देखा होगा? वो इसे पूरी उम्र भूल नही सकता" ये बोलकर मैंने आहूजा के आगे वही वीडियो ओपन कर दिया। आहूजा आँखे फाड़े उस वीडियो को देख रहा था! वुस कमरे में ए सी चलने के बावजूद आहूजा के चेहरे पर पसीना आ चुका था।

"ये वीडियो तुम्हे कहा से मिला? गुलशन पुत्तर का ऐसा वीडियो बनाने की तेरी हिम्मत कैसे हुई" उस वीडियो को देखकर आहूजा पता नही क्यो बौखला उठा था।

"अभी मेरी हिम्मत तो तुमने देखी कहाँ है? ये बता इस लड़की की सुपारी लेने के बाद भी ये लड़की बच कैसे गई और इसे तुमने चार साल तक कहाँ छुपा कर रखा? मैंने अपनी आंखें अब उसके काइयां चेहरे पर गड़ा दी थी।

"ये सब बकवास है? मैने कोई किसी की सुपारी नही ली और न ही किसी को गायब किया? ये मनगढ़त कहानी कहाँ से बना लाये जासूस साहब? आहूजा जल्दी से पकड़ में आने वाला बन्दा नजर नही आ रहा था ।

"भल्ला साहब के सामने भी तू इसी सुर में गीत गायेगा या उनके सामने तेरे सुर बदल जाएंगे?" मुझे ये बन्दा पहली नजर में ही पसंद नही आया था।

"भल्ला साहब के सामने? क्या मतलब है तुम्हारा? आहूजा के चेहरे के रंग पल पल बदलते जा रहे थे।

"भल्ला साहब ने ही मुझे बताया है कि इस लड़की को ठिकाने लगाने का काम उन्होंने तुझे ही सोपा था" मैने अब भल्ला साहब के नाम का तीर ही सीधा आहूजा पर चला दिया था।

"भल्ला साहब की उम्र हो चुकी है महाराज? उन्हें अब कुछ याद नही रहता? ऊपर से तीन तीन मौतों के गम ने उनका दिमाग हिला दिया है? आप ऐसे इंसान की बातो पर विश्वास करोगे? आहूजा अब दूसरी ही गुगली फेक रहा था।

"आहूजा साहब एक बात समझ लो अच्छी तरह से मुझ से झूठ बोलकर ज्यादा दिन बच नही पाओगे? इसलिए कहता हूँ अभी भी वक़्त है? खुद ही सच सच बता दो की ये क्या घालमेल तुमने किया हुआ है? वरना सच तो एक ना एक दिन बाहर आ ही जायेगा" मैंने आहूजा को चेतावनी नुमा लहजे में कहा।

"मैं कुछ जानता होऊँगा तभी तो कुछ बताऊंगा सरजी" आहूजा अपने खीसे निपोरते हुए बोला।

"ठीक हैं जाओ अभी? लेकिन ये मत समझना कि ये हमारी आखिरी मुलाकात है? अभी तो मुलाकातों का सिलसिला शुरू हुआ हैं?" मैंने उस काइयां इंसान को एक बार फिर से चेतावनी दी। लेकिन वो इंसान मेरी बातों को लगभग अनसुना सा करके वहां से जा चुका था।

****

आहूजा के व्यवहार से हमारा शक उस पर और ज्यादा पुख्ता हो गया था। अब हम दोनो ने वहां से निकलने का फैसला लिया? और हमारे कदम बाहर की और उठ गए।तभी मुझे वही पायल की झंकार दोबारा से सुनाई दी। मेरा ध्यान बरबस ही उस आवाज की

और चला गया। मेरे कदम खुद ब खुद उस आवाज की दिशा में उठ गए। आवाज हर पल मुझ से दूर होती जा रही थी। लेकिन एक बात निश्चिन्त थी कि आवाज ऊपर के फ्लोर से आ रही थी। मेरे कदम भी अब उस कोठी के दूसरे फ्लोर की और उठ चुके थे।

मैं आहिस्ता आहिस्ता दूसरे फ्लोर पर पहुंचा। ऊपर पहुंच कर मैने अपनी नजर घुमा कर वहां के माहौल का जायजा लिया। मैं दबे कदमो से फिर से आगे बढ़ा। रागिनी भी चुपचाप मेरा अनुसरण कर रही थी। मेरी दायीं तरफ के चौथे कमरे में मुझे कुछ हलचल सुनाई दी। मैंने उस कमरे के दरवाजे से अपने कान लगा दिए। अंदर दो लोगों की आवाज साफ साफ सुनाई दे रही थी।
****

रात के कोई 2 बजे एक साया सुदर्शन भल्ला के रूम की तरफ बढ़ रहा था। गर्मियो की उस रात में हालांकि लोग देर तक जागते रहते है लेकिन 2 बजे के प्रहर में लगभग सभी लोग गहन निंद्रा के आगोश में होते है।

मैं और रागिनी भी इस वक़्त उस साये के पीछे पीछे चल रहे थे। उस साये ने दरवाजे के पास पहुंच कर इधर उधर अपनी नजरो को दौड़ाया? लेकिन तब तक हम अपने आपको उसकी नजरो से छुपा चुके थे।

उस साये ने दरवाजे को हलका सा धक्का दिया और फिर एक के बाद एक कई गोलियां चलने की आवाज उस कमरे में गूंज उठी? हम दोनो ने तेजी से उस कमरे की और दौड़ लगाई। तब तक उस कमरे की लाइट जल चुकी थी।

कमरे के बीचों बीच जो साया हाथ में पिस्टल लेकर खड़ा था वो हक्का बक्का सा अब अपने चारों और

अपनी नजरो को घुमा कर देख रहा था। पूरी भल्ला फैमिली अब कमरे में लगे पर्दो से बाहर आ चुकी थी। सभी उस साये को आंखे फाड़े देख रहे थे। तभी अखिल आगे बढ़ा और एक जोर का तमांचा उस साये के गाल पर जड़ दिया।

"कमीनी हमारे एहसानों का तूने हमे ये बदला दिया?" अखिल के सामने इस वक़्त उसी की बीवी एक हत्यारे के रुप में खड़ी थी।

मैंने और रागिनी ने हल्की सी मुस्कराहट के साथ कमरे में प्रवेश किया।

"खेल खत्म पैसा हजम? कंचन देवी?" मैंने कंचन की और देख कर बोला।

"खेल तो अभी शुरू हुआ है अनुज बाबू ? इतनी जल्दी ये खेल खत्म होने वाला नही है? ये बोलकर उस दिल की भोली और मासूम सी सूरत ने पिस्टल इस बन्दे की तरफ तान दी।

"अब खेल को खत्म ही कर दो ? क्योकि अब इस खाली पिस्टल से मुझे डरा कर कुछ नही मिलने वाला आपको? वैसे भी आप भी इस वक़्त मेरे निशाने पर है? ये बोलकर मैंने रागिनी की और उसे देखने का इशारा किया।

बस इसी एक पल में वो मासूम सूरत मात खा गई? जैसे ही एक पल के लिए उसने अपनी नजर रागिनी की और की आपके इस चोट खाये हुए बन्दे ने अपनी चाल चल दी। मेरी चलाई हुई लात ने कंचन के हाथ से पिस्टल छिटक कर रागिनी के पास जाकर गिरा था! जिसे उठाने में रागिनी ने कमाल की फुर्ती दिखाई थी।

खेल खत्म हो चुका था ? पासा पलट चुका था?

"हां तो कंचन देवी? अब आप खुद अपनी ये दास्ताने जुर्म सुनाएगी या आपके कर्मो का अफसाना मैं सुनाऊं? मैने कंचन के मुखड़े की और निहारते हुए कहा।

कंचन के मुंह से अब कोई बोल नही फूट रहा था।

"वैसे अभी थोड़ी देर रुक जाते हैं? क्योंकि अभी इनके कमी के दो साथियो को पुलिस अभी लेकर आती ही होगी? मैंने वहां उपस्थित भल्ला परिवार के बाकी बचे सदस्यों की और देखकर बोला।

सभी लोग कोतुहलवस मेरी और ही देख रहे थे। कंचन अब अपराधबोध से ग्रस्त सभी के बीच मे सर झुकाए खड़ी थी। इस वक़्त उस कमरे में सुदर्शन भल्ला, अखिल भल्ला और सुदर्शन भल्ला की दोनो बेटियां भी मौजूद थी। लेकिन वैशाली उस भीड़ में मुझे कहीं नजर नही आ रही थी? हर कोई हैरत से सिर्फ कंचन कि और देख रहा था। किसी को भी विश्वास नही हो रहा था कि ये मासूम सी दिखने वाली लड़की इतने बड़े खेल में भी शामिल हो सकती है?

"हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? जो इतने लोगो की जान तुमने ले ली और इस हँसते खेलते परिवार को तिनके की तरह तुमने बिखेर दिया?" आखिरकार सुदर्शन भल्ला के सब्र का बांध टूट ही गया।

"भल्ला साहब अभी इससे कुछ मत पूछो? इसके बाकि साथियो को भी यहां पहुँचने दो फिर आपको कुछ भी पूछने की जरूरत नही रहेगी? अभी मैंने अपनी बात को समाप्त किया ही था कि पुलिस सायरन की आवाज से वो पूरा मोहल्ला गूंज उठा। कुछ ही समय मे पुलिस की जिप्सी उस कोठी के पोर्टिको में आकर रुकी। थोड़ी ही देर में इंस्पेक्टर

गौतम ने उस कमरे में कदम रखा जिस कमरे में इस समय हम सभी मौजूद थे। गौतम साहब के पीछे पीछे भल्ला साहब का खास आदमी आहूजा और उस कातिल हसीना शालीनी उर्फ अंजलि ने भी कदम रखा।

सभी की नजर अब उन दोनो की और उठ चुकी थी। आहूजा और अंजलि दोनो नजर झुकाए हुए कंचन के साथ जाकर खड़े हो चुके थे।

"अनुज साहब ! ये दोनों तो हिंदुस्तान छोड़ कर उड़ने की तैयारी कर चुके थे? इन दोनों को एयरपोर्ट के रास्ते पर चेकपोस्ट लगा कर पकड़ा है? गौतम साहब ने मेरी और देखकर बोला।

"इनके भागने की प्लानिंग तो मैंने आपको पहले ही बता दी थी सर? क्योकि भागने के अलावा अब इनके पास और कोई रास्ता बचा नही था? मैंने गौतम साहब की और मुस्करा कर देखते हुए बोला।

"लेकिन इन दोनों को पकड़ कर यहां लाने के लिए किस लिए बोला आपने? गौतम ने कोतुहल भरे स्वर में मुझ से पूछा।

"क्योकि यहां पर आए बिना इस कहानी की सीता और गीता की जोड़ी पूरी नही होती सर? इसलिए आपको यहां बुलाया। मैंने ये बोलकर एक अर्थपूरण नजर अंजलि और कंचन पर डाली।

"मैं कुछ समझा नही अनुज? सीता और गीता कौन है? गौतम साहब के स्वर में उनकी उलझन साफ झलक रही थी।

" अनुज यार अब जल्दी से पूरे मामले से पर्दा हटाओ? इस सबके बारे में सोच सोच कर ही हमारे

दिमाग की नशे फ़टे जा रही है? इस बार अखिल भी बैचैन आवाज में बोला।

" ये एक ऐसी कहानी है जो लालच हवस और बदले की सभी परिकाष्ठा को लांघ चुकी थी? एक लालची इंसान ने अपने लालच में ना जाने कितने ही लोगो को मरवा डाला और ना जाने कितने ही लोगों की जान लेने का असफल प्रयास किया गया? जिसमें इस बन्दे की जान से भी खेला गया? मैंने ये बोलकर अपनी वाणी को एक हल्का सा विराम दिया।सभी की बैचैन निगाहे बस मुझे ही ताक रही थी।

" भल्ला साहब जिस आदमी को आप अपना दाहिना हाथ बोलते थे वही सबसे बड़ा आस्तीन का सांप था? ये बोलकर मैने आहूजा की और हिकारत भरी नजरो से देखा।

"ये सारा किया धरा इसी आहूजा के बच्चे का है? और कहते है ना कि घर का भेदी लंका ढाये? आपकी इस लंका में तो एक नही तीन तीन विभीषण थे? मैने फिर से बुत बने खड़े उन तीनों पर एक उड़ती सी नजर डाली।

"आज से पांच साल पहले आहूजा ने एक प्लान बनाया की भल्ला साहब की इस अकूत दौलत को कैसे लूटा जाए? अपनी इस महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए इसने सबसे पहले अंजलि को अपना मोहरा बनाकर आपकी कंपनी में फिट किया? और अपनी प्लानिंग के तहत ही अंजलि को मानव की पर्सनल सेक्रेटरी बनवा दिया? अंजलि का काम था कि किसी भी तरह मानव को अपने हुश्न के जाल में फंसा कर उससे मनचाहे पैसे ऐठना?" ये बोलकर मैंने एक बार फिर अंजलि की और देखा? वो अब खा जाने वाली नजरो से मुझे घूर रही थी। आगे की

कहानी सुनाने के लिए मैने रागिनी की और इशारा किया ! अब रागिनी ने बोलना शुरू किया।

" जब मानव ! अंजलि के जाल में फस गया तब अंजलि और आहूजा ने आगे का गेम खेलना शुरू किया ? मानव और अंजलि जब भी सेक्स रिलेशन बनाते थे तो उनकी फिल्म बनाने का सारा इंतजाम ये आहूजा किया करता था " रागिनी ने आहूजा की और देखकर बोला।

" जब काफी सारी सेक्स फिल्मे इन लोगों के पास इक्कठी हो गयी तब इन् लोगो ने अपनी अगली गेम चली ? वो थी ब्लैकमेलिंग ? दरअसल आहूजा एक सजायाफ्ता ब्लैकमेलर है ? वो ऐसे केसों में कई बार तिहाड़ की यात्रा कर चुका है ? जब हमने इंस्पेक्टर गौतम से आहूजा की हिस्ट्री खंगालने की रिक्वेस्ट की तब गौतम साहब ने हमारी खुले दिल से बहुत मदद की और आहूजा की पूरी क्रिमिनल हिस्ट्री हमारे सामने निकाल कर रख दी " ये बोलकर रागिनी ने मेरी और देखा।

"उस क्रिमिनल हिस्ट्री से हमे पता चला कि ये अब तक 10-12 बड़े बड़े घरों के लड़कों को इस तरह अपनी ब्लैकमैलिंग का शिकार बना चुका था " रागिनि के चुप होने के बाद अब मैंने बोलना प्रारम्भ किया।

"मतलब हनीट्रैप ? इस बार अखिल के मुंह से ये शब्द निकला।

"हाँ ! बिल्कुल सही पकड़ा तुमने ? इस जाल को हनीट्रैप ही बोलते है !" मैंने अखिल की बात का समर्थन किया।

"लेकिन अभी तक ये किसी कत्ल में शामिल नही हुए थे ? ये अपना शिकार करके आगे बढ़ जाते थे ?

अपने पापा को बताई ? और भल्ला साहब ने इस मामले को हल करने का एक नायाब तरीका ही खोज निकाला और 5 करोड की बजाय सिर्फ 5 लाख की सुपारी देकर ही अंजली नाम का कांटा हमेशा हमेशा के लिए अपने रास्ते से निकाल दिया ? लेकिन अब तक अपने हर छोटे बड़े गलत धंधों में आहूजा पर निर्भर रहने वाले भल्ला साहब ने अंजली वाले मामलें की भनक तक आहूजा को नही लगने दी ? और किसी और बन्दे से अंजली को वहां भिजवा दिया ? जहां से इंसान सिर्फ दूसरा जन्म लेकर ही इस धरती पर वापस आ सकता है ?" रागिनी ने ये बोलकर अपनी बात का प्रभाव जानने के लिए सभी के चेहरों पर अपनी नजर दौड़ाई। सभी खामोशी से रागिनी की और ही देख रहे थे।

"भल्ला साहब ! आपने सच मे सुपारी देकर अंजली का मर्डर करवाया था ? गौतम साहब जो अब तक चुपचाप हमारी बाते सुन रहे थे ! भल्ला साहब की और तीखी नजरो से देखते हुए पूछा।

अब भल्ला साहब भी अपराधियो की तरह अपनी गर्दन झुका चुके थे।

इंस्पेक्टर गौतम ने एक कांस्टेबल को इशारा किया। उस कांस्टेबल ने भल्ला साहब के पास जाकर उनका हाथ अपने हाथ मे जकड़ लिया।

" जब ये बात आहूजा को पता चली तो उस समय ये सिर्फ खून का घूट पीकर रह गया ? लेकिन इसके शैतानी दिमाग मे एक खतरनाक प्लान आ चुका था। मैंने आगे की कमान अब अपने हाथ में सम्हाली।

" एक मिनट अनुज अगर अंजली का मर्डर हो चुका था तो ये मोहतरमा कौन है जो हमारे सामने खड़ी है ? और जिसे हम पकड़ कर लाये है ? गौतम साहब

ने बीच मे ही मुझे रोककर अंजली के बारे में जानना चाहा।

"ठीक है गौतम साहब? आगे की दास्तान बाद में सुनाऊँगा? पहले अंजलि के रहस्य से ही पर्दा हटाता हूँ? ये बोलकर मैं शालिनी उर्फ अंजली के सामने पहुंचा।

"हां तो! रुख से जरा नक़ाब हटा दो मेरे हुज़ूर? मैंने अदा के साथ उस कातिल हसीना से रिक्वेस्ट की जिसने सच मे मुझे मार ही डालना चाहा था।

"गलती हो गयी? जो उस दिन तुझे जिंदा छोड़ दिया? कम से कम आज ये दिन तो न देखना पड़ता? वो नागिन मुझ पर फुफकारी।

"अब पछताय क्या होत है? जब चिड़िया चुग गई खेत" मैंने एक प्रख्यात मुहावरा उस कातिल हसीना को सुनाया।

"मोहतरमा अब उतार भी दो इस नक़ाब को? मैंने फिर से उस जालिम से इसरार किया।

चंद सेकंड तक उस नागिन ने मेरी आँखों मे झांका और फिर अपना हाथ अपनी कनपटी के पास ले जाकर वहां हाथ से खुरचने लगी और कुछ ही देर में उस चेहरे से ये नकली चेहरा उतरता चला गया? और जो चेहरा उस चेहरे के नीचें निकला उसे देखकर पूरी भल्ला फैमिली के मुंह से बस एक ही आवाज आई!

"वैशाली"

सभी लोग आँखे फाड़े वैशाली उर्फ अंजली उर्फ शालिनी की और देखे जा रहे थे? सुदर्शन भल्ला वैशाली की सूरत देखते ही बेहोश होकर नीचें गिर चुके थे। भल्ला साहब की दोनों लडकिया पानी का

जग लेकर भल्ला साहब की और दौड़ी और जल्दी से उनके चेहरे पर पानी के छीटे मार कर उन्हें होश में लाया। हर कोई बुत बना सिर्फ वैशाली को देख रहा था।

"अंजली वैशाली और कंचन तीनो सगी बहन है? मैंने उन सभी को उस शॉकिंग अवस्था से बाहर लाने के लिए फिर से बोलना शुरू किया।

"आहूजा ने इन तीनो बहनों को अपने ब्लैजमेलिंग के धंधे में शामिल कर रखा था? लेकिन जब भल्ला ने अंजली को मरवा डाला? तब इन दोनों बहनों ने कसम खाई की वो पूरे भल्ला परिवार का ही मटिया मेट कर देंगे?" मैं एक पल के लिए फिर से रुका।

"आहूजा की मार्फ़त वैशाली गुलशन की लाइफ में आई और कंचन ने अखिल को अपने प्रेमजाल मे फंसाया ? और दोनो ने इन दोनों से शादी भी कर ली? मजे की बात तो ये है कि भल्ला परिवार को आज तक नही पता था कि ये दोनों सगी बहन है? मैं एक बार फिर रुककर सभी की और देखने लगा।

"अनुज तुम रुको मत? अपनी बात पूरी करो? इंस्पेक्टर गौतम के चेहरे से भी उनकी बैचैनी साफ झलक रही थी।

"ये सब जब हम नहीं जानते थे तो आपको ये सब कैसे पता लगा?" ये एक वाजिब सवाल था जोकि अखिल ने पूछा था।

"ये तुमने सबसे सही सवाल किया अखिल? दरअसल आज सुबह जब मैं तुमसे मिलने यहां आया था तो जब तुम्हारे पापा से बात कर रहा था तो मैंने दरवाजे के नजदीक किसी को छुपकर हमारी बाते सुनने का एहसास हुआ? जब मैं उस इंसान को

देखने के लिए दरवाजे की और बढ़ा तो वो इंसान लगभग दौड़ते हुए वहां से गायब हो गया ? वुस समय दौड़ते हुए जो पायल की झंकार मैंने सुनी थी वो वही आवाज थी जो मैंने शालिनी उर्फ अंजलि की पायल की आवाज होटल लीला में सुनी थी ? जब ये मुझे वहां रिझा रही थी ?" मैंने इस बार मुस्करा कर दिलकश नजरों से वैशाली को निहारा। एक बात तो मैं दावे के साथ कह सकता था कि तीनों बहनों को बनाने वाले ने जरूर दूसरे शनिवार और रविवार की छुट्टी लेकर बनाया होगा ?

"उसके बाद जब मैंने आहूजा को पूछताछ के लिए यहां बुलाया था तो इसी पायल की झंकार को मैंने फिर से तब सुना जब आहूजा मेरे सवालो का जवाब देना बीच मे ही छोड़कर गायब हो गया ? मैंने इस बार उस आवाज का पीछा किया तो वो आवाज मुझे इसी कोठी की दूसरी मंजिल तक लेकर गई। उस दूसरी मंजिल पर एक कमरे से मुझे दो लोगो की बाते करने की आवाज सुनाई दी ? तब जाकर ये सारा खेल ओर माजरा मेरी समझ मे आया" मैं एक बार फिर बोलते बोलते रुक गया था।

"उसके बाद आज दिनभर हमने आहूजा की जन्मकुंडली खंगाली ? इसका पुलिस रिकॉर्ड चेक करवाया ? जिसमे गौतम साहब ने हमारी बहुत मदद की" अब रागिनी बोलना शुरू कर चुकी थी।

"लेकिन मानव की हत्या कैसे हुई ? वो भी यहां से हजार किलोमीटर दूर जाकर ? इस बार अखिल की बहन ने सवाल किया।

"इस बारे में वैशाली ही बताएंगी ? मैंने वैशाली की और अर्थपूर्ण नजरो से देखकर बोला।

"जिस राजधानी एक्सप्रेस से मानव मुम्बई जा रहा था वो बड़ोदरा के स्टेशन पर रात को दस बजे के आसपास पहुंचती है? हमने सबसे पहले मानव को ही ठिकाने लगाना था? इसलिए हमने अपने ट्रेवल एजेंट से मानव की पूरी जानकारी ली और उसी ट्रैन में बड़ोदरा से अपनी रिजर्वेशन करवा ली! बड़ोदरा से रात को दस बजकर दस मिनट पर हमने वो ट्रैन पकड़ी ? और मानव के पास पहुंच गए उसके अन्तिम सफर को यादगार बनाने के लिए?

"मानव हमे वहां देखकर बुरी तरह चौंक गया लेकिन वो मुझे देखकर ज्यादा कुछ रियेक्ट कर पाता? उससे पहले ही आहूजा ने उसका गला घोंट कर उसकी आत्मा को परमात्मा से मिला दिवा" वैशाली अब बेधड़क बता रही थी कि उन लोगो ने मानव को कैसे मारा।

"कमला आंटी ने तुम लोगो का क्या बिगाड़ा था? जो तुम लोगो ने उन्हें भी नही बख्शा? अखिल को मैने इस पूरे वाक्या के दौरान पहली बार थोड़े गुस्से में देखा।

"वो बुढ़िया अनुज को कुछ बताने वाली थी? मैने उसे उस दिन कोठी से बाहर जाते हुए देखा और अनुज और रागिनी को उसके पीछे पीछे जाते देखा तो मुझे कुछ शक हुआ कि दाल में कुछ काला है? मैं भी पीछे पीछे उस पार्क में पहुंच गया और उस बुढ़िया को टपका दिया!" आहूजा को अपने किये पर कोई शर्म नही थी।

"मम्मी को क्यो मारा?" लगता था जैसे सारे सवालो के जवाब सिर्फ अखिल ही जानना चाहता था।

"मम्मी को प्रसाद में जहर देकर मैंने मारा था? वो कमबख्त बुढ़िया हर समय बच्चे बच्चे की रट लगाए

Where is my Train

[illegible] वैशाली तंग आ चुके थे उसके रोज रोज के तानो से ? वैसे भी हमने पूरे परिवार को खत्म करना ही था ? तो सोचा कि बहती गंगा में इस बुढ़िया को भी बहा दो ?" इस बार वो भोली सुरत बोली।

"अब गुलशन ? मतलब अपने पतिदेव को भी क्यो मार डाला ?" हालांकि अपने पूरे परिवार के खात्मे का उद्देश्य को वो पहले ही वो बता चुकी थी ? लेकिन मन मे फिर भी एक जिज्ञासा थी कि अंजलि के रुप में गुलशन उसके साथ होटल लीला में रंगरलिया क्यो मना रहा था।

"गुलशन को मैने फ़ोन करके उस होटल में बुलवाया था उसे उसके परिवार के लोगो के हत्यारे के बारे में बताने के लिए ? वो उस दिन पहली बार मुझे उस दिन अंजलि के रुप में मिला था ? मैने उसे भी सेक्स के लिए उकसाया जिस तरह तुमको उकसा रही थी ? तुम खुद पर काबू रखने पर सफल रहे लेकिन मेरे पतिदेव मेरी जवानी की आग को सह नही पाए और आखिर में उसी आग में भस्म हो गए ?" वैशाली की बातों से लग रहा था कि उसे अपने किये पर कोई पछतावा नही था।

"मेरे सवाल का जवाब अब भी नही मिला कि उसे मारा क्यो ? मैंने वैशाली से दोबारा जरा ज्यादा जोर देकर पूछा।

"वो कमीना सेक्स करने के समय मुझे पहचान गया था ! मेरी बॉडी पर एक जगह ऐसा निशान है जिसके बारे में सिर्फ किसी का पति या उसका वो बॉयफ्रेंड ही जान सकता है ? जिसके साथ वो सेक्स कर चुकी हो ? इसलिए उसे उसी दिन मारना जरुरी हो गया था। वैसे भी मरना तो इन सभी को था ? अगर तुम

बीच मे न आते तो? वैशाली ने अंगारे बरसाती आंखों से मुझे घूरते हुए कहा।

"चलो मेरी वजह से ये चार लोग तो बचे? देख लो मारने वाले से बचाने वाले की ज्यादा इज्जत होती है? तुमने अपने बदले की आग में पूरे परिवार से बदला लेना चाहा? बदले की आग में तुम इतनी अंधी हो गयी कि जो भी तुम्हारे रास्ते मे आया उसे हटाने का तुमने प्रयास किया? लेकिन एक बात समझ नही आई? तुम्हारी बहन को मरवाया तो सुदर्शन भल्ला ने था फिर उसको क्यो अब तक जिंदा छोड़ा? मैं अपनी इस जिज्ञासा को भी शांत कर लेना चाहता था।

"सुदर्शन भल्ला को भी मरना ही था? लेकिन उसकी मौत सबसे आखिर में होनी थी? पहले इसके पूरे परिवार की लाश इसे अपने बूढ़े कंधो पर ढोनी थी? तभी मेरी दीदी की आत्मा को शांति मिलती और हम दोनों बहनों के दिल को करार?" वैशाली की आंखों पर सचमुच बदले की आग का पर्दा पड़ चुका था।

"भल्ला साहब हमने आपकी साली पुष्पा के बारे में भी जानकारी निकाली थी? जो कुछ आपने बताया था वो रोहतक के आसपड़ोस के लोग भी उसकी तस्दीक कर रहे है? लेकिन रोहतक के बाद वो कहाँ गायब हो गयी उसका कुछ पता नही चलता? कही ऐसा तो नही की अंजलि की तरह उसकी भी सुपारी किसी को देकर उसे भी ठिकाने से लगा दिया हो?" मेरे मन मे ये सवाल कब से तहलका मचाये हुए था।

"नही अनुज उसके बारे में मैं भी कुछ नही जानता? नही तो अब जो सजा एक खून करने की मिलनी है वही सजा दो खून करने की भी है? मुझे कबूल करने में क्या परेशानी होती? अगर मैने पुष्पा का खून करवाया होता तो कम से कम आज तो कबूल

कर लेता?" सुदर्शन भल्ला की बातों से अब सच्चाई झलक रही थी।

"ये पुष्पा मौसी की क्या कहानी है?" फिर से अखिल ने ही पूछा।

"छोड़ो तुम्हारी पुष्पा मौसी का इस केस से कुछ लेना देना नही है? मैने उस बात पर अब मिट्टी डालने की कोशिश की।

"गौतम साहब आपके चारो मुजरिम आपके सामने हाजिर है? ले जाइये और खातिरदारी कीजिये इनकी? और सुबह प्रेस कॉन्फ्रेंस में हीरो बन जाइए? मैने मुस्करा कर गौतम साहब को बोला

"नही अनुज? हीरो तो वही बनेगा जो इसका हक़दार है?" ये बोलकर इंस्पेक्टर गौतम ने गर्मजोशी से मुझ से हाथ मिलाया।

उसके बाद उन चारों लोगों को गौतम साहब अपने साथ लेकर रवाना हो गए।
उस विशाल कोठी में सिर्फ तीन लोग बचे थे? अखिल और उसकी दोनो बहने। इतने धनवान परिवार में महज 15 दिनों में क्या क्या रंग देखे गए। तीन लोग ऊपरवाले के दरबार मे सजदा कर रहे है ? और बाकी के तीन लोग नीचे के सरकारी दरबार मे अपनी हाजिरी लगवायेंगे?

सच ही कहा है किसी अनुज नाम के महापुरुष ने :-
वक़्त से ही दिन और रात
वक़्त की हर शह गुलाम

समाप्त